जेष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 146, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 22 जून 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मंझधार में फंसी उद्धव सरकार

गुजरात से 30 विधायक एयरलिफ्ट कर दिल्ली लाए जा सकते

जानिए कौन हैं एकनाथ शिंदे, जिनके साथ गए सरकार में शामिल विधायक

- शिवसेना के दिग्गज नेता, उद्धव के करीबी माने जाते हैं
- ठाणे के कोपरी-पचपखडी सीट से विधायक हैं।
- उद्धव मुख्यमंत्री बने तो शिंदे को नगर विकास मंत्री बनाया
- ठाणे महानगर पालिका में दो बार नगरसेवक रहे।
- भाजपा-शिवसेना गठबंधन सरकार में भी मंत्री रहे

मुंबई/सूरतः महाराष्ट्र की उद्धव सरकार खतरे में है। उनके दिग्गज मंत्री एकनाथ शिंदे अपने यानी, शिवसेना के 15, एक एनसीपी और 14 निर्दलीय विधायकों के साथ गुजरात के सूरत जा बसे। इस टोली में शिंदे के अलावा 3 मंत्री और हैं। यानी कुल 30 विधायक। सूत्रों का दावा है कि एकनाथ शिंदे ने राकांपा और कांग्रेस से गठबंधन तोड़ भाजपा के साथ गठबंधन की शर्त रखी है। यह भी कहा जा रहा है कि एकनाथ शिंदे खुद मुख्यमंत्री पद पर बैठना चाहते हैं। शिंदे ने 3 विधायकों संजय राठोड, संजय बांगर और दादा भुसे कुल को मातोश्री भी भेजा है। इस मुलाकात में क्या हुआ, ये अभी सामने नहीं आया है। इधर, सूरत में मौजूद विधायकों को लेकर दो संभावनाएं जताई जा रही हैं। पहली- इन्हें एयरलिफ्ट कर-के दिल्ली लाया जा सकता है और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह के पास ले जाया जा सकता है। दूसरी- इन्हें अहमदाबाद के किसी रिसॉर्ट में ले जाया जा सकता है।

शिंदे का पहला बयान- पक्के शिवसैनिक हैं, धोखा नहीं देंगेः बगावती कदम के बाद शिवसेना ने शिंदे को विधायक दल के नेता पद से हटा दिया है। पार्टी के इस एक्शन के बाद शिंदे ने बयान दिया, जो उनके बागी तेवरों के एकदम उलट था। उन्होंने ट्वीट किया- हम बालासाहेब के सच्चे शिवसैनिक हैं। बालेसाहेब ने हमें हिंदुत्व सिखाया है। हम सत्ता के लिए कभी भी धोखा नहीं देंगे। इधर, शिवसेना ने भाजपा के खिलाफ नारेबाजी की है। साथ ही कहा कि हमारे 56 विधायक हैं। 18 मुंबई में हुई बैठक में शामिल हुए। अन्य रास्ते में हैं और जल्द मुंबई पहुंच रहे हैं। 11 विधायकों का फोन नॉट रिचेबल है।

यह शिवसेना का अंदरूनी मामलाः शरद पवार

इन सभी हलचलों के बीच शरद पवार मीडिया के सामने आए। करीब 11 मिनट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उनसे सवाल हुआ कि शिंदे क्या खुद मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं तो बोले कि उन्होंने ऐसी इच्छा हमसे जाहिर नहीं की। पवार ने कहा कि महाराष्ट्र में सरकार गिराने की साजिश

ये ऑपरेशन लोटसः संजय राउत

शिवसेना सांसद संजय राउत ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि सूरत में 30 विधायक नहीं हैं, शिंदे के साथ कुल 16 या 17 विधायक ही हैं। देर रात एक विधायक होटल से निकला चाहते थे। कुछ और विधायक भी लौटना चाहते हैं लेकिन गुजरात पुलिस ने विधायकों को बंधक बना रखा है। भाजपा के लोग ऑपरेशन लोटस चला रहे हैं। पर ये सफल नहीं होगा।

सूरत के ली मेरिडियन होटल में रुके हैं सभी विधायकः सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सभी विधायक सूरत के ली मेरिडियन होटल में रुके हैं।

महाराष्ट्र में सरकार बचाने के क्या रास्ते हैं

सत्ता पक्ष के साथ इस वक्त 169 विधायकों का समर्थन है। इनमें से 24 विधायक बागी बताए जा रहे हैं। इस स्थिति में सत्ता पक्ष के पास 145 विधायकों का समर्थन बना रहेगा। विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा भी 145 ही है। वहीं, अगर बागी शिवसेना विधायकों का आंकड़ा 24 ही रहता है तो शिवसेना से अलग होने पर इन विधायकों की सदस्यता जा सकती है। दरअसल, शिवसेना के कुल 56 विधायक हैं। किसी धड़े को पार्टी से अलग होने के लिए दो तिहाई यानी कम से कम 38 विधायक होने जरूरी है। बागी विधायक कर्नाटक और मध्य प्रदेश वाला फॉर्मूला भी अपना सकते हैं। यानी, ये विधायक इस्तीफा देकर अलग हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में विधानसभा में विधायकों की कुल संख्या 263 हो जाएगी। इस स्थिति में बहुमत का आंकड़ा 132 हो जाएगा। इस स्थिति में उद्धव ठाकरे सरकार के लिए सरकार बचाना आसान हो जाएगा।

सरकार बदलने का क्या गणित है?

एकनाथ शिंदे 26 विधायकों के बागी होने का दावा कर रहे हैं। इसमें कुछ निर्दलीय विधायक भी हैं। इसके साथ ही भाजपा निर्दलीय और अन्य छोटे दलों के कुल 13 विधायकों के समर्थन का दावा कर रही है। इस स्थिति में भाजपा के 106 विधायकों को मिलाकर भाजपा के पक्ष में संख्याबल 145 हो जाएगा। जो बहुमत का आंकड़ा है। इस मामले में पेंच ये है कि शिवसेना के 26 विधायक अगर बागी होते हैं तो उनके लिए अपनी सदस्यता बचाना मुश्किल होगा। भाजपा दावा कर रही है कि शिवसेना के 35 विधायक उनके संपर्क में हैं। ऐसे में अगर बागी गुट तीन और विधायकों को अपने पाले में कर लेता बागी गुट को मान्यता मिल जाएगी। ऐसे में भाजपा के सरकार बनाने का रास्ता खुल जाएगा।

क्या कांग्रेस में भी बगावत हो सकती है?

कांग्रेस विधायकों के नाराज होने की खबरें अक्सर आती रही हैं। मार्च महीने में कांग्रेस के 25 विधायकों के उद्धव सरकार से नाराजगी की खबरें आईं थीं। इन विधायकों ने सोनिया गांधी से मिलने का समय भी मांगा था। इन विधायकों ने सरकार के मंत्रियों पर उनके निर्वाचन क्षेत्रों में काम को लागू करने के अनुरोधों की अनदेखी करने का आरोप लगाया था।

योग राष्ट्रों को भी संघर्ष के भाव से मुक्ति दिलाकर शांति देता है: मोदी

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को मैसूर में योग दिवस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि योग में विश्व शांति लाने की क्षमता है। योग व्यक्ति को ही नहीं समुदायों और राष्ट्रों को भी संघर्ष के भाव से मुक्ति दिलाकर शांति देता है। प्रधानमंत्री मोदी ने मंगलवार को मैसूर प्लेस प्रांगण में योग दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कि योग के व्यक्तिगत और सामूहिक लाभ बताये और योग से जुड़ी जीवनशैली के महत्व को रेखांकित किया। योग दिवस के

माध्यम से प्रधानमंत्री ने भारत की वैश्विक भूमिका भी समझाई। उन्होंने कहा कि योग की अनादि यात्रा भविष्य को दिशा देते हुए आगे चलती रहेगी। हम सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया के भाव के साथ एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण विश्व को योग के माध्यम से भी गति देंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने इस दौरान हिंदी और अंग्रेजी में दिए गए ।

यूएन में ओआईसी के बहाने पाक ने भारत को घेरा, मिला करारा जवाब

न्यू यॉर्कः इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के बहाने पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र में भारत को घेरा तो भारत की ओर से उसे करारा जवाब दिया गया। जानकारी के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान के स्थायी प्रतिनिधि मुनीर अकरम ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में ओआईसी के बयान का जिक्र करते हुए भारत में पैगंबर मोहम्मद साहब के खिलाफ कथित टिप्पणी का मसला उठाया। उन्होंने भारत की सत्ताधारी पार्टी के कुछ नेताओं की ओर से विवादित टिप्पणी पर चिंता जताई।

राष्ट्रपति चुनावः यशवंत सिन्हा विपक्षी दलों के उम्मीदवार

नई दिल्लीः विपक्ष के लिए इस बार यशवंत सिन्हा राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार होंगे। कांग्रेस के नेता जयराम रमेश ने विपक्षी नेताओं की बैठक के बाद इसका एलान किया। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टियों ने चर्चा के बाद यशवंत सिन्हा को उम्मीदवार बनाने का फैसला किया है। बैठक में शामिल राकांपा नेता शरद पवार ने कहा कि विपक्ष 27 जून सुबह 11.30 बजे नामांकन दायर करेगा। रमेश ने विपक्ष के इस चुनाव की वजहें बताते हुए कहा कि यशवंत सिन्हा एक विशेष रूप

से योग्य प्रत्याशी होंगे। वे भारत के धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक ताने-बाने को मानने वाले व्यक्ति हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि हमें दुख है कि मोदी सरकार अब तक राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार पर एकराय बनाने के लिए गंभीर नहीं हो सकी है। गौरतलब है कि तृणमूल कांग्रेस के नेता यशवंत सिन्हा ने मंगलवार को पार्टी छोड़ने का एलान करते हुए कहा कि अब वह वृहद विपक्षी एकता के व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए काम करेंगे।

भर्ती प्रक्रिया में नहीं किया गया कोई बदलावः सेना

नई दिल्लीः सैन्य मामलों के विभाग के अतिरिक्त सचिव लेफ्टिनेंट जनरल अनिल पुरी ने कहा कि अग्निपथ योजना तीन चीजों सशस्त्र बलों की युवा प्रोफाइल, तकनीकी जानकार और सेना में शामिल होने वाले अनुकूल लोग, तीसरा व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करती है। लेफ्टिनेंट जनरल पुरी ने आगे बताया कि भर्ती प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं किया गया है। रेजिमेंटल प्रक्रिया अपरिवर्तित रहेगी.. हम एक वचनबद्धता लेंगे और उम्मीदवारों को प्रतिज्ञा प्रस्तुत करनी होगी कि वे किसी भी आगजनी/तोड़फोड़ में शामिल नहीं थे। पुरी ने कहा कि यह हमारे देश की सुरक्षा का मामला है। किसी ने अफवाह फैला दी कि सेना के पुराने जवानों को अग्निवीर योजना में भेजा जाएगा। यह एक फर्जी सूचना है। लेफ्टिनेंट जनरल पुरी ने आगे कहा कि दुनिया के किसी अन्य देश में भारत की तरह जनसांख्यिकीय लाभांश नहीं है। हमारे 50 फीसदी युवा 25 वर्ष से कम आयु वर्ग के हैं। सेना को इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। हमें इस जनसांख्यिकीय लाभांश को प्रतिबिंबित करना होगा। एयर मार्शल एस.के.झा ने कहा कि पहले वर्ष में 2 प्रतिशत से शुरू करके अग्निवीरों को अधिक संख्या में धीरे-धीरे शामिल किया जा रहा है। पांचवें वर्ष में यह संख्या लगभग 6 हजार हो जाएगी और 10 वर्ष में लगभग 9 हजार से 10 हजार हो जाएगी। भारतीय वायुसेना में प्रत्येक नामांकन अब केवल 'अग्निवीर वायु' के माध्यम से होगा।

एयर मार्शल झा ने कहा कि भारतीय वायुसेना की युद्ध क्षमता और तैयारी पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है।

काबुल गुरुद्वारा आतंकी हमले पर यूएन में फूटा भारत का गुस्सा

न्यू यॉर्कः अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में गुरुद्वारे पर हुए आतंकी हमले को लेकर संयुक्त राष्ट्र में भारत ने आक्रोश जाहिर किया है। अमेरिका ने भी इस आतंकी हमले की निंदा की है। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के कार्त-ए-परवान गुरुद्वारे में बीती 18 जून को आतंकवादियों ने हमला कर दिया था। इसमें दो लोगों की मृत्यु हो गयी थी और कई घायल हो गए थे। इस हमले की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट ऑफ खोरासन ने ली थी। भारत ने इस हमले पर सख्त रुख अख्तियार किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने इस हमले पर कड़ी नाराजगी जाहिर की। हमले को कायरतापूर्ण और नृशंस करार देते हुए उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों को गैर-अब्राहम धर्मों के खिलाफ हो रही हिंसा की निंदा करनी चाहिए, जिसमें बौद्ध, हिंदू व सिख शामिल हैं। उन्होंने कड़े लहजे में कहा कि यदि आप वास्तव में नफरत का मुकाबला करना चाहते हैं तो धार्मिक भय पर दोहरे मानदंड नहीं हो सकते। इस बीच अमेरिका ने भी काबुल में गुरुद्वारे पर हुए हमले की निंदा की है।

अग्निपथ योजना भारत को धोखा देने वाला फैसलाः अखिलेश

कन्नौजः समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि अग्निपथ और अग्निवीर भारत को धोखा देने वाला फैसला है। इस फैसले से सरकार ने गरीब, किसानों के बेटों का सपना तोड़ दिया है। सपा इसका विरोध करती है। उन्होंने बीजेपी सरकार के पूर्व के रिफॉर्म संबंधी फैसलों पर भी सवाल उठाए। अस्थाई नौकरी देकर नौजवानों को उद्योगपतियों का चौकीदार बनाने की तैयारी हो रही है। उद्योगपतियों के इशारों पर भाजपा सरकार यह योजना लाई है। सपा के जिला महासचिव रहे रामप्रकाश शाक्य को श्रद्धांजलि देने

उनके आवास पर पहुंचे सपा मुखिया ने पत्रकारों से कहा कि अग्निपथ और अग्निवीर का विरोध न सिर्फ नौजवान कर रहे हैं, बल्कि पूरे देश में इसका विरोध हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह फौज को आउटसोर्स करना है। फौज में लोग देश सेवा के लिए आते हैं। गरीब किसान के बेटे फौज में भर्ती के लिए सड़कों व खेतों में दौड़ लगाते हैं। दिन रात मेहनत कर फौज में भर्ती का सपना साकार करने की कोशिश करते हैं, लेकिन सरकार ने यह सपना ही तोड़ दिया। नौजवानों के अंदर जज्बा है कि वह फौज की वर्दी पहने और भारत की सेवा कर सकें। सेना की नौकरी अस्थाई कर फौज के सम्मान को गिराने का कार्य किया जा रहा है। सेना की नौकरी जज्बे की नौकरी होती है। सरकार बजट बचाने के लिए ऐसे निर्णय कर रही है। उद्योगपतियों का साम्राज्य खड़ा किया जा रहा है और उद्योगपतियों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित लोग तैयार करने की योजना है, क्योंकि उद्योगपतियों की सुरक्षा कौन करेगा।

12 लाख लोगों की यात्रा रुकी, 1.5 लाख यात्री फंसे; 70 करोड़ रुपए रिफंड करने पड़े

अग्निपथ हिंसा में 1000 करोड़ की रेल संपत्ति तबाह

नई दिल्लीः पिछले चार दिन से अग्निपथ योजना पर देश के कई हिस्सों में भारी बवाल मचा है। इसमें ट्रेनों को सबसे ज्यादा निशाना बनाया गया। इससे रेलवे की संपत्ति और यात्रियों के रिफंड को मिलाकर कुल एक हजार करोड़ से ज्यादा के नुकसान की आशंका है। यही नहीं, 12 लाख लोगों को यात्रा रद्द करनी पड़ी। 922 मेल एक्सप्रेस ट्रेनें रद्द हुईं। 120 मेल ट्रेनें आंशिक रूप से रद्द हुईं। डेढ़ लाख यात्रियों को बीच रास्ते में ट्रेन छोड़नी पड़ी। 5 लाख से ज्यादा पीएनआर रद्द हुए। करीब 70 करोड़ रुपए का यात्रियों को रिफंड दिया गया। पूर्व मध्य रेल जोन को 241 करोड़ रुपए की संपत्ति का नुकसान हुआ। जिस सार्वजनिक संपत्ति को

प्रदर्शनकारियों द्वारा अंधाधुंध निशाना बनाया जा रहा है, उसमें करोड़ों करदाताओं की गाढ़ी कमाई लगी हुई है।

रेलवे को कैसे नुकसान हुआ?: चार दिनों में देश भर में 922 मेल एक्सप्रेस ट्रेनें रद्द हुई हैं। यदि एक पीएनआर पर 3 यात्री मानें तो कुल 5 लाख से अधिक पीएनआर रद्द हुए हैं, हर ट्रेन में औसतन 1200 से 1500 तक यात्री चलते हैं, जिससे करीब 12 लाख लोगों की यात्रा कैंसिल हुई।

रेल मंत्रालय ने उदाहरण देते हुए बताया कि यदि एक यात्री का किराया कम से कम 600 रुपए मानें तो कुल 70 करोड़ रुपए का रिफंड लौटाया जा रहा है।

इसमें अउ 3, सेकंड अउ और फर्स्ट अउ के किराए को शामिल करें तो रिफंड 100 करोड़ रुपए का होगा। 827 पैसेंजर ट्रेनें कैंसिल रहीं। 120 मेल एक्सप्रेस ट्रेनें आंशिक रूप से कैंसिल रहीं, जिससे करीब डेढ़ लाख यात्रियों को बीच में ही ट्रेन छोड़कर यात्रा रद्द करनी पड़ी।

क्रियायोग आश्रम में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने दीप प्रज्वलित कर वसुधैव कुटुंबकम का दिया संदेश

प्रयागराज । मंगलवार को क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने दीप प्रज्वलित कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यक्रम की शुरूआत की । तथा आश्रम में बाहर से आए विदेशी साधकों ने भी हिस्सा लिया । अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने कहा कि मानव के अंतःकरण में प्रवेश करने पर स्पष्ट होगा कि मनुष्य का हृदय 8

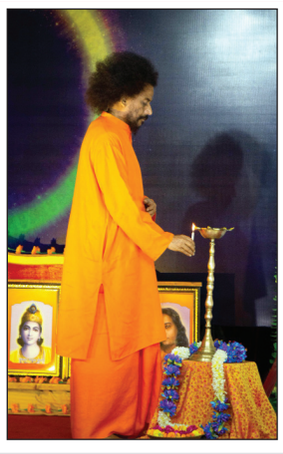

प्रकार की मायावी प्रवृत्तियों से दूषित रहता है जिसके कारण वह सत्य को स्वीकार नहीं कर पाता है तथा स्वामी जी ने क्रियायोग के 42 रिचार्जिंग प्रविधि को स्पष्ट करते हुए सभी को बताया तथा कहां की जीवन में अगर बीमारियों से बचना है तो प्रतिदिन क्रिया योग के 42 रिचार्जिंग विधि को प्रतिदिन अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और निरंतर सुखमय जीवन व्यतीत करें तथा सभी प्रकार की बीमारियों से मुक्ति पाएं।

योग दिवस : ओम की ध्वनि से गुंजायमान हुआ संगम तट

अखंड भारत संदेश

सूबे के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने किया योग, कहा- योग को बनाएं जीवन का हिस्सा

प्रयागराज। आठवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर पूरे जनपद में योगाभ्यास किया गया। संगम नोज के साथ ही जनपद के समस्त विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों और अन्य सार्वजनिक स्थलों के साथ-साथ लोगों ने घरों में भी योग किया। जनपद का प्रमुख आयोजन गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर किया गया। यहां पर हजारों की संख्या में लोगों ने योगाभ्यास में भाग लिया। योग कार्यक्रम के चीफ गेस्ट सूबे के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक भी मौजूद रहे। उन्होंने सभी के साथ योग किया और लोगों से योग को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया।

मंगलवार की रात के दूसरे पहर से ही संगम तट पर लोगों की चहलकदमी बढ़ने लगी थी और पौ फटने से पहले ही योग में शामिल होने के लिए लोगों का आना शुरू हो गया। इसके उपरांत संगम की रेती पर बिछाई गई दरी और योग मैट पर लोगों ने 45 मिनट तक योग का अभ्यास किया। योगाभ्यास के दौरान लोगों ने ओम का सामूहिक रूप से उच्चारण भी किया, जिससे संगम तट ओम की ध्वनि से गूंज उठा। इसके पूर्व ब्रजेश पाठक ने दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत की और संगम तट पर गंगा आरती भी की। इसके बाद रेसिंग बोट को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। योग में प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र बांटे गए। संगम नोज पर बनाए गए सेल्फी प्वाइंट पर तमाम लोग इस क्षण को कैमरे में कैद करते नजर आए। आज के इस आयोजन में आठ हजार से अधिक लोगों ने योग किया। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि ऋषियों, मुनियों की इस प्राचीन परंपरा को विश्व के धरातल पर गौरव दिलाने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। उन्होंने कहा कि योग न सिर्फ हमें स्वस्थ बनाता है, बल्कि हमारे जीवन को संतुलित भी करता है। उन्होंने लोगों से योग को दिनचर्या में शामिल करने का आह्वान किया। सेना में भर्ती की नई स्कीम अग्निपथ योजना के मुद्दे पर डिप्टी सीएम ने युवाओं से अपील भी की। कहा कि यह योजना युवाओं के हित के साथ-साथ राष्ट्र के हित में है। युवा किसी के बहकावे में न आएं। योग कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के प्रतिनिथयों के साथ आईजी, जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री, एसएसपी अजय कुमार समेत तमाम आलाधिकारी, भाजपा जिलाध्यक्ष, महानगर अध्यक्ष व कार्यकर्ता शामिल हुए।

डीसीपीसी के स्वयंसेवकों ने दिखाई सेवाभावना

प्रयागराज। योग दिवस के मौके पर संगम तट पर जुटी हजारों की भीड़ को संभालने और व्यवस्थाओं को बनाए रखने में डीसीपीसी की टीम ने भी सहयोग किया। अपर पुलिस अधीक्षक (यातायात) अरुण कुमार दीक्षित के निर्देश पर जिला अपराध निरोधक समिति के स्वयंसेवकों की टीम यातायात प्रकोष्ठ प्रभारी कुलदीप धर, विशाल श्रीवास्तव, प्रशांत सिंह, वार्ड अधिकारी नैनी, वार्ड अधिकारी झूंसी, वार्ड अधिकारी करेली, थाना कमेटी नैनी, झूंसी, करेली, दारागंज, धूमनगंज, अतरसुइया, मुट्ठीगंज के अलावा यूथ टीम महिला प्रकोष्ठ प्रभारी व यूथ टीम प्रभारी यमुनापार/नगर व अधीनस्थ सदस्यों आयोजन शुरू होने से लेकर खत्म होने तक संगम तट पर डटे रहे और अपनी सेवाभावना का परिचय देते हुए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। डीसीपीसी के सदस्यों ने पुलिस-प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। इसके लिए केंद्रीय कमेटी ने सभी सम्मानित सदस्यों, पदाधिकारियों का आभार जताया है। सचिव संतोष कुमार श्रीवास्तव ने भी सफल आयोजन के लिए जिला कमेटी का आभार व्यक्त किया है।

न्यूज झरोखा

बलापुर प्रा. विद्यालय में मनाया गया योग दिवस

करछना। आठवें अंतरराष्ट्रीय विश्व योग दिवस के अवसर पर पूरे देश में एक क दिन योगाभ्यास का कार्यक्रम रखा गया जिसके अंतर्गत के ग्रामसभा बलापुर मैं प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में योगाभ्यास का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ग्राम सभा की महिलाएं पुरुष और बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया योगाभ्यास कार्यक्रम में मंत्रोच्चारण के साथ योगाभ्यास के कई आसन को बताया गया तथा रोगों से लड़ने एवं लंबी उम्र के लिए योगाभ्यास करके शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है यह संदेश दिया गया इस अवसर पर ग्राम प्रधान निलम पथिक सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

मऊआइमा नगर पंचायत कार्यालय में मनाया गया योग दिवस

मऊआइमा। मंगलवार को योग दिवस पर मऊआइमा नगर पंचायत कार्यालय के प्रांगण में योग का आयोजन किया गया। जिसमें सुबह अधिशासी अधिकारी प्रदीप कुमार मिश्रा ,वरिष्ठ लिपिक हीरालाल ,मोहम्मद आजम, आशीष कपूर, भारत लाल यादव ,वलीद अन्सारी, रुखसार सहित नगर पंचायत के कर्मचारी और सभासद आदि मौजूद थे। योग ट्रेनर अजय यादव ने सभी को योग के गुण बताए।

बसही प्रा. विद्यालय पर मनाया गया विश्व योग दिवस

करछना। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्रधान प्रतिनिधि हिमांशु सिंह के नेतृत्व में विद्यालय के छात्रों अध्यापक शिक्षिकाएं वह गांव के गणमान्य लोगों ने बड़ी संख्या में विश्व योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास कर संदेश दिया और बताया कि योग से शरीर तन मन हमेशा स्वस्थ रहता है हर व्यक्ति को योग करना चाहिए इस अवसर पर प्रधान प्रतिनिधि बसही हिमांशु सिंह, प्रमिला शर्मा, राजेश यादव, विकास यादव, डॉ बबलू तिवारी, आलोक कुमार, अजय सिंह आदि रहे।

मंगल पार्क खीरी में मनाया गया योग दिवस

लेडियारी। यमुनापार क्षेत्र के मंगल पार्क में युवाओं ने योग के कई कार्यक्रम किए। जिसमें कपाल भारती, अनुलोम विलोम , सिर्षाशन, मंडूक आसन, ताड़ासन , वृक्षासन, समेत कई आसन किए। योग के क्रिया को बताते हुए अनुज कुमार ने बताया कि योग करते समय लोगों को मन एकाग्रचित्त करते हुए अपने शरीर में ही रखना चाहिए। योग करने से तन और मन दोनों एक साथ काम करता है। जिससे आप हर क्षेत्र में पारंगत बने रहेंगे। इसी क्रम में क्षेत्र के कई सरकारी स्कूलो ,कई ग्राम सचिवालयों ,धर्मराज गेस्ट हाउस ,देवभूमि इंटरनेशनल स्कूल खीरी समेत कई जगहों पर योग से संबंधित कई कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

जीवन का आधार है योग : डॉ रमेश

नैनी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गंगोत्री नगर नैनी में विश्व संवाद परिषद योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रकोष्ठ एवं इंडियन योगा एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में धूमधाम से मनाया गया साधकों को योग की दीक्षा देते हुए योगाचार्य डॉक्टर रमेश चंद्र ने कहा जीवन की सिद्धसमाधान और संपूर्णता के लिए सुझाए गए अनेक मार्गो में से एक प्रमुख मार्ग योग भी है। योग भारत की दिव्य दैवीय संपदा का अभिन्न अंग और संसार के योग क्षेम निमित्त भारतीय संस्कृत अमूर्त उपहार है। कोरोना काल में योग, आयुर्वेद और जीवन शैली की संपूर्ण विश्व में स्वीकृति बड़ी है। जब संपूर्ण विश्व का चिकित्सा विज्ञान कोरोना के समक्ष नतमस्तक था तब हमारी आहार पद्धति ,आध्यात्मिक मूल्य, योग, आयुर्वेद आदि ही मानवता की ढाल बने, इसलिए इस जीवन का आधार है योग। यदि हम योग और आयुर्वेद को अपने जीवन में नियमित अपना लें तो निश्चित ही हमारा जीवन उत्सव बन सकता है और हम पूरी तरह से अपने परिवार को समाज को बच्चों को स्वस्थ रख सकते हैं और इसी से हमारा समाज हमारा भारत स्वस्थ और समृद्धि बनेगा।

प्राथमिक विद्यालय पर विश्व योग दिवस मनाया

करछना। विश्व योग दिवस पर ग्राम पंचायत हिंदूपुर के फत्तेपुर गांव में प्राथमिक विद्यालय फत्तेपुर पंचायत सहायक शुभम विश्वकर्मा की उपस्थिति में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें विद्यालय के अध्यापक अध्यापिका और आंगनबाड़ी कार्यकत्री तथा विद्यालय के बच्चे सहित अध्यापिका काजल जायसवाल , मधु शर्मा अध्यापक राजकरन यादव आगनवाड़ी कार्यकत्री इंदुमती यादव , सरला आदि शामिल रहे।

करो योग रहोगे निरोग : रीता तिवारी

करछना। विश्व योग दिवस पर पूर्व माध्यमिक विद्यालय जगौती में योगासन योगाभ्यास के दौरान रीता तिवारी ने बताया कि नित्य प्रति योगाभ्यास करना चाहिए आश सोनी ने बताया कि योग करने से शरीर निरोग रहता है आज के परिवेश में खान पान इतना दूषित हो गया है कि शरीर में अनेक प्रकार की बिमारियां घेर रही है इन बिमारियों से बचने के लिए योग जरूरी है आशा सोनी ने कहा कि योगा करने से शरीर में स्फूर्ति आती है व शरीर में बिमारियों का प्रवेश नहीं हो पाता शरीर स्वस्थ एवं प्रसन्न रहता है।

भाजपा प्रतापपुर मंडल ने मनाया योग दिवस

प्रतापपुर। भाजपा प्रतापपुर मंडल की तरफ से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग का कार्यक्रम प्रसिद्ध हनुमान मंदिर उग्रसेनपुर प्रांगण में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष पंडित आशुतोष त्रिपाठी ने किया।कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए त्रिपाठी जी ने योग के महत्व के बारे में बताया कार्यक्रम में देवेन्द्र धर द्विवेदी, श्यामधर शर्मा, सुशील सिंह, विभव सिंह, कान्हा सिंह बघेल, शिवशंकर मिश्र, सतीश चंद्र मिश्र, सच्चिदानंद तिवारी, ज्ञानेंद्र पांडेय, राजमणि बिन्द, लालेश सिंह पटेल, राजकुमार सिंह, गुड्डू मिश्रा सहित तमाम कार्यकर्ता व साथी बन्धु उपस्थित रहे उक्त जानकारी मंडल के मीडिया प्रभारी आचार्य मयंक मिश्र ने दिया है।

ग्राम प्रधान के अगुवाई में पंचायत भवन में मनाया गया योग दिवस

लेडियारी। कोरांव तहसील अंतर्गत खीरी ग्राम पंचायत सचिवालय के पंचायत भवन में सुबह 6:30 बजे ग्राम प्रधान मो.यूसुफ की अध्यक्षता मे ग्राम पंचायत भवन/सचिवालय में योगदिवस मनाया गया।इस योगदिवस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत के निवासी तमाम महिला पुरुष भाग लिए और योगासन किया। कार्यक्रम के समापन पर प्रधान द्वारा चना और गुड़ भी आंवन्टित किया गया। योग करने से होने वाले तमाम रोगो से निजात मिलता है। इस योग दिवस कार्यक्रम मे ग्राम प्रधान मो .युसुफ , ग्राम विकास अधिकारी विनीत पाठक, आस्था गौतम पंचायत सहायक, राकेश कुमार रोजगार सेवक, आंगन वाणी शबाना बेगम, सुमन मिश्रा, निर्मला देवी, गीता देवी, सुशील देवी, ग्राम सेवक, खीरी प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक शमलेश कुमार व सभी शिक्षक गण तथा ग्राम पंचायत के पंद्रहों सदस्य गण आदि लोग मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग अमृत सप्ताह का हुआ समापन

कोरांव के कई स्कूलों में विधायक ने योग दिवस कार्यक्रम में लिया भाग

ग्राम प्रधान ने पौध रोपण ग्राम्य विकास में सहयोग की किया अपील

कोरांव। ग्राम पंचायत अल्हवा के प्राथमिक विद्यालय प्रांगण में अंतराष्ट्रीय योग अमृत महोत्सव का समापन योग दिवस पर भव्य आयोजन कर मनाया गया जिसमे बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति रही। प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने सम्बोधित करते हुए योग करके निरोग होकर आत्मविस्वास एवं धैर्य विवेक बढ़ाने अपने स्वास्थ्य के बेहतरी के लिए नियमित रूप से योगा करने की अपील की, साथ ही योगा ड्रेस नियमित करने वालो को देने की भी घोषणा की। प्रधान शहजादे ने प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों एवं गॉव के प्रत्येक पदाधिकारियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि समय से अपने जिम्मेदारियों का सभी निर्वहन करें जिससे मजबूरन बतौर प्रधान मुझे लिखा पढ़ी कार्रवाई ग्रामीणों के शिकायत उपरांत न लेना पड़ें।योग सप्ताह शिविर में प्रत्येक दिन नियमित रूप से शिक्षामित्र रामबहादुर ने गांव वालों को योगा अभ्यास कराया। इसी प्रकार पौधा रोपण के लिए ग्राम वासियों को जागरूक किया। प्रधान ने कहा कि नदी नाला की जमीनों से लोग अवैध रूप से कब्जा हतालें उन्हे हम बृक्छ रोपण के लिए पट्टे देगें,साथ ही गढ़ा खुदाई और पौध के लिए पैसे भी देगें। प्रधान ने कहा कि सचिवालय भवन पैलेस सीसीटीवी कैमरे अब स्कूल की भी निगरानी करेंगें। जिससे कौन अध्यापक उपस्थित है कौन नहीं उपस्थित है इसका रिकॉर्ड होगा,तद्नुसार कार्यवाही होगी। सर्वजनिकवित्र प्रणाली में व्याप्त शिकायतों परभी प्रधान ने चर्चा की। कहा सत्य पराजित नहीं होता बहुत जल्दी कोटेदार के भ्रष्ट्राचार का सपना चूर हो जायेगा। क्योंकि ज्यादा दिनों तक गलत कार्य का सहयोग कोइ नही देता। कार्यक्रम में पंकज दीक्षित इंचार्ज प्रधानाध्यापक, उपासना सिंह सहायक अध्यापक , रामबहादुर सिंह शिक्षामित्र, सूर्यदीन सिंह रोजगार सेवक, अखिलेश सिंह पंचायत सहायक, सोनकली आंगनवाड़ी, प्रेम लता सहायिका, बिट्टो बेबी आसा कार्यकर्ती, सरयू प्रसाद, शमीम बेगम, रमाकांत समेत सभी वार्ड के सदस्यगण एवं बड़ी सँख्या में ग्रा मीण बच्चे मौजूद रहें।

अंधेरा छंटते ही लगी योग की क्लास

हर तरफ योग करते दिखे लोग

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। आठवें योग दिवस के मौके पर लोगों में योग को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला।सरकारी दफ्तरों से लेकर विभिन्न संगठनों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के साथ-साथ बाग-बगीचे और खेल के मैदान में भी लोग योग करते नजर आए। योग करने के दौरान लोगों में तालमेल भले ही कम दिखा हो, पर उत्साह की कोई कमी नहीं दिखी।

शंकरगढ़ क्षेत्र के विकास खंड परिसर,समस्त परिषदीय विद्यालयों, पंचायत भवनों, थाना परिसर, वन विभाग के साथ विभिन्न स्थानों में सैकड़ों लोगों ने योग किया। विकास खंड मुख्यालय में खंड विकास अधिकारी रामविलास राय, सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर शैलेंद्र सिंह, डॉक्टर संजय सिंह, डॉ अनूप सिंह आदि अधिकारियों, कर्मचारियों ने योग की विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग कर लोगों को योग करने की सीख दी। इसी तरह रामवाटिका शंकरगढ़ में योग शिविर का आयोजन किया गया। जहां पर रमेश केसरवानी, सुरेश केसरवानी, व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता, सुधा गुप्ता, अनूप केशरवानी, रोहित केसरवानी, रतन केसरवानी, जय केसरवानी, नरेंद्र गुप्ता, अनुज केसरवानी, दीपक कुमार, सुजीत केसरवानी, मनीष कुमार, सुनील केसरवानी, रामानुज गुप्ता आदि ने योग किया और लोगों से योग करने की अपील की। इसी तरह शंकरगढ़ के राजा कमलाकर इंटर कॉलेज, नवोदय शिक्षा केंद्र लाइनपार, कैंब्रिज हाई स्कूल इंटर कॉलेज, एसबीएस एकेडमी, चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल समेत तमाम स्कूल व कालेज के स्टाफ व बच्चों ने योग किया और कहा कि तन और मन की आरोग्यता सुनिश्चित करने, आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के लिए योग को जीवन का हिस्सा बनाएं।

योग को दैनिक दिनचर्या में शामिल करना आवश्यक : माला

मेजा ऊर्जा निगम में मनाया गया अंतराष्ट्रीय योग दिवस

मेजा ऊर्जा निगम कैम्पस में योगा करते कर्मचारी व परिजन

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम में अंतराष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम साथ मनाया गया । इस अवसर पर मेजा ऊर्जा निगम आवासीय परिसर एक योग शिविर का आयोजन किया जिसमें निगम के कर्मचारी एवं उनके परिजन, सीआईएसएफ के जवान, स्कूल व अन्य सहयोगी संस्थाओं के लोगो ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। योग प्रशिक्षण के लिए श्री श्री योग केन्द्र प्रयागराज से आई माला स्वराज ने बताया कि योग के माध्यम से मन और शरीर दोनों को स्वस्थ रखा जा सकता है। उन्होनें कहा कि योग जीवन जीने का एक रास्ता है हमें योग को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। योग शिविर के सफल आयोजन पर प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए महाप्रबंधक प्रचालन एवं अनुरक्षण ने कहा कि योग हमें स्वस्थ शरीर प्रदान करता है जिससे हम अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में उत्कृष्टता हासिल कर सकते है। शिविर के अंत में सभी प्रतिबहियों ने नित्या योग करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर जीएम (सी एंड एम), पीके साबत और उपाध्यक्षा अपराजिता महिला समाज रूचि कुमार के अलावा कई अन्य लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहें।

निरोगी काया के लिए सभी को योग जरूरी : रमेश

करछना। अतीत में हमारे ऋषि-मुनियों की साधना से जुड़ा यह योग निरोगी काया के लिए हम सबको बहुत जरूरी है। प्रतिदिन योग क्रिया करने से शरीर के साथ-साथ मन और मस्तिष्क स्वस्थ और संतुलित रहता है। यह बातें विश्व योग दिवस पर रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज में आयोजित योग कार्यक्रम के दौरान एनसीसी अधिकारी रमेश चन्द्र तिवारी ने बच्चों को योग का गुर सिखाते हुए बताया। उन्होंने प्रतिदिन बच्चों को योग क्रिया करने के साथ-साथ घर परिवार के लोगों को भी सिखाने पर जोर दिया। प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने हलासन, शवासन, मंडूकासन, शीर्षासन, सूर्य नमस्कार आज आसन और योग के बारे में जानकारी देते हुए इसके महत्त्व और होने वाले लाभ के बारे में बच्चों को जागरूक किया, साथ ही इसे नियमित रूप से दैनिक क्रिया में शामिल करने पर भी जोर दिया। इस दौरान शिक्षक कर्मचारी और बच्चे मौजूद रहे।

योग को बनाएं अपनी दिनचर्या : संजय कुदेशिया

इफको में योगासन करते इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया व अन्य

फूलपुर। इफको धियानगर में मंगलवार को 8वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। मुक्तांगन परिसर में क्रिया योग व प्रणायाम का शुभारंभ योग प्रशिक्षक शैलेन्द्र मौर्य ने सूर्य को नमस्कार कर किया। इस दौरान उन्होंने उपस्थित समूह को अनुलोम-विलोम, कपाल-भारती,भ्रामरी प्राणायाम, चक्रासन, सर्वांगासन, सलभ आसन,वज्रासन सहित विभिन्न योग व प्रणायाम की शिक्षा दी। इकाई प्रमुख कार्यकारी निदेशक संजय कुदेशिया ने कहा कि योग अब विश्वव्यापी बन गया है। योग का दीर्घकालीन लाभ है। इसलिए हमें योग को अपनाते हुए इसे अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन इफको रिक्रिएशन क्लब के सचिव डी.के.शुक्ला ने किया। इस दौरान वरिष्ठ महाप्रबंधक व क्लब अध्यक्ष गिरिधर मिश्र, विभागाध्यक्ष मानव संसाधन दानवीर सिंह, संयुक्त महाप्रबंधक ए.पी.राजेन्द्रन व पी.के.सिंह, कर्नल दिनेश सिंह, इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार मिश्र व महामंत्री स्वंय प्रकाश, इफको कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विनय यादव सहित बड़ी संख्या में इफको कर्मचारी, महिलाएं एवं बच्चे योग शिविर में शामिल रहे।

आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत करता है योग : पुरुषोत्तम सिंह

अखंड भारत संदेश

सहसों। विश्व योग दिवस के अवसर पर मंगलवार को श्री राम जानकी मंदिर सहसों के प्रांगण में लोगों को योग का प्रशिक्षण कराया गया। इस अवसर पर योगाचार्य पुरुषोत्तम सिंह के द्वारा उपस्थित लोगों को योगासन की विभिन्न आसनों को कराते हुए प्राणायाम, ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन, सूर्य नमस्कार, अनुलोम विलोम, कपालभांती जैसे मुख्य योगाभ्यास योगासन कराते हुए उन्होंने प्राणायाम की विधियां एवं लाभ भी बताए। उन्होंने बताया कि मनुष्य के शरीर के अंदर आध्यात्मिक शक्ति को जागृत कर सुदृढ़ और मजबूत बनाने में योग बहुत ही सहायक है योग अथवा व्यायाम मनुष्य का शरीर निरोगी, मजबूत और कांति में बनाता है। हर व्यक्ति को चाहिए कि हर सुबह 10 मिनट का समय निकालकर योगासन करें और अपने शहर को असाध्य रोगों से बचा कर रखें। आज पूरा विश्व योग दिवस पर फोकस कर रहा है योग का कोई विकल्प नहीं है। इस मौके पर इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह जिला संचालक गंगापार, राजनाथ सिंह, चन्द्रेश कुमार केसरवानी, ग्राम प्रधान विष्णू केसरवानी, अनिल सरोज, पवन कुमार शुक्ला, डॉ प्रमोद गुप्ता, शशांक धर द्विवेदी, मनोज तिवारी, नरेन्द्र कुशवाहा, गोल्डी गुप्ता, रितेश केसरवानी, नरेन्द्र केसरवानी, राम चन्द्र केसरवानी, डॉ राजेंद्र वर्मा, विमल मिश्रा, राम प्रकाश शुक्ला, अनिल जायसवाल सहित भाजपा सहसों मण्डल के कार्यकर्ता उपस्थित होकर योगाभ्यास का प्रशिक्षण लिया। इसी तरह विकासखंड सहसों के प्राथमिक विद्यालय बभनकुईयां में भी विश्व योग दिवस पर प्रातः काल ग्रामीण लोगों ने योगाभ्यास किया। इस मौके पर प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , ग्राम विकास अधिकारी हेमंत सिंह, अशोक कुमार, सुनील कुमार सिंह, राहुल सिंह सहित आदि ग्रामीण विद्यालय के प्रांगण में उपस्थित होकर योगाभ्यास किया और प्रतिदिन 10 मिनट का योग करके शरीर को सुदृढ़ व निरोगी बनाने का संकल्प भी लिया।

नियमित योगाभ्यास से गंभीर बीमारियों से बचाता है

झूंसी। क्षेत्र में मंगलवार को हर्षोल्लास के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। सरायतकी स्थित सरोज विद्याशंकर इंटर कालेज में प्रबन्धक डॉ. दुर्गा प्रसाद मणि त्रिपाठी, प्रधानाचार्य प्रमोद त्रिपाठी सभी शिक्षकों के साथ योग, प्राणायाम तथा ध्यान का अभ्यास किया। मोती लाल नेहरू, तिलक इंटर कालेज व नेहरुग्राम भारती मानित विश्व विद्यालय के सभी एससी कैडेटों के साथ छात्र- छात्राओ, शिक्षकों ने योगाभ्यास किया। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट विमल कुमार उत्तम, लेफ्टिनेंट मनोज कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे। सेंट्रल एकेडमी में योगा महोत्सव का कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के निदेशक एसके तिवारी, प्रधानाचार्य एके पाण्डेय ने दीप प्रज्वलन से किया। वही एमआरएस स्कूल में योगाचार्य पुरुषोत्तम सिंह ने विद्यालय के समस्त स्टाफ एवं बच्चो को योग कराया। विद्यालय के प्रबंधक अरविंद सिंह पटेल ने योग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। रेलवे स्टेशन के निकट विजय फाउंडेशन के बैनर तले आयोजित योग दिवस में आयुर्वेद चिकित्सक श्वेता सिंह ने बताया कि नियमित योगासन करने से गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है। भाजपा गंगापार की और से महामंत्री मनोज निषाद व जीतलाल त्रिपाठी की अगुवाई में गोशाला झूंसी में योग दिवस का आयोजन किया गया।

खबर संक्षेप

दो शराब की दुकान से लाखों की शराब हुई चोरी, एक मकान का भी टूटा ताला

झूंसी। स्थानीय थाना क्षेत्र में चोरो के हौसले इस कदर बुलंद हो गए है कि एक ही रात में दो शराब की दुकान व एक मकान का ताला तोड़ लाखो की शराब व नगदी पर हाथ साफ कर दिया और गस्त कर रही पुलिस को भनक तक नही लगी। लगातार हो रही चोरी से क्षेत्र में हड़कंप मचा है। सूचना पर पहुची पुलिस ने जांच की खबर लिखे जाने तक रिपोर्ट दर्ज नही हुई थी। चमनगंज चौकी क्षेत्र में चोरो ने सोमवार की रात देशी शराब की दुकान का ताला तोड़ सैकड़ो पेटी शराब व सीसी टीवी का डीवीआर उठा लेगये। वही पास में स्थित एक मकान से भी चोरो ने दो मोबाईल 35 हजार की नगदी भी उठा ले गए साथ ही झूंसी चौकी क्षेत्र में अंग्रेजी शराब की दुकान का ताला तोड़ लाखो की शराब व 2 लाख कैश पर हाथ साफ कर दिया। दुकान मालिक खुल्दाबाद निवासी संजय श्रीवास्तव ने बताया कि मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की है। लोगों के अनुसार इतने बड़े पैमाने पर शराब चार पहिया वाहन से ही ले जाया जा सकता है। मेन सड़क स्थित दुकान का ताला तोड़ चोर सैकड़ो पेटी शराब लाद ले गई और गस्त कर रही पुलिस सोती रही। एक साथ तीन स्थानों पर हुई चोरी से लोगो मे आक्रोश है।

सिलेंडर फटने से झोपड़पट्टी में लगी आग फायर ब्रिगेड ने आग पर पाया काबू

अखंड भारत संदेश

खाना बनाते समय हुआ हादसा, बाल बाल बचे दंपति

आग को बुझाता दमकल कर्मी व मौजूद लोग

झूंसी। झोपड़ी में सिलेंडर के लीकेज से लगी आग की सूचना पर फायर ब्रिगेड पहुंची। फायर ब्रिगेड के पहुंचने से पहले ही स्थानीय बस्ती वासियों ने आग पर काबू पा लिया था। वहीं समय से बस्ती वासी आग पर काबू न पाते तो बड़ी घटना घट सकती थी।

मंगलवार झूँसी के शास्त्रिपुल लोटस हॉस्पिटल के पास झोपड़ी में एक वृद्ध महिला सुशीला देवी पत्नी पप्पू निषाद जो खाना बना रही थी तभी इंडेन के छोटे सिलेंडर से हल्की लीकेज हुई और झोपड़ी में आग लग गई। जिससे अफरा तफरी मच गई। बस्ती से ही किसी व्यक्ति ने डायल 112 फायर ब्रिगेड को सूचना दी तो तत्काल डीएफओ फायर ब्रिगेड की गाड़ियों के साथ मौके पर पहुंचे तो वहां हल्की आग लगी थी। जिसे फायर ब्रिगेड के पहुंच के पहले ही स्थानीय लोगों ने बुझा दी गयी थी।

आग लगने की सूचना पाकर मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की सूचना : आग की सूचना से पूरे जिले में अफरा तफरी मच गई। मौके पर फायर ब्रिगेड टीम ने पहुचकर देखा तो आग बुझ चुकी थीं। सिलेंडर से लगी आग इतनी तेज थी कि थोड़ी सी चूक होती तो पूरा बस्ती जलकर राख हो जाता लेकिन बस्ती वासियों की सक्रियता से आग पर पूर्ण रूप से काबू पाया गया। आग बुझने के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।आग लगने की सूचना क्षेत्र में तेजी से फैल गई समय रहते ही बस्ती वासियों ने आग पर काबू पाया नहीं तो बड़ी घटना हो सकती थी।

गंगा किनारे प्रतीकात्मक तरह से मना योग दिवस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मंगलवार को नेहरू युवा केंद्र -नमामि गंगे प्रयागराज के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के शुभ अवसर पर अरैल घाट पर योगाभ्यास का कार्यक्रम प्रतीकात्मक तरह से थीम - मानवता के लिए योग के आधार मनाया गया ' जिस का मूल उद्देश्य योग के साथ गंगा स्वछता को लेकर जगरूकता को ध्यान रखते हुए किया गया ' कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों का स्वागत जिला युवा अधिकारी सुश्री जागृति पांडेय ,जिला परियोजना अधिकारी सुश्री एषा सिंह (नमामि गंगे) ने किया। कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर नेहरू युवा केंद्र संगठन के सेवानिवृत्त उपनिदेशक केएन दुबे, प्रोफेसर अशोक पांडे, एनएसएस समन्वयक सच्चिदानंद त्रिपाठी , वरिष्ठ समाजसेवी कुंवर जी तिवारी, समाजसेवी सरदार पतविंदर,गंगा टास्क फोर्स की टीम , लेखाकार अदनान उल्ला खान राज्य प्रशिक्षक- राम अवध कुशवाहा, के साथ अन्य लोग भी उपस्थित रहे। प्रशिक्षिक सौरभ गौतम ने मौजूदा सभी लोगों को विभिन्न तरीके के योगाभ्यास प्रणाम, आसन आदि कराया। कार्यक्रम में सभी अतिथि गण ने योग दिवस पर अपने विचार साझा किए और बताया की योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह मन और शरीर की एकता, विचार और कार्रवाई, संयम और पूर्ति; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने का सरल माध्यम है। इसकी मदद से न सिर्फ स्वास्थ्य तन बल्कि शांत मन को भी पाया जा सकता है। स्वस्थ समाज एवं स्वच्छता समाज की संकल्पना को चरितार्थ करते हुए अरेल घाट पर स्वच्छता अभियान चलाया गया।एक साथ दोनों कार्य संपन्न हुए। कार्यक्रम में स्वयं सेवक रोहित मणि निर्मल कांत ,गायत्री, नेहा अमन, रितिका ,हिमांशु ,चित्रांश, रोशनी, सागर, निकिता, अंकित , युवा मंडल, गंगा दूतों ने योग दिवस पर योग अभ्यास किया ।

महामृत्युंजय महावतार बाबाजी वटवृक्ष के आध्यात्मिक आभामंडल में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अखंड भारत संदेश

क्रियायोग का अभ्यास कराते योग गुरु

क्रियायोग का अभ्यास करते समस्त साधक

झूंसी। क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी प्रयागराज के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों के साथ ही साथ कनाडा अमरीका ब्राजील सिंगापुर आदि देशों से आए हुए साधकों विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओ ने भाग लिया । कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय योग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने योग के वास्तविक स्वरूप पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुए उपस्थित लोगों को क्रियायोग ध्यान का विविध अभ्यास कराया । कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ तथा कार्यक्रम में योग, क्रियायोग, ध्यान, आसन, प्राणायाम आदि के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट किया । अंतरराष्ट्रीय योग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने कहा कि क्रियायोग अभ्यास से मानव कि सभी प्रकार की समस्याएं तथा कष्ट आदि हमेशा के लिए सहजता से दूर हो जाते हैं । इस सत्य को जानते हुए भी क्रियायोग ध्यान की साधना सभी के लिए आसानी से सहज नहीं हो पाती है जबकि क्रियायोग ध्यान का अभ्यास सरलतम है ।और आसानी से हर समय किया जा सकता है तथा स्वामी जी ने क्रियायोग के मौलिक सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए कहा कि क्रियायोग सिद्धांत यह है कि परम ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । यही दृश्य और अदृश्य जगत के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं इसको स्वीकार करने में कठिनाई होने के कारण को समझना आवश्यक है ।तथा स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने आगे कहा कि मानव के अंतः करण में प्रवेश करने पर स्पष्ट हो गया कि मनुष्य का हृदय 8 प्रकार की मायावी प्रवृत्तियों से दूषित रहता है जिसके कारण वह सत्य को स्वीकार नहीं कर पाता है मानव हृदय को दूषित करने वाली आठ प्रवृत्तियां घृणा, भय ,लज्जा , शोक, जाति,गर्व, निंदा और दंभ । इन प्रवृत्तियों से मुक्त होने के लिए मनुष्य जीवन भर प्रयास करता है परंतु मुक्त नहीं हो पाता है । क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से यह प्रवृतियां अदृश्य हो जाती है जिसके फलस्वरूप मानव अस्तित्व निर्मल हो जाता है । इसके अंतरण में सत्य और अहिंसा की स्थापना हो जाती है । तथा अंतरराष्ट्रीय योग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने योग दिवस के पावन अवसर पर भविष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि क्रियायोग का विश्वव्यापी विस्तार होने से विश्व के सभी राष्ट्रों में लड़ाई झगड़े के लिए हथियारों का निर्माण बंद हो जाएगा । तथा हथियार रखने के लिए लाइसेंस मिलना भी बंद हो जाएगा । मनुष्य अपनी पूरी शक्ति का उपयोग ब्रह्मांड की समस्त रचनाओं को सुरक्षा प्रदान करने में करेगा तथा रोग निवारक मंत्र के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

जर्जर पोल हुआ धराशायी रास्ता अवरुद्ध बिजली गुल

मऊआइमा। मऊआइमा नगर पंचायत क्षेत्र में लगे अधिकांश पोल और बिजली के तार जर्जर हो चुके हैं । मरम्मत न होने के कारग आए दिन विधुत बाधित रहती है । मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा नगर पंचायत क्षेत्र में चेकिंग अभियान में विधुत विभाग अव्वल है। परन्तु जर्जर तार पोलों की ओर कोई ध्यान नहीं देता है। बीती रात नगर पंचायत क्षेत्र के चुनौंटा कुआं चौराहे पर लगा विधुत पोल जर्जर होने के कारण धराशायी हो गया। बताते हैं कि आधा घंटे तक आग की चिंगारी निकलती रही । बाद में सूचना के बाद लाइन बंद करायी गयी। दिनभर विधुत आपूर्ति बाधित रही तथा बडे वाहनों का आवागमन बाधित रहा । देर शाम तक समाचार लिखे जाने तक विधुत आपूर्ति बहाल नहीं हुई थी । जबकि विधुत विभाग के कर्मचारी पोल सही कराने में लगे थे।

न्यूज झरोखा

मेजा रोड रेलवे स्टेशन पर मिला अज्ञात व्यक्ति का क्षत-विक्षत शव

मेजा रोड। दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग के मेजा रोड रेलवे स्टेशन के पश्चिम साइड डाउन लाइन रेलवे पटरी पर एक व्यक्ति का क्षत-विक्षत शव मिलने से हड़कंप मच गया सूचना पर पहुंची जीआरपी शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। मंगलवार को मेजारोड रेलवे स्टेशन के पश्चिम साइड डाउन लाइन रेलवे पटरी पर एक अज्ञात व्यक्ति का क्षत-विक्षत शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची जीआरपी ने मृतक की जेब की जामा तलाशी किया तो जेब में मिले आधार कार्ड से उसकी पहचान सुरेश कुमार (46) पुत्र बनवारी लाल निवासी साहपुर इस्सौटा के रूप में हुई। जीआरपी ने मामले की जानकारी फोन माध्यम से मृतक के परिजनों को दिया। सूचना पर बदहवास होकर घटनास्थल पर पहुंचे परिजन रोने बिलखने लगे। वही जीआरपी शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

ट्रक की डीजल टैंक फटने से लगी आग, हादसा टला

सहसों। पेट्रोल पंप पर डीजल भरवाने के लिए पहुंची ट्रक की डीजल टंकी फटने से आग लग गई परन्तु कर्मचारियों की सूझबूझ से बड़ा हादसा होते होते टल गया। थरवई थाना क्षेत्र के प्रयागराज गोरखपुर राजमार्ग पर थानापुर गांव में स्थित गणपति कृपा पेट्रोल पंप पर मंगलवार को डीजल भरवाने के लिए पंप के सामने खडी ट्रक की टंकी फट जाने से ट्रक में आग लग गई। जिससे चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई। तत्काल वहां उपस्थित पेट्रोल पंप कर्मचारियों की सक्रियता से एक बड़ा हादसा टल गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बालू उतारकर मंगलवार को सुबह लगभग पौने 10 बजे ट्रक डीजल भरवाने के लिए थानापुर स्थित गणपति कृपा पेट्रोल पंप पर पहुंचा। जैसे ही पेट्रोल पंप कर्मचारी ने डीजल डालने के लिए नाजुल निकाला वैसे ही ट्रक की डीजल की टंकी फट गई और तुरंत ही ट्रक में आग लग गई। आग लगते ही चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई लोग दहशत में इधर-उधर भागने लगे परंतु पेट्रोल पंप कर्मचारी रामबदन तिवारी, पप्पू सिंह, शिव कुमार आदि तथा ढाबा संचालक पिंटू दुबे अपने कर्मचारियों सहित हौसला दिखाते हुए वहां पहुंचकर फायर की टंकी लेकर तत्काल आग बुझाना शुरू कर दिया। उसी समय सक्रियता दिखाते हुए समर सेबुल चला कर तत्काल पानी का बौछार भी शुरू कर दिया गया। शीघ्र ही आग पर काबू पा लिया गया।

चोरी के बाद पहुची पुलिस व डॉग स्क्वाड

इंस्पेक्टर के घर से लाखों के जेवरात व नगदी लेकर चोर फरार, पिछले वर्ष भी टूटा था इंस्पेक्टर के घर का ताला

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र में एक के बाद घर का ताला तोड़ चोर पुलिस को खुली चुनैती दे रहे है। सोमवार की रात चोरों ने हनुमानगंज चौकी के जमुनीपुर निवासी एक इंस्पेक्टर के घर का ताला तोड़ लाखो के जेवरात व नगदी पर हाथ साफ कर चलते बने। सूचना पर हनुमानगंज चौकी इंचार्ज, फिल्ड यूनिट व डॉग स्क्वाड के साथ मौके पर पहुच जांच की। जमुनीपुर गांव निवासी आशीष मिश्रा पुलिस इंस्पेक्टर है इन दिनों वह लखनऊ के विभूति खंड थाने पर के चार्ज पर है। उनके भाई डॉ. अलोक मिश्रा परिवार के साथ घर पर थे सोमवार की रात चोरो ने इनके घर के पीछे के दरवाजे का ताला तोड़ अंदर दाखिल हुए और अलमारी में रखी सोने की अंगूठी, चेन सहित लाख रुपये के जेवरात व दस हजार नगदी उठा ले गए। घर में सो रहे परिजनों को चोरी की जनकारी सुबह हुई तो पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलने पर पुलिस के साथ फॉरेंसिक टीम व डॉग स्क्वॉड भी पंहुचा। खोजी कुत्ता घर के पीछे से 100 मीटर मेन सड़क तक गया रस्ते में जगह जगह समान बिखरा मिला पर चोरो का कोई सुराग नही मिला। अलोक की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। क्षेत्र में आए दिन हो रही चोरी की वारदात लोगो में पुलिस के प्रति असन्तोष है।

बारिश से कच्चा मकान जमीन दोज बाल बाल बचे परिजन

करछना। क्षेत्र के निरिया गांव में हुई बारिश के चलते एक परिवार का कच्चा मकान धराशाई हो गया उस वक्त मकान में दयाशंकर गौड का परिवार बीवी बच्चे उसी मकान में सो रहे थे कि तेज बारिश और तूफान के चलते मकान जमीनों हो गया जिसमें परिजन दबकर गए शोर-शराबा सुनकर आसपास के लोगों ने किसी तरह परिजनों को मलबे से बाहर निकाला जिसमें एक बच्ची की मामूली चोटें लगने से उपचार कराया गया ग्रामीणों के मुताबिक पीड़ित परिवार के पास कच्चा मकान के अलावा कोई रहने का दूसरा सहारा नहीं है तथा संबंधित विभाग के अधिकारियों से परिजनों ने अपील किया है कि पीड़ित परिवार को पुनः आशियाना बनाने के लिए आवास दिलाए जाने की मांग की है।

वृहद स्तर पर मनाया गया विश्व योगा दिवस

तमाम गंभीर बीमारियों से बचाव एवं उपचार है योगा : श्वेता सिंह

अखंड भारत संदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अभ्यास करते हैं लोग

झूंसी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयुर्वेद चिकित्सक डॉ श्वेता सिंह ने कहा कि नियमित योगासन करके गंभीर बीमारियों से बचाव एवं उनका उपचार किया जा सकता है। झूंसी रेलवे स्टेशन के निकट खुले आसमान के नीचे विजय संकल्प फाउंडेशन के बैनर तले डॉ श्वेता सिंह की उपस्थिति में अनिल यादव धुन्नू के नेतृत्व में एसके तिवारी, मदन गोपाल, जीवा पाठक, सैन्यकर्मी नूर मोहम्मद सिद्दीकी, अधिवक्ता राजीव वर्मा, डीएस मौर्या, दीप नारायण सिंह दीपक, सुनील यादव, सुरेंद्र भारती, मुनीम पांडेय, सुजीत मालवीय, अरविंद पांडेय, जगदीश यादव, सर्वेश कुमार सहित दर्जनों लोगों ने योग किया। महावीर ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस अबूसा, सरायइनायत में योग प्रशिक्षक आत्माचार्य एवं आचार्य देवराज तिवारी द्वारा निदेशक इंजी प्रणव त्रिपाठी, प्रधानाचार्य सुनील मिश्रा, ताराशंकर, रजनी शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी अजय सिंह सहित दर्जनों लोगों को योग का महत्व समझाते हुए योग कराया। रुद्रा संगम अपार्टमेंट में संतोष संतोष सिंह के नेतृत्व में वायुसेना के पूर्व ट्रेनर अनिल मिश्रा, संजीव सिंह, अशोक श्रीवास्तव, डॉ ताराशंकर पांडे, अनिल गुप्ता, संजय पांडे, डॉ विनोद श्रीवास्तव, केएल श्रीवास्तव, दिनेश बहादुर सिंह, आरपी सिंह, पत्रकार चौधरी जीतेंद्र आदि ने योगासन किया। रुद्रा संगम एलाटीज वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष अनिल सिंह के सौजन्य से वीबी सिंह, वीरेंद्र पाल, संदीप सिंह, पीसी मौर्य, नीरज सिंह, रंजना मौर्य, प्रभात सिंह, वंदना सिंह, अमिता आदि ने योगाभ्यास किया। इसी तरह आशुतोष मेमोरियल स्कूल धनैचा मलखानपुर के प्रबंधक डॉ गिरीश कुमार पांडेय एवं कोऑर्डिनेटर अदिति, हनुमंत इंटर कॉलेज सराय लाहुरपुर के प्रिंसिपल आनंद पांडेय, तिलक इंटर कॉलेज कोटवा के प्रिंसिपल रमेशचंद्र पांडेय, बहादुरपुर ब्लाक परिसर में बीडीओ मनोज कुमार सिंह की उपस्थिति में योग कार्यक्रम संपन्न हुआ।

रहस्यमय ढंग से किशोर गायब मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। दो दिन पूर्व घर से बाहर निकला किशोर आज तक वापस नहीं लौटा। किशोर की माता ने मऊआइमा थाने में मुकदमा दर्ज करा दिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम किंगरिया का पूरा निवासनीय नरगिस बानों पत्नी करम अली का कहना है कि उनका पुत्र उमैर अली उर्फ मुख्तार अली 15 वर्ष घर से दो दिन पूर्व निकला परन्तु आज तक घर नहीं आया। किन्हीं अनहोनी से सहमी हुई नरगिस बानों ने मऊआइमा थाने में गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज करा दी है।

हाई टेंशन लाइन की चपेट में आया ट्रक चालक की हुई दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेस

कंडक्टर ने छलांग लगा कर बचाई जान

करछना। थाना क्षेत्र के अंतर्गत देवरी खुर्द गांव के सामने बिजली विभाग की लापरवाही के चलते लटक रहे जर्जर बिजली तार की चपेट में आने ट्रक चालक की मौत हो गई, जबकि कंडक्टर समय रहते वाहन से छलांग लगाकर जान बचा लिया । प्राप्त जानकारी के मुताबिक अखिलेश कुमार 24 वर्ष पुत्र करण सिंह निवासी हाजीनगर, करैरा जिला शिवपुरी, मध्य प्रदेश ने मंगलवार सुबह के वक्त कंडक्टर हरदीप सिंह पुत्र रविंद्र सिंह के साथ डीसीएम ट्रक पर क्रेन मशीन लादकर ओबरा से गुना मध्य प्रदेश के लिए जा रहा था। लेकिन ट्रक चालक अखिलेश को करछना क्षेत्र में किसी से मुलाकात करना था। इसलिए वह लिंक मार्ग से होते हुए गुजरने लगा । जैसे वह क्षेत्र के देवरी खुर्द गांव के सामने पहुंचा था तभी मार्ग के ऊपर से गुजरे 11 हजार हाई वोल्टेज बिजली का तार डीसीएम ट्रक पर लदे क्रेन में टच हो गया और बिजली दौड़ गई। उसी बीच ट्रक चालक भी बिजली की चपेट में आ गया और तरफडाने लगा। लेकिन बिजली का संचालन चालू होने की वजह से उसे कोई बचा न सका, और देखते ही देखते उसकी मौके पर मौत हो गई। जबकि कंडक्टर समय रहते वाहन से छलांग लगाकर जान बचा ली। घटना के बाद आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। जहां धीरे धीरे ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। उपस्थित लोगों ने घटना की जानकारी स्थानीय पुलिस को दी। लेकिन सूचना होने के कई घंटे बाद स्थानी पुलिस मौके पर पहुंच सकी और ना ही एंबुलेंस की व्यवस्था हो पाई। वहा स्थानीय लोगों की माने तो दशको से लगा बिजली का तार पूरी तरह से जर्जर हो गया है। और आए दिन तेज हवा में टूट कर गिरता रहता है। बिजली का तार बदले जाने को लेकर ग्रामीणों ने कई बार विभागीय अधिकारी व जेई से शिकायत किया । लेकिन शिकायत के बावजूद भी विभाग की ओर से जर्जर तार बदले जाने की जहमत नहीं उठाई गई।

इंटरमीडिएट के छात्र ने परीक्षा परिणाम से आहत होकर जान दिया

जंघई। क्षेत्र के सेमरी बिरगहीपुर गांव में एक छात्र द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया घटना सोमवार सुबह की है। सूचना पाकर मीरगंज पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेंज दिया।क्षेत्र के जंघई सेमरी बिरगहीपुर गांव निवासी 18 वर्षीय सौरभ कुमार मिश्र पुत्र उदयभान मिश्र इंटरमीडिएट का छात्र था रविवार को रिजल्ट देखा तो थर्ड डिवीजन से पास हुआ था। जबकि उसके कई साथियों ने अच्छे नम्बर से परीक्षा पास की थी। स्वजनों के अनुसार इसी बात को लेकर वह परेशान था। सुबह उठकर बाथरूम से लौटकर कमरे का दरवाजा बंद कर लिया। पंखे में साड़ी बांध कर उसने आत्महत्या कर ली। कुछ देर बाद परिजन दरवाजा खोलना चाहे तो वह अंदर से बंद था किसी अनहोनी की आशंका से स्वजन किसी तरह दरवाजा खोले तो अंदर का नजारा देख सन्न रह गए। सूचना पाकर थानाध्यक्ष मीरगंज बृजेश कुमार गुप्ता, उपनिरीक्षक संदीप कुमार शर्मा मय फोर्स मौके पर पहुंच आवश्यक पूछताछ किया।

जारी उपकेन्द्र से नाराज महिलाओं ने घेराव किया

जारी। विकास खंड जसरा के जारी उपकेंद्र के मैदा ग्राम सभा सौभाग्य योजना के तहत 150 विद्युत कनेक्शन जयवीर सिंह ,जेई विवेक सिंह द्वारा किया गया था जो कि एक माह से मैदा ग्राम सभा के आदिवासी बस्ती में लाइट ना होने से वहाँ के बच्चे ,बुजुर्ग ,महिलायें गर्मी व उमस से ब्याकुल है जिससे गुस्साए महिलाओ ने मंगलवार को सैकड़ो की संख्या में जारी विद्युत उपकेंद्र में जारी पावर हाउस का घंटो घेराव किया और विभाग के सक्षम अधिकारियों से बात करने पर अड़ी रही पावर हाउस का घेराव कर रही महिलाओं ने बताया कि एक महीने से आदिवासी बस्ती में लाईट नही है कई बार विभागीय अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी कोई सुनवाई नही गई जिससे नाराज महिलाओं ने जारी पावर हॉउस का घेराव किय।

कार्यालय ग्राम पंचायत कपुरी बढ़ैया वि0 खं0 कोरांव प्रयागराज

निविदा सूचना

ग्राम पंचायत कपुरी बढ़ैया विकासखंड कोरांव जनपद प्रयागराज में 15 वा वित्त एवं राज्य वित्त आयोग द्वारा निम्नलिखित विकास कार्य कराए जाने हैं। इच्छुक फर्मों से दिनांक 15 - 5 - 2022 से दिनांक 20 - 5 - 2022 तक निविदा आमंत्रित की जाती है। आपूर्तिकर्ता व्यापार कर वाणिज्य कर आयुक्त कार्यालय में पंजीकृत हो। निविदा दिनांक 22 जून 2022 को ग्राम पंचायत कार्यालय में समिति के समक्ष खोली जाएगी। निविदा कोटेशन स्वीकृत अस्वीकृत करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास सुरक्षित होगा। सामग्री की मात्रा पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगी।

कार्य विवरण-:

1. रामनारायण के घर से राजू गौतम के घर तक पक्की नाली निर्माण कार्य
2. स्थाई गोवंश आश्रय स्थल पर टीन शेड पानी टंकी पार्ट 1.2 निर्माण कार्य
3. बड़ी नहर से अनवर अली के घर तक इंटरलॉकिंग कार्य
4. काली सड़क से सेवालाल के घर तक इंटरलॉकिंग कार्य
5. काली सड़क से चंद्रमोहन के घर तक डब्ल्यूबीएम कार्य

अंजू कुशवाहा	प्रकाश सिंह
(ग्राम प्रधान)	(ग्राम पंचायत अधिकारी)
ग्रा0 पं0 कपुरी बढ़ैया	ग्रा0 पं0 कपुरी बढ़ैया
वि0खं0 कोरांव प्रयागराज	वि0खं0 कोरांव प्रयागराज

पुलिस लाइन परिसर में हर्षोल्लास से मना 8वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

जिले के 17 ब्लाकों में योग शिक्षकों ने लोगों को कराया योगा

पुलिस लाइन में योगा करते जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल व अन्य।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस लाइन परिसर में हर्षोल्लास के साथ आठवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। पतंजलि योग समिति ने पूरे जनपद में 51 योग शिक्षकों को विभिन्न स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम का आयोजन एवं सफल संचालन के लिए दायित्व दिया था। जिले के 17 ब्लॉक में 5 तहसीलों सहित जिला मेडिकल कॉलेज स्टेशन विद्यालयों एवं महाविद्यालयों सहित ग्रामीण अंचलों में भी पतंजलि योग समिति के योग शिक्षकों ने कार्यक्रम का आयोजित कर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया।

पुलिस लाइन परिसर में हुए कार्यक्रम में जिलाधिकारी डॉ नितिन बंसल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल राज्य सरकार द्वारा नियुक्त परियोजना निदेशक सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्या, विश्वनाथगंज विधायक जीत लाल पटेल, पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह, नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह सहित पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी गोविंद खंडेलवाल, युवा प्रभारी धर्मेंद्र प्रताप, किसान प्रभारी कमलेश बहादुर, भारत स्वाभिमान प्रभारी श्याम नारायण व महिला प्रभारी अनुपमा सहित अन्य कार्यकर्ता पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। अन्य संगठनों में जिला उद्योग व्यापार मंडल, ब्रह्माकुमारी, आर्ट आफ लिविंग, नेहरू युवा केंद्र, गायत्री परिवार सहित अन्य संगठनों के पदाधिकारी व कार्यकताओं ने बड़े हर्ष उल्लास के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया कार्यक्रम के समापन के बाद मंच पर डेमो दे रहे पतंजलि के योग शिक्षकों को जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी, सदर विधायक राजेंद्र कुमार, विश्वनाथ गंज विधायक जीत लाल पटेल द्वारा शॉल ओढ़ाकर वह पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। पुलिस लाइन के अतिरिक्त संगम इंटरनेशनल स्कूल कटरा मेदनीगंज में धीरज उपाध्याय, न्यू एंजेल्स कॉलेज में इंद्रभान सिंह, कालाकांकर राजभवन परिसर में कृष्ण कुमार व राजेश, चिलबिला महुली वृद्धाश्रम में संत जी, जिला कारागार परिसर में संतोष मिश्रा, दिनेश सिंह व हलधर सिंह, जिला मेडिकल कॉलेज परिसर में दुगार्शंकर, सांगीपुर ब्लाक परिसर में आलोक एवं प्रमोद, संडवा चंद्रिका ब्लॉक परिसर में गिरजा शंकर, तहसील कुंडा में राकेश प्रधान, डॉ अनुराग, जगबीर, धर्मेंद्र, रंजीत जबकि लालगंज में जयप्रकाश व बृजेंद्र पांडे जवाहर नवोदय विद्यालय परिसर में तपस कुमार विश्वास, रानीगंज तहसील के स्वामी करपात्री इंटर कॉलेज में पतंजलि प्रभारी दीपक, युवा प्रभारी मितेंद्र, दिनेश व पट्टी तहसील में भारत स्वाभिमान प्रभारी मनोज जबकि कटरा गुलाब सिंह गोपी गार्डन में योग शिक्षक राजेंद्र अग्रहरि, अरुणेश अग्रहरी, वरुणेश अग्रहरि, उमेश अग्रहरि सहित अन्य योग शिक्षकों ने अपनी सेवा देकर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को भव्य बनाने में अपना भरपूर योगदान दिया।

1375 कैडेटों ने योगा में लिया भाग

अखंड भारत संदेश

योगा केन्द्र पर योगा करते एनसीसी कैडेट।

प्रतापगढ़। 18 यूपी बटालियन एनसीसी के तत्वावधान में योग दिवस के मौके पर जिले में 19 विद्यालयों हेतु सात योगा केन्द्रों पर कैडेटों को योगा कराया गया। इस तरह कुल 1375 कैडेटों ने योगा में भाग लिया। कैडेटों के योगाभ्यास के बाद अल्पाहार का वितरण किया गया। इस मौके पर बटालियन के अधिकारी लक्ष्मी श्रीनिवासन ने स्टाफ के साथ योगा किया। कार्यक्रम में ले0 उमेश सिंह, मेजर राजीव श्रीवास्तव, दिग्विजय सिंह यादव, सुरेश कुमार मिश्रा, शिव भूषण गुप्ता, राकेश कुमार तिवारी, विनोद सिंह आदि मौजूद रहे। उधर सरस्वती शिशु मंदिर चिलबिला परिसर में बच्चों को योग प्रशिक्षक विजय, श्याम किशोर व राजा जायसवाल द्वारा योगा कराया गया। प्रधानाचार्य दिग्विजय नाथ पाण्डेय ने सभी के प्रति आभार जताया। आभार बृजेश तिवारी ने किया।

न्यू एंजिल्स में धूमधाम से मना योग दिवस

अखंड भारत संदेश

न्यू एंजेल्स सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में योगा करते छात्र-छात्राए।

प्रतापगढ़। न्यू एंजेल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में प्रातः साढे. छह बजे से साढे. सात बजे तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। पतंजलि योग गुरु इन्द्रभान और कुमारी ज्योति द्वारा छात्र-छात्राओं, अध्यापकों एवं अभिभावकों आदि को विद्यालय प्रांगण में योगाभ्यास कराया गया। प्रबन्धक डॉ शाहिदा, प्रधानाचार्य बी के सोनी, आर के सिंह, अनिल मौर्य, प्रवीन सिंह, रमेश यादव, दुर्गेश ओझा, सचिन शुक्ला, राहुल तिवारी, रेखा, पूनम, शशि, सीमा, माधुरी, सुनीता, शिखा, मधु, शकुन्तला, वर्तिका आदि ने इस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। योग गुरु इन्द्रभान ने सबको शपथ ग्रहण कराया। अंत में प्रबन्धिका ने कार्यक्रम का समापन करते हुए कहा हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है और योगाभ्यास उसकी कुंजी है।

बी एल सुधिता इंटरनेशनल स्कूल में कराया गया योग अभ्यास

अखंड भारत संदेश

बीएल सुधिता इंटरनेशनल स्कूल में योगा करते बच्चे।

बिहारगंज, प्रतापगढ़। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर मंगलवार को बी एल सुधिता इंटरनेशनल स्कूल विश्वनाथगंज में मुख्य योग शिक्षिका गुंजन मिश्रा के दिशा निर्देशन में कोरोना की सुरक्षा मानकों सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क एवं सेनेटाइजर की व्यवस्था के साथ सात योग साधकों के साथ एक घण्टे का योगाभ्यास किया गया। प्रवीण योगी ने बताया कि प्राणायाम के साथ कुम्भक का अभ्यास रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में बहुत उपयोगी है। स्कूल के प्रबंधक राम जी लाल जायसवाल ने बताया कि योग एकता की एक शक्ति के रूप में उभरा है। प्रधानाचार्य मोहित पांडे ने दुनिया को योग की आवश्यकता पहले के मुकाबले कहीं अधिक महसूस हो रही है। कार्यक्रम में गुंजन मिश्रा, ओपी तिवारी, एमपी सिंह, रश्मि, अंशी, अंशुमान, हिमांशु आदि लोग मौजूद रहे।

गुरु जी भटके स्कूल का रास्ता, बच्चों का निवाला लेकर पहुंचे राइस मिल

ग्रामीणों की शिकायत पर सरकारी राशन पकड़ी थी पुलिस

अखंड भारत संदेश

एबीएसए सफाई पेशकर छुड़वाया खाद्यान्न

लालगंज, प्रतापगढ़। गुरू जी स्कूल का ही रास्ता भटक गए और नौनिहालों का निवाला लेकर राइस मिल पर पहुँच गए। ताक लगाए ग्रामीणों ने पीछा करके सरकारी राशन भरा पिकप को पकड़ कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया। बचाव पक्ष में उतरे एबीएसए ने इसे मानवीय भूल बताकर विना कार्रवाई के ही पुलिस से मुक्त करा कर खाद्यान्न को विद्यालय भेजवा दिया।

स्थानीय विकास खंड सांगीपुर के प्राथमिक विद्यालय अठेहा के प्रधानाध्याप सिद्धनाथ तिवारी सोमवार को स्कूल का खाद्यान्न लेने सुबह लगभग साढे नौ बजे कोटेदार रूवी बेगम के यहां पहुँच गए। गुरू जी पिकप पर सरकारी राशन बीस कुंतल चावल, व तेरह कुन्टल गेहूँ को लेकर विद्यालय के लिए निकल पड़े।

अब राशन से लदा पिकप विद्यालय जाने की जगह वह लगभग तीन किमी दूर क्षेत्र स्थित एक राइसमील पर पहुंच गया। ग्रामीणों की माने तो वह लोग गुरु जी की आदत से परिचित थे। ग्रामीण सरकारी राशन ले जा रहे वाहन पर नजर लगाए हुए थे। वाहन जैसे ही राइस मिल पर पहुंच कर खड़ा हुआ कि पीछे लगे ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। आरोप है कि पुलिस को देखते ही चालक व शिक्षक भाग गये और पुलिस वाहन समेत सरकारी राशन को थाने उठा लाई। मामले की सूचना एबीएसए व खाद्यान्न विभग को दी गई। मंगलवार को थाने पहुंचे एबीएसए साहब ने गुरू जी पर कार्रवाई की बजाय सफाई पेश करने लगे और इसे महज भूल बस रास्ता भटक जाने की बात कह कर इसे एक संयोग मान बैठे। इधर पुलिस भी एबीएसए की दलील को सही मानकर पकड़े गए सरकारी राशन को छोड़ दिया। इस संबंध में एबीएसए जंगी लाल का कहना है कि वाहन चालक रास्ता भूल कर विद्यालय की जगह अन्य जगह चला गया था। राशन बेचने का कोई उद्देश्य नहीं था।

बच्चों की उपस्थिति शून्य होने पर बीएसए ने रोका वेतन

प्रतापगढ़। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्राथमिक विद्यालय मंशा राम का पूरा विकास खान गौरा का अपरान्ह 12.07 बजे निरिक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति शून्य पाई गई। विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक दिनेश कुमार पटेल एवं शिवेंद्र कुमार को विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति शून्य पाये जाने, आधार नामांकन एवं अभिभावकों से सम्पर्क न करने, मध्यान भोजन पंजिका और बच्चों की उपस्थिति अंकित न करने पर इनके वेतन आहरण पर रोक लगाते हुए स्पस्टीकरण मांगा गया। दूसरे विद्यालय शाहपुर मे बच्चों के आधार एवं अन्य विभागीय कार्यों को समयानुसार पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया।

पांच बाल श्रमिकों को कराया गया मुक्त

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मंगलवार को बाल श्रम की बढ़ती हुई समस्या को देखते हुए पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देश पर संयुक्त टीम का गठन करके बचपन बचाओ आंदोलन के अंतर्गत संयुक्त पुलिस टीम का गठन किया गया, जिसमें अभियान चलाकर कई बाजारों में काम कर रहे हैं। बाल श्रमिकों को मुक्त कराया गया।

संयुक्त पुलिस टीम में श्रम विभाग, चाइल्ड लाइन 1098, एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट पुलिस के संयुक्त अभियान में विभिन्न क्षेत्रों में सघन रुप से बालश्रम उन्मूलन अभियान का संचालन किया गया, जिसमें जनपद प्रतापगढ़ के पट्टी तहसील मुख्यालय सहित करैला, मगरौरा एंव मदाफरपुर में कई जगह बाल श्रमिक संभावित प्रतिष्ठनो, आटो गैरेज, ढाबो पर छापेमारी कर कुल पांच बाल श्रमिको को मुक्त

विभिन्न बाजारों में अभियान चलाकर की गई छापेमारी

कराते हुए नियोजकों को नोटिस दिया गया। इस अभियान के दौरान विशेष किशोर पुलिस इकाई से एचटीयू प्रभारी चंचल सिंह, जिला श्रम प्रवर्तन अधिकारी डा. महेंद्र प्रताप सिंह, कांस्टेबल जितेंद्र सिसोदिया व अन्य लोग मौजूद रहे। चाइल्डलाइन 1098 से हकीम अंसारी से बात करने पर उन्होंने बताया कि बाल श्रमिकों की बढ़ती हुई तादाद को शासन प्रशासन ने संज्ञान में लिया उसके बाद संयुक्त टीम का गठन करके पट्टी तहसील क्षेत्र के विभिन्न बाजारों में होटल तथा विभिन्न प्रतिष्ठानों में काम करने वाले बाल श्रमिकों के बारे में जानकारी इकट्ठा करके अवैध रूप से काम करने वाले 5 बच्चों को मुक्त कराया गया। श्रम प्रवर्तन अधिकारी महेंद्र प्रताप ने बताया कि भारतीय संविधान में बच्चों के लिए अनिवार्य तथा निशुल्क शिक्षा तथा स्वास्थ्य की व्यवस्था की गई है लेकिन बच्चों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझने के कारण उन्हें मजबूरी बस काम कराया जाता है जिसके लिए अभियान चलाकर उन्हें मुक्त कराया गया।

समाधी तोड़ने पर पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

परियावां। नवाबगंज थाना क्षेत्र के कोथरिया गांव में 3 जून को राम प्यारे पटेल पुत्र स्व0 मुन्ना पटेल के माता पिता की पक्की बनी समाधि को परिवार के राजकुमार, रामकुमार, शिवकुमार पुत्र गण दुखी पटेल ने क्षतिग्रस्त कर दिया था। पुलिस ने मामले को गम्भीरता से लेते हुए पीडित रामप्यारे पटेल की तहरीर पर 20 जून 2022 को तीनों आरोपी राजकुमार, रामकुमार व शिवकुमार पुत्र गण दुखी पटेल के खिलाफ आईपीसी की धारा 427,504,व 506 के तहत मुकदमा दर्ज किया।

योग है सुखमय जीवन का आधारः प्राचार्य

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मंगलवार को पट्टी नगर स्थित स्नातकोत्तर महाविद्यालय तथा ब्लॉक सभागार पट्टी में धूमधाम से आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर छात्र-छात्राओं तथा मौजूद लोगों ने योगाभ्यास किया। मौजूद योग प्रशिक्षकों ने योग के बारीकियों के संबंध में बताया तो वही आयोजको ने योग के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। मंगलवार को सुबह 6 बजे स्नातकोत्तर महाविद्यालय सभागार में प्राचार्य अखिलेश कुमार पांडे ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य रूप से नगर अध्यक्ष खेदनलाल जयसवाल, पट्टी विकास खंड अधिकारी रामप्रसाद, भाजपा जिला उपाध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव पूर्व नगर अध्यक्ष रामचरित्र वर्मा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

जिला शासकीय अधिवक्ताओं को किया गया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला अभियोजन कार्यालय प्रतापगढ़ पर योगेश कुमार शर्मा जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी व विक्रम सिंह अपर जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी प्रतापगढ़ को उनके द्वारा प्रॉसीक्यूशन पोर्टल पर उत्कृष्ट कार्य के लिए उत्तर प्रदेश शासन की ओर से सरकार का पक्ष मजबूती से रखने के लिए अभियोजन निदेशालय उत्तर प्रदेश आशुतोष पांडे अपर पुलिस महानिदेशक अभियोजन उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन व उच्च स्तरीय कार्य क्षमता प्रदर्शन के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस मौके पर विशेष शासकीय अधिवक्ता देवेंद्र कुमार गुप्त महेश गुप्ता कृष्ण कुमार दुबे अजय पांडे राकेश प्रताप सिंह गौरव सिंह अजीत ओझा रवि मिश्रा अमित चैरसिया हवलदार यादव देवेश चंद्र त्रिपाठी रविंद्र बहादुर सिंह इंद्र कांत पांडे काशीनाथ तिवारी अनिल मिश्रा अंबिकेश मणि तिवारी कृष्ण चंद्र पांडे सुरेश बहादुर सिंह अशोक त्रिपाठी देवेंद्र त्रिपाठी निर्भय सिंह विनोद पाठक आदि समस्त शासकीय अधिवक्ता व अभियोजन अधिकारी ने इस उत्कृष्ट सम्मान के लिए एक दूसरे को बधाइयां दी।

एंटी करप्शन टीम ने लेखपाल को घूस लेते पकड़ा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज तहसील के लेखपाल संजय यादव को एंटी करप्शन टीम ने पांच हजार रुपये घूस लेते पकड़ लिया। एंटी करप्शन टीम ने लेखपाल को हिरासत में लेकर शहर कोतवाली ले आई है जहां उससे पूछताछ की जा रही है। बताया जाता है कि उक्त लेखपाल पहले भी घूस लेने के मामले में निलम्बित किया जा चुका है। इस समय वह लालगंज तहसील के राहाटीकर, मुस्तफाबाद व मंगापुर क्षेत्र का कार्य देख रहा था। पट्टा दिलाने के मामले में एक व्यक्ति से पांच हजार रुपये की मांग की थी जिसकी शिकायत एंटी करप्शन टीम को की गई, जिसमें आज एंटी करप्शन टीम ने उसे रंगेहाथ पकड़ लिया।

ग्रामीणांचलों में मनाया गया 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

कालेज में योगा करते प्राचार्य व शिक्षकगण।

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मंगलवार को ग्रामीणांचल क्षेत्र में सरकारी गैर सरकारी संस्थाओ में योगाभ्यास करके मनाया गया। जिसमें महामना मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाकांकर में प्राचार्य शिवम श्रीवास्तव, एनसीसी अधिकारी प्रूफ शिव भूषण, एनओ शमशाद अहमद, उच्च प्राथमिक विद्यालय शेख मोहम्मदपुर में योग प्रशिक्षक आदित्य प्रकाश त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय सोनामऊ मुरस्सापुर में ग्राम प्रधान सुरेश यादव व प्रधानाध्यापक संजय शुक्ला, ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर परिसर में अधिकारियों कर्मचारियों ने ग्राम प्रधान के साथ, कालाकांकर में ग्राम प्रधान कुँवर मनीष कुमार सिंह ने वन रेंजर कुंडा पतिराज रावत, मेन प्रशिक्षक रामपूजन प्रजापति, अवध बिहारी, विजय वन रक्षक, दिनेश कुमार, रंजीत कुमार, विद्युत उप केंद्र कालाकांकर में कर्मचारियों में पावर हाउस परिसर में योगाभ्यास किया। उधर दिव्य ज्योति सेवा संस्थान, सक्षम फाउण्डेशन एवं स्वामी विवेकानन्द समाज कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में योग शिविर का आयोजन राजा दिनेश सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र ऐंठू अवधेश पुरम परिसर में आयोजित किया गया। योग शिविर का उद्घाटन सक्षम फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह एवं स्वामी विवेकानन्द समाज कल्याण समिति के सचिव डॉ विष्णु कुमार पाण्डेय ने संयुक्त रूप से किया।

गुड मार्निंग योग क्लब ने किया योगा

अखंड भारत संदेश

अटल वाटिका बाबागंज पार्क में योगा करते लोग।

प्रतापगढ़। गुड मॉर्निंग योग क्लब द्वारा अटल वाटिका बाबागंज पार्क में योग किया गया। इस अवसर पर योग के विषय में सभी को जानकारी दी गई। इस अवसर पर पूर्व विधायक व पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष हरिप्रताप सिंह को विशिष्ठ अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। और साथ में वरिष्ठ योग प्रशिक्षक आर एन पाल, यशपाल सिंह के साथ योग प्रशिक्षक राजेश तिवारी, संदीप रावत के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम को कराया गया। इस अवसर पर हरिप्रताप सिंह ने सभी को योग के विषय जागृत करने और स्वस्थ रहने के गुण भी सीखने का कार्य निशुल्क करने में और पार्क की सुंदरता बनाए रखने गुड मॉर्निंग योग क्लब के सभी सदस्यों का धन्यवाद भी किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से गुड मॉर्निंग योग क्लब के अध्यक्ष कैलाश श्रीवास्तव, सदस्य प्रमोद केसरवानी, जय प्रकाश खंडेलवाल, राजू केसवानी, मनीष चैरसिया, प्रदीप खंडेलवाल, सतीश खंडेलवाल, मनोज केसरवानी आदि मौजूद रहे।

जहरीले जंतु के काटने से मासूम की मौत, घर मे मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। घर के अंदर सामान लेने गए एक मासूम को एक जहरीले जंतु ने डस लिया जिससे उसकी हालत खराब हो गई। आनन-फानन में परिजन उसे झाड़-फूंक के लिए ले गए जहां पर आराम ना मिलने पर उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मासूम की मौत के बाद परिजनों में कोहराम मच गया।

बाभनपुर गांव का रहने वाला दीपक वर्मा (14) पुत्र हरिश्चन्द्र कक्षा नौंवी का छात्र था। मंगलवार की दोपहर लगभग 2 बजे वह घर के अंदर कोई सामान ढूंढ रहा था तभी किसी जहरीले जंतु ने उसे डस लिया जिससे उसकी हालत खराब हो गई।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बाभनपुर गांव का रहने वाला दीपक वर्मा (14) पुत्र हरिश्चन्द्र कक्षा नौंवी का छात्र था। मंगलवार की दोपहर लगभग 2 बजे वह घर के अंदर कोई सामान ढूंढ रहा था तभी किसी जहरीले जंतु ने उसे डस लिया जिससे उसकी हालत खराब हो गई। हालात खराब होने पर परिजनों ने तुरंत झाड़-फूंक करने वाले के पास ले गए लेकिन कोई आराम नहीं मिला तो उसे पट्टी नगर स्थित सेठ पन्नालाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उसके मौत के बाद परिजनों में हाहाकार मच गया। बता दें कि कक्षा 9 में पढ़ने वाला दीपक अपने दो बहनों तथा दो भाइयों में सबसे बड़ा था उसका छोटा भाई अंश कक्षा 2 का छात्र है तो वही उसकी दो बहने रिमझिम व पल्लवी अपने भाई की मौत के बाद रो रो कर बुरा हाल है। पिता हरिश्चंद्र अपने बेटे को याद करके बदहवास हो जा रहा है।

पांच दुकानों की शटर का ताला तोड़कर एक लाख रुपये की उपकरण चोरी

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज पुलिस को चुनौती देते हुए सोमवार की बीती रात अज्ञात चोरों ने थाना क्षेत्र के अंसारगंज बाजार में महेंद्र चाउमिन, महेंद्र मौर्या, यादव मेडिकल क्लीनिक की दुकान का ताला तोड़कर चोरी करने की नियति से अंदर घुसे लेकिन नकदी न मिलने से खाली हाथ वापस लौटकर ऋषभ पांडे व निसार अहमद की बीओबी फ्रेंचाइजी की दुकान की शटर का ताला तोड़कर लाखों रुपये के कीमती उपकरण को चोरो ने उड़ा दिया। सुबह दुकान का ताला टूटा पड़ा देख लोगो मे हड़कम्प मच गया। घटना की जानकारी ग्रामीणों ने फोन पर फ्रेंचाइजी ऋषभ पांडे व निसार अहमद को दी घटना की खबर मिलते ही दोनों फ्रेंचाइजी संचालक ऋषभ पांडे व निसार अहमद मौके पर पहुंचे।

युवक ने जहरीला पदार्थ निगलकर मौत को लगाया गले, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पत्नी से फोन पर हुई कहासुनी को लेकर मानसिक अवसाद के चलते युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली। युवक की सांसे थमने पर परिजनों मे कोहराम मच गया। लालगंज कोतवाली के मोठिन के देवरी निवासी मूलचंद्र गौतम का पुत्र संदीप गौतम 23 ने मंगलवार को पूर्वान्ह ग्यारह बजे घर में जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत बिगडने पर परिजन आननफानन मे उसे लालगंज ट्रामा सेंटर ले आये। यहां चिकित्सकों ने संदीप को मृत घोषित कर दिया। संदीप की मौत की जानकारी होते ही ट्रामा सेंटर मे मौजूद परिजनों मे कोहराम मच गया। संदीप के परिजनों के मुताबिक उसका विवाह बीते नवंबर माह में कुण्डा थाना के भदरी गांव मे शालू के साथ हुआ था। पति-पत्नी प्रायः विवाद किया करते थे। परिजनों ने बताया कि मंगलवार को भी संदीप का फोन पर सुबह पत्नी से विवाद हुआ। परिजन खेतीबारी के सिलसिले में बाहर गये थे। इस बीच अचानक घर के अंदर युवक ने जहरीला पदार्थ खा लिया। युवक जैसे ही घर के बाहर परेशान स्थिति मे निकला पडोसी की औरतों ने उसकी हालत देख परिजनों को सूचित किया। पुलिस ने मृतक का शव पंचनामा कर पीएम के लिए भेजवाया है। पुलिस के मुताबिक अभी संदीप की मौत को लेकर कोई तहरीर नही मिली है। तहरीर मिलने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

दहेज हत्या का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चालेय जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक व क्षेत्राधिकारी सिराथू के कुशल पर्यवेक्षण में थाना सैनी पुलिस बल द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर ग्राम ख्वाचकीमई से अभियुक्तगण अनूप कुमार महेन्द्र कुमार पुत्रगण राजाराम मौर्य व रूचि देवी पुत्री राजाराम मौर्य निवासीगण ख्वाचकीमई थाना सैनी को समय गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान अन्तर्गत थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सुनील कुमार शुक्ला उर्फ राजू उर्फ राजुल पुत्र अरूण कुमार शुक्ला उर्फ लल्लू शुक्ला निवासी रायपुर थाना महेवघाट को शाहपुर पावर हाउस के पास बहद ग्राम शाहपुर से एक अदद अवैध तमंचा 12 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 12 बोर के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

योग स्वयं को जानने एवं पहचानने की प्रक्रिया है : नोडल अधिकारी

जनपद के सभी विकास खण्डों, नगर पालिका नगर पंचायतो एवं थानों सहित अन्य स्थानो पर योगाभ्यास कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नोडल अधिकारी प्रमुख सचिव ने जनपद स्तर पर स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित योगाभ्यास का दीप प्रज्ज्वलन कर किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जनपद के सभी विकास खण्डों नगर पालिका नगर पंचायतो सभी थानो शिक्षण संस्थानों सहित अन्य स्थानो पर योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया नोडल अधिकारी प्रमुख सचिव सुभाष चन्द्र शर्मा ने जनपद स्तर पर स्पोर्ट्स स्टेडियम टेंवा में आयोजित योगाभ्यास कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मैसूर (कर्नाटक) में आयोजित योगाभ्यास कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया एवं उपस्थित लोगों ने प्रधानमंत्री के सम्बोधन को सुना नोडल अधिकारी प्रमुख सचिव ने योगाभ्यास कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सभी लोगों को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि 14 जून 2022 से 21 जून 2022 तक अमृत योग सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्रायें ग्राम पंचायतों में गणमान्य व्यक्तियों सहित आदि लोगों ने प्रतिभाग किया हैं उन्होंने कहा कि योग स्वयं को जानने एवं पहचानने की प्रक्रिया है एवं योग स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से पूरे विश्व के लोगों को आपस में जोड़ दिया गया है उन्होंने कहा कि योग हमारे समाज की परम्परागत प्रक्रिया है तथा योग आध्यात्मिक दृष्टि से भी परमपिता परमात्मा से जुड़ने की प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है तथा किसी भी क्षेत्र में ध्यानपूर्वक कार्य करने में भी सहायता करता हैं। उन्होंने सभी लोगों से अपील की कि योग को अपने दिनचर्या में शामिल कर अपने आपको स्वस्थ्य रखे।

जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने कहा कि योगाभ्यास का कार्यक्रम जनपद के सभी विकास खण्डों नगर पालिका नगर पंचायतो एवं सभी थानो शिक्षण संस्थानों सहित अन्य स्थानो पर आयोजित किया जा रहा है उन्होंने जनपदवासियों से प्रतिदिन योग करने का आवाह्न किया उन्होंने कहा कि हम सभी लोग अगर योग को अपने दिनचर्या में शामिल कर लेते हैं तो यही योग दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी। पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा ने सभी लोगों से कहा कि योग को अपने दिनचर्या का अंग बनाकर प्रतिदिन योग करें योग करने से अनेक बीमारियों में लाभ मिलता है तथा व्यक्ति भी स्वस्थ महसूस करता है इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी शशिकान्त त्रिपाठी जिला क्रीडा अधिकारी रूस्तम खॉ एवं क्षेत्रीय आयुर्वेदिक व यूनानी अधिकारी डॉ0 अनीता सिंह सहित अन्य अधिकारीगण एवं जनपद के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें।

स्टेडियम में योग करते जिले की जनता और अधिकारी

निरंकुश बीडीओ से त्रस्त यूनियन करेगा धरना प्रदर्शन घेराव

कौशाम्बी। खंड विकास अधिकारी की निरंकुशता से त्रस्त भारतीय किसान यूनियन के नेता धरना प्रदर्शन घेराव करने के लिए विवश है उन्होंने खंड विकास अधिकारी को चेतावनी दी है कि वह अपने कार्यों में लापरवाही बंद कर दे वरना उनके खिलाफ आवाज मुखर की जाएगी भारतीय किसान यूनियन (भानु) संगठन के जिलाध्यक्ष संजय सिंह यादव द्वारा दनांक 13 जून 2022 को उपजिलाधिकारी चायल और विकास खंड अधिकारी नेवादा को ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया गया था कि ग्राम बल्हेपुर में दबंग द्वारा सरकारी हैंड पंप में मोटर डाल कब्जा कर लिया है जिसके कारण आम जनता को पेय जल की संकट से जूझना पड़ता है जिलाध्यक्ष ने कहा एक हफ्ता हो गए लेकिन अभी तक विकास खंड अधिकारी अपना कार्य नही कर पाए और यह बी0 डी ओ0 नेवादा की लापरवाही को सिद्ध करता है।संजय सिंह यादव ने कहा कि जो अधिकारी किसानों के हित मे कार्य नही पकरेगा ऐसे अधिकारी को रहने का कोई हक नही है दबंगो को बढ़ावा देकर जो जंगल राज कायम करना चाहता है।और सरकार की मंशा को ध्वस्त करने में लगे है उन्हें बेनकाब किया जाएगा संजय सिंह यादव ने कहा किसानों की हक की लड़ाई के लिए भ0 कि0 यू0 विकास खंड नेवादा का घेराव करेगा।

कार्य में लापरवाही बरतने पर प्रतिकूल प्रविष्टि देने के डीएम ने दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने किया कलेक्ट्रेट का निरीक्षण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने अतिरिक्त मजिस्ट्रेट राजेश श्रीवास्तव के साथ आज कलेक्ट्रेट का निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान रिकार्ड रूम में तैनात प्रबन्धक नकल नवीस क्षेत्र चायल फहीम हसन द्वारा कार्य में लापरवाही बरतने पर डीएम ने नाराजगी प्रकट करते हुए प्रतिकूल प्रविष्टि देने के निर्देश दियें उन्होंने कलेक्ट्रेट के अधिकारियों कर्मचारियों को सुव्यवस्थित तरीके से अभिलेखों का रख-रखाव करने तथा कार्यालय को साफ-सुथरा रखने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने सभी अधिकारियों कर्मचारियों को समय से कार्यालय आने व शासकीय कार्यो को निष्पादित करने के निर्देश दिये उन्होंने नाजिर कलेक्ट्रेट को निष्प्रयोज्य वस्तुओं की नीलामी निस्तारण कराने के साथ ही टूटे हुए फर्नीचर आदि को ठीक कराने के निर्देश दिये उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर की बेहतर साफ-सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराने के भी निर्देश देते हुए कहा कि नियमित अन्तराल पर कलेक्ट्रेट परिसर की साफ-सफाई सुनिश्चित करायी जाय। उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर में प्रभागीय वनाधिकारी के माध्यम से पौधारोपण कराने के भी निर्देश दियें।

कलेक्ट्रेट का निरीक्षण करते डीएम

सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेलते आठ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा आठ अभियुक्तों अजहर पुत्र मुबारक अली निवासी अफजलपुर सातो जुबैर पुत्र अली मुर्तजा निवासी घोसियाना समर बहादुर यादव पुत्र बंशीलाल निवासी रसूलपुर ताज मल्लाहन रसीद अहमद पुत्र हनीफ निवासी गिरधरपुर गढ़ी इमाम उल्ला पुत्र नूर उल्ला निवासी गिरधरपुर गढ़ी दयाराम पुत्र सूरज पाल निवासी चूहापीरन मजरा सौरई बुजुर्ग बाके लाल पुत्र श्याम लाल निवासी चूहापीरन मजरा सौरई बुजुर्ग मो० याकूब पुत्र इन्बेहसन निवासी अफजलपुर सातो घोसियाना थाना कड़ाधाम को सार्वजनिक स्थान पर हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये गिरफ्तार कर इनके कब्जे से 52 अदद तास के पत्ते व 3750 रुपए मालफड तथा जमातालसी के दौरान 1020 रुपए बरामद कर कार्यवाही की गई।

7 वर्षों पूर्व दंपत्ति से लूट के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी पर उनके कब्जे से सोने चांदी के जेवर और नगदी पुलिस कर चुकी है बरामद

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र में 7 वर्षों पूर्व दंपत्ति से लूट के मामले में वांछित एक अभियुक्त पुलिस को हमेशा चकमा देकर फरार होता रहा पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करने के बाद न्यायालय में आरोप पत्र भी पेश कर दिया था आरोपी लगातार पुलिस को चकमा दे रहा था लूट के मामले में शामिल अन्य आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है जिन से सोने-चांदी के जेवर और नगदी भी पुलिस ने बरामद किया था चौकी पुलिस अझुवा के इंचार्ज गौरव त्रिवेदी ने मंगलवार को एक आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अझुवा कस्बे के छोटकू प्रजापति पुत्र सुंदर लाल प्रजापति और उनकी पत्नी के साथ 7 वर्षों पूर्व मारपीट करने के बाद आरोपियों ने सोने चांदी के जेवर और नगदी लूट लिया था जिस पर थाना सैनी मे मुङ्गअङ्गसङ्ग 364/15 धारा 392,411,120इ,स्रू के तहत पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया था अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर पुलिस ने नगदी जेवर बरामद कर लिया था लेकिन लूट में शामिल एक आरोपी लगातार पुलिस को चकमा देकर फरार हो रहा था इसी बीच पुलिस ने विवेचना के दौरान आरोपी के विरुद्ध आरोप पत्र भी न्यायालय में दाखिल कर दिया वांछित अभियुक्त राम मणि पांडेय पुत्र बालकृष्ण पांडेय निवासी कस्बा व थाना धाता जिला फतेहपुर को पुलिस चौकी अझुवा प्रभारी ने गिरफ्तार कर लिया है पकड़े गए आरोपी के विरुद्ध विधिक कार्यवाही के पश्चात पुलिस ने न्यायालय भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

जनपद न्यायालय में भी आयोजित हुआ योग दिवस

कौशांबी। योग दिवस के अवसर पर जनपद न्यायालय में भी योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहां उपस्थित लोगों ने योग करते हुए संदेश दिया कि स्वस्थ रहने के लिए योग बहुत जरूरी है इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि व्यक्ति प्रतिदिन 30 मिनट तक योग करके अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त रख सकता है अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में जनपद न्यायालय कौशाम्बी में तमाम लोग सुबह 7:00 बजे योग स्थल पर पहुंच गए और योग किया योग दिवस के अवसर पर उपस्थित लोगों ने योग के लाभ बताएं योग दिवस के अवसर पर परिवार न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश योगेश कुमार एडीजे नीरज उपाध्याय एडीजे बीना नारायण सीजेएम सुशील कुमारी बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष नर नारायण मिश्रा वर्तमान अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी महामंत्री तुषार तिवारी सहित तमाम अधिवक्ता भी योग कार्यक्रम में शामिल हुए।

धर्मा देवी इंटर कॉलेज में आयोजित हुआ योग दिवस

कौशाम्बी। 8वें अन्तरराष्ट्रिय योग दिवस के अवसर पर धर्मा देवी इंटर कॉलेज में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार ने योग करने के निर्देश दिए थे जिसके तत्वधान में नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा अधिकारी जागृति पाण्डेय के निर्देशन में विकासखंड कड़ा के ग्राम पंचायत कानेमई में योग दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया जहां स्कूल के छात्र शिक्षक और प्रबंधक ने योग किया। राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक दीपेन्द्र अग्रहरी एवम विनय पाण्डेय ने योगाचार्य वरुण प्रकाश जोशी के मार्गदर्शन में प्रधान प्रतिनिधि एवं युवा मंडल के सक्रिय सदस्यों के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत भव्य योग कार्यक्रम का आयोजन करते हुए लोगों को योग के प्रति जागरूक किया और प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट योग करने का आग्रह किया आयोजन स्थल धर्मा देवी इंटर कॉलेज में डॉ राम किरण त्रिपाठी प्रधानाचार्य, रामसुभग त्रिपाठी, प्रधान प्रतिनिधि कानेमई शिवकुमार रामहित त्रिपाठी सहित लगभग 400 ग्रामीण व क्षेत्र के युवक एवं युवतियों छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया।

पश्चिम शरीरा में हुआ योग दिवस का आयोजन

कौशाम्बी। नगर पंचायत पश्चिम सरीरा द्वारा 08वें 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' पर कार्यक्रम आयोजित किया गया योग दिवस में क्षेत्र के तमाम लोग शामिल हुए और शरीर को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से योय किया जिला महामंत्री मोनू त्रिपाठी अधिषाशी अधिकारी सुनील सिंह वा अनेक कार्यकर्ता के साथ योग कर 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' का दिया संदेश हिंदू युवा वाहिनी जिला महामंत्री मोनू त्रिपाठी व नगर अधिषासी अधिकारी सुनील सिंह ने 8वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा के दंगल मैदान मे श्रीकृष्ण पांडेय,अवनीश द्विवेदी,दिलीप कुमार पांडेय,कल्लू मिश्रा ,जनार्दन गर्ग आदि के साथ योग किया और एक यह संदेश दिया कि यदि आपका शरीर स्वस्थ है तो धर्म के सभी साधन स्वयं क्रमवार सफल होते जाएंगे।

योग दिवस में शामिल हुए अ.भा. विद्यार्थी परिषद के छात्र

कौशाम्बी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद काशी प्रांत के द्वारा कौशाम्बी जिले के सभी नगरों में अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस मनाया गया कस्तूरबा गांधी बालिका इंटर कॉलेज भरवारी कौशाम्बी में योग गुरु ने योग कराते हुए कहा की योग हमें प्रतिदिन करना चाहिए इससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है इस अवसर पर रिचा पाण्डेय प्रांत क्रीड़ा सह संयोजक अभाविप आशीष जयसवाल पूर्व नगर अध्यक्ष भरवारी मोहित कुमार सोनी समर उपाध्याय विद्यालय की स्पोर्ट शिक्षिका संगीता आस्था भावना आराध्या छात्राओं सहित अन्य विद्यालय के लोग उपस्थित रहे रिचा पाण्डेय प्रांत क्रीड़ा सह संयोजक अभाविप काशी प्रांत ने कहा कि योगा हमें प्रतिदिन करना चाहिए इससे शारीरिक के साथ साथ मानसिक रूप से भी मनुष्य स्वस्थ्य होता है

वृद्ध जनों ने भी किया मानवता के लिए योग

कौशाम्बी। योग दिवस के अवसर पर संपूर्ण जिले में जगह-जगह योग कार्यक्रम आयोजित किए गए जहां नौजवानों ने योग कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया इसी क्रम में वृद्धजन भी योग कार्यक्रम में पीछे नहीं रहे और वृद्ध जनों ने भी योग में शामिल होकर मानवता का संदेश दिया है मंझनपुर मुख्यालय के ओसा स्थित वृद्धजन आश्रम में संचालक आलोक राय के निर्देश पर वृद्ध जन योग दिवस के अवसर पर सुबह से ही योग करने के लिए उपस्थित हो गए और वृद्ध जनों ने भी योग कर स्वस्थ रहने का संदेश दिया है अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर वृद्धाश्रम परिसर में योगभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया पूरे जिले में नौजवान लोगों द्वारा योग कार्यक्रम में शामिल होने की चर्चा अधिक रही लेकिन वृद्ध आश्रम में वृद्ध जनों ने योग करके यह साबित किया कि वह भी अभी जवान है।

कोर्ट के आदेश पर कराए गए अवैध असलहे नष्ट

कौशांबी। विभिन्न आरोपियों से बरामद अवैध असलहे को कोर्ट के आदेश पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में बुलडोजर चलाकर नष्ट कराए गए हैं 160 अवैध असलहों पर बुलडोजर चलाकर मंगलवार को नष्ट कराया गया आरोपियों से बरामद मालखाने में जमा अवैध असलहों को कोर्ट के आदेश पर नष्ट कराया गया है विभिन्न थानों में अवैध असलहे पकड़े गए थे कई दर्जन अवैध कारतूसों को भी नष्ट कराया गया एसपी, एएसपी एवं एसडीएम की देखरेख में तमंचे नष्ट कराए गए।

योग से स्वस्थ मन एवं शरीर के साथ प्राप्त किए जा सकते है अनेक आध्यात्मिक लाभ : प्राचार्य

महामाया स्कूल में योग करते शिक्षक और छात्र

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय द्वारा आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2022) के अवसर पर प्राचार्य डॉ0 विनय कुमार सिंह प्राध्यापकों कर्मचारियों एवं छात्र -छात्राओं ने योगाभ्यास किया। योग सत्र में महाविद्यालय के प्राध्यापकों कर्मचारियों एवं छात्र -छात्राओं ने विशिष्ट रुचि दिखाते हुये उत्साहपूर्वक भाग लिया। योग सत्र के पश्चात, योग की महत्ता को समझते हुये महाविद्यालय के प्राध्यापकों , कर्मचारियों एवं छात्र -छात्राओं द्वारा मानवता के लिए योग को बढ़ावा देने की दिशा में सभी छात्र -छात्राओं को जागरूक बनाने हेतु प्रातः 7:00 से प्रातः 7:30 बजे तक नुक्कड़ नाटक की एक रोचक प्रस्तुति भी दी गयी जिसे सभी ने खूब सराहा गया इस अवसर पर प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह ने सभी प्राध्यापकों , कर्मचारियों एवं छात्र -छात्राओं को बताया कि योग एक ऐसी सुलभ एवं प्राकृतिक पद्धति है जिससे स्वस्थ मन एवं शरीर के साथ अनेक आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। उन्होने सभी को योग के लाभ बताने के साथ उनसे नियमित तौर पर, परिवार के साथ योगा करने को कहा जिससे कि योगा की सकारात्मक ऊर्जा का सर्वदिश में प्रसार हो सके। उन्होने नुक्कड़ नाटक को ज्ञानवर्धक बताते हुये छात्र-छात्राओं की प्रशंसा की तथा साथ ही बताया कि महाविद्यालय समय समय पर एसे लाभकारी सत्रों का आयोजन करती रहती है। प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह ने कार्यक्रम के सफलतापूर्वक समापन पर सभी प्राध्यापकों कर्मचारियों एवं छात्र -छात्राओं को बधाई दी।

हनुमान इं.कालेज में योगा शिविर का आयोजन, लोगों ने बढ़चढ़ कर लिया हिस्सा

अझुवा कौशाम्बी। नगर पंचायत अझुवा के हनुमान इंटर कालेज में आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव के अंतर्गत 8 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग शिविर का आयोजन नगर पंचायत अझुवा द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में नगर पंचायत अधिशासी अधिकारी सूर्य प्रकाश गुप्ता नगर के चेयरमैन अनिलकुमार सहित नगर के वरिष्ठ नागरिकों सभासदों सहित सैकड़ों लोगों ने योगाभ्यास में प्रतिभाग किया है चेयरमैन अनिलकुमार ने कहा स्वस्थ देह और स्वस्थ सोच ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करती है नियमित योग ही स्वस्थ शरीर और विचारों की ओर ले जाने में मदद करता है।अधिशासी अधिकारी सूर्य प्रकाश गुप्ता ने कहा योग करने से बहुत से असाध्य रोगों का इलाज हो जाता है जिसे लोग घर पर आसानी से कर सकते हैं योगा करने से शुगर ब्लड प्रेशर गठिया कमर दर्द बदन दर्द और पेट में होने वाली कई बीमारियों का बिना किसी अस्पताल में गये आसानी से इलाज हो जाता है यदि मनुष्य योगाभ्यास अपनी दिनचर्या में शामिल कर ले तो जल्दी बीमार नहीं होता है।

नहर की पटरी फटने से सैकड़ो बीघे फसल जलमग्न

कौशांबी। किशुनपुर पंप कैनाल से निकली अमीना माईनर का पानी भले ही अभी तक बडहरी गांव के पास बने टेल तक न पहुंचा हो लेकिन चांदेराई गांव के पास माईनर की पटरी फटने से सैकड़ों बीघा उरद मूंग।की फसले जलमग्न हो गई है जिससे किसानों को भारी नुकसान हुआ है मंझनपुर तहसील क्षेत्र के किशुनपुर नहर से निकली अमीना माईनर की लंबाई करीब 20 किलोमीटर है जिससे क्षेत्र के करीब तीन दर्जन से अधिक गांवों की हजारों बीघा खेती की सिंचाई की जाती है।माईनर का पानी क्षेत्र के किसानों के लिए सिंचाई का एक मात्र साधन है। रजबहे की सफाई न होने से एक ओर टेल तक पानी नहीं पहुंच रहा है जिससे किसानों की फसलें पानी के अभाव में चौपट हो जा रही हैं। वही दूसरी तरफ रजबहे की सफाई न होने से चांदेराई गांव के पास में नहर मे पानी छोडे.जाने के बाद उसके ओवरफ्लो होने से चांदेराई के समीप रजबहे की पटरी फटने से आस पास के सैकड़ों बीघा उरद,मूंग की फसलो में पानी भर गया। इससे फसल नष्ट हो रही है किसानों की फसल नष्ट हो रही है नहर के अधिकारियों को सूचना देने का प्रयास किसान कर रहे हैं लेकिन नहर के अधिकारी किसानों का फोन नहीं उठा रहे हैं जिससे किसानों के सामने मुसीबत खड़ी है।

अलग-अगल थाना क्षेत्र से दुष्कर्म के तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अलग अलग थानों द्वारा तीन दुष्कर्म के वांछित अभियुक्तो को गिरफ्तार करते हुए न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना करारी पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त मनोज कुमार पुत्र लल्लू निवासी रहीमपुर मौलानी थाना करारी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वाछित अभियुक्त विदेशिया उर्फ विदेश पुत्र श्यामलाल निवासी रसूलपुर बदरे थाना कोखराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त पिन्टू उर्फ रविकुमार पुत्र बद्री प्रसाद भारती निवासी खोपा थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता को न्यायालय भेज दिया है।

ब्रिटिश पीरियड के जमाने की 100 साल पहले की भूल फिर दोहरा रहे हैं रेलवे के अधिकारी !

अखंड भारत संदेश

अंडरग्राउंड पुल बना ग्रामीणों के लिए मुसीबत बिना उपयुक्त स्थान के प्रस्तावित किए जा रहे हैं अंडरग्राउंड पुल

इमामगंज कौशाम्बी। कहां पर अंडरग्राउंड पुल बनाना है और कहां पर अंडरग्राउंड पुल नहीं बनाना है इसको बिना देखे लगातार अंडरग्राउंड पुल बनाए जा रहे हैं अंडरग्राउंड पुल ग्रामीणों के लिए सुविधाजनक कम मुसीबत अधिक बन रहे हैं इसी तरह का एक ताजा मामला चायल तहसील क्षेत्र के मूरतगंज के समीप गेट नंबर 10 जीवन गंज और गेट नंबर 11 जलालपुर बोरियों में बनाए गए अंडरग्राउंड पुल का है जहां 2 घंटे के बारिश के बाद पुल में पूरी तरह से पानी भर गया है यह पुल स्विमिंग पूल बन गया है जिससे ग्रामीणों का आवागमन बंद हो गया है अब सवाल उठता है कि जब पहले से पानी निकासी की कार्य योजना पुल बनाने वाली कंपनी नहीं बना सकी थी तो पुल बनाए जाने की क्या जरूरत थी पहले पानी निकासी की व्यवस्था बनाया जाना था लेकिन पानी निकासी की तरफ विभागीय अधिकारियों और ठेकेदारों ने योजना बनाना उचित नहीं समझा ब्रिटिश पीरियड में भी रेलवे लाइन के नीचे अंडरग्राउंड पुल बनाए गए थे जिनके सामने भी यही समस्याएं थी बारिश के दिनों में पानी भर जाते थे ब्रिटिश पीरियड की भूल को रेलवे के अधिकारी दोहरा रहे हैं।

ग्रामीणों ने पुल में पानी भर जाने की सूचना जेएमआर कंपनी के अधिकारियों को दी है लेकिन ग्रामीणों की समस्या पर अधिकारियों के कानों में जूं नहीं रेंगी है जिससे ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है पुल में पानी भर जाने से पूरी तरह से रास्ता बाधित हो गया है अब सवाल उठता है कि जो भूल 100 साल पहले ब्रिटिश सरकार ने की थी वही भूल भारत सरकार के रेलवे अधिकारियों को करने की क्या जरूरत थी पुल बनाने के नाम पर करोड़ों की रकम खर्च की जा रही है आखिर अंग्रेजों की भूल पर इन अधिकारियों को चलने की क्या जरूरत थी यह बड़ी जांच का विषय है और जांच हुई तो पुल बनाने में लगे अधिकारियों का निजी स्वार्थ उजागर हो सकता है अंडरग्राउंड पुल में पानी की निकासी की व्यवस्था बनाए बिना पुल बनाया जाना विभागीय अधिकारियों की एक बड़ी साजिश का हिस्सा है जो बड़ी जांच का विषय है।

संपादकीय

भारतीय विरासत का वैश्विक उत्सव

योग भारत के राष्ट्रीय गौरव का विषय बन गया है। किसी अन्य देश की विरासत को इस प्रकार की प्रतिष्ठा कभी नहीं मिली। दो सौ से अधिक देशों में योग दिवस पर व्यापक समारोहों का आयोजन हुआ। दुनिया में योग लोकप्रिय हो रहा है, क्योंकि यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का आधार है। बिडम्बना यह कि भारत के सेक्युलर नेताओं के लिए यह भी वोट बैंक और सियासत का मुद्दा है। इसलिए वह राष्ट्रीय गौरव के इस उत्साह में शामिल नहीं हैं। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि योग ग्रंथों में वर्णित आसन, प्राणायाम, ध्यान और षटकर्म के अभ्यास से तनाव प्रबंधन में सहायता मिलती हैं। दिनचर्या में योग को शामिल करना बहुत लाभदायक है। योग भारत की अमूल्य धरोहर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयास से आज विश्व में इसकी गूंज है। आठ वर्ष पहले उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में योग दिवस मनाने का प्रस्ताव किया था, इस पर सबसे कम समय में सर्वाधिक देशों के समर्थन का रिकार्ड कायम हो गया। संयुक्त राष्ट्रसंघ महासभा ने जिस ऐतिहासिक समर्थन से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को स्वीकार किया था, वह राष्ट्रीय गौरव का विषय था।अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भारत की महान धरोहर के प्रति विश्व की सहमति है। लोगों को इसमें अपना हित नजर आ रहा है। इसकी भवभूमि में व्यक्ति को विराट जगत सत्ता से जोड़ने का विचार समाहित है। लेकिन शारीरिक लाभ के विचार से किया जाने वाला योग भी कल्याणकारी होता है। इससे शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का स्वास्थ्य लाभ होता है। अनेक बीमारियों से निदान मिलता है। सकारात्मक चिंतन को बढ़ावा मिलता है। योगी आदित्यनाथ ने ठीक कहा था कि व्यक्ति का जीवन भोग के लिए नहीं, बल्कि योग के लिए है। योग रोग से मुक्ति प्रदान करता है। साथ ही चराचर जगत के अनेक सुखद रहस्यों का साक्षात्कार भी कराता है, जिनका सामान्य रूप से अनुभव नहीं किया जा सकता। यह क्षमता केवल योग से प्राप्त होती है। ईश्वर की सभी कृतियों में मनुष्य को ही विवेक शक्ति मिली है। इसे योग के माध्यम से जागृत किया जा सकता है। योग शरीर के साथ मन को भी स्वस्थ रखता है। ऐसा कोई दूसरा शरीर विज्ञान आज तक नहीं बन सका है। नरेन्द्र मोदी ने इसको विश्व से परिचित कराया। इसका विराट रूप योग दिवस पर विश्व में दिखाई देता है। यह भारत की गौरवशाली उपलब्धि है। योग के आधुनिक प्रवर्तक पतंजलि के अनुसार योगश्चित्तवृतिनिरोध। अर्थात चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग कहलाता है। वेदांत के अनुसार आत्मा का परमात्मा से पूर्ण रूप से मिलन होना ही योग कहलाता है। इक्कीस जून को ग्रीष्म संक्रांति होती है। इस दिन सूर्य धरती की दृष्टि से उत्तर से दक्षिण की ओर चलना शुरू करते हैं, यानी सूर्य जो अब तक उत्तरी गोलार्ध के सामने था, अब दक्षिणी गोलार्ध की तरफ बढ़ना शुरू हो जाता है। योग के नजरिए से यह समय संक्रमण काल होता है, यानी रूपांतरण के लिए बेहतर समय होता है। कुछ लोग मजहबी आधार पर योग का विरोध करते हैं, जिसका कोई मतलब नहीं है। योग को मजहबी दृष्टि से देखना गलत है। इस्लामी मुल्कों के साथ पूरे विश्व में योग किया जा रहा है। अमेरिका व यूरोप में करोड़ों लोगों की जीवनशैली में योग शामिल हो गया है। नरेन्द्र मोदी ने विश्व कूटनीति में सांस्कृतिक तत्व को बेजोड़ अंदाज में शामिल किया है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भारत के लिए गर्व का विषय है।

वैधव्य के त्रासदीपूर्ण जीवन का कलंक मिटें

ललित गर्ग

किसी भी समाज में वैवाहिक जीवन साथी विशेषतः पति की मृत्यु हो जाने के बाद पत्नी की हालात काफी चिंताजनक हो जाती हैं। एक शादीशुदा महिला ने जो सपने शादी से पहले अपनी आने वाली जिंदगी के लिए देखे होते हैं, वो सब टूट जाते हैं। यही नहीं, आज भी हमारा समाज विधावाओं को उस नजर से नहीं देखता है, जिसकी वो असल में हकदार हैं। इससे उत्पन्न पारिवारिक, सामाजिक, वित्तीय और आर्थिक समस्याएं तो कई बार इतनी बड़ी हो जाती हैं कि उनका समाधान बहुत मुश्किल नजर आता है। ऐसे में इस समाज की जिम्मेदारी बनती है कि विधवाओं को भी बाकी सामान्य लोगों की तरह सम्मानजनक जीवन जीने का दर्जा मिले। इस दृष्टि से विश्वस्तर पर हर साल 23 जून को अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस मनाया जाता है। दरअसल, सभी उम्र, क्षेत्र और संस्कृति की विधावाओं की स्थिति को विशेष पहचान दिलाने के लिए 23 जून 2011 को पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस मनाने की घोषणा की और तब से हर साल इस दिन को मनाया जाता है। ब्रिटेन की लूंबा फाउंडेशन पूरे विश्व की विधवा महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार पर विगत सात सालों से संयुक्त राष्ट्र संघ में अभियान चला रही है। इस दिवस को मनाने के पीछे का उद्देश्य है कि पूरी दुनिया में विधवा महिलाएं वैधव्य की त्रासदी एवं विडम्बना से मुक्त जीवन जीते हुए आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास एवं उन्नतिपूर्ण जीवन जी सके। भारत में विधवा महिलाओं का जीवन एक त्रासदी से कम नहीं है। हमारे यहां सदियों से विधवा महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित करने की परंपरा रही है। कई बार तो उन्हें पारिवारिक संपत्ति में अधिकारों से वंचित कर मायके भेज दिया जाता है। विधवाओं के अधिकार, उनके धर्म, क्लास, जाति और क्षेत्र पर निर्भर करते हैं। हिंदू उत्तराधिकार कानून के तहत संयुक्त हिंदू परिवारों में विधवाओं को जीवनयापन के लिए न्यूनतम धन पाने का अधिकार है। विधवाओं के जीवन सुधार के लिए समय-समय पर देश में कानून बनाये गये, लेकिन आज भी हमारे देश में विधवाओं के सामान्य जीवन से जुड़े तमाम मसले हैं, जिनका हल किया जाना अनिवार्य है। दुनिया की लाखों विधवाओं को गरीबी, अभाव, भेदभाव, उत्पीड़न, हिंसा, बहिष्कार, बेघर, बीमारी, स्वास्थ्य जैसी समस्याएं से जुझना पड़ता है और कानूनी व सामाजिक भेदभाव सहना पड़ता है। एक अनुमान के मुताबिक कहा जाता है कि, लगभग 115 मिलियन विधवाएं गरीबी में रहने को मजबूर हैं, जबकि 81 मिलियन महिलाएं ऐसी हैं जो शारीरिक शोषण का सामना करती हैं।

ज्यादातर समाज में महिलाओं के मुकाबले सभी प्रकार के धन और संपत्तियों पर गैर अनुपातिक ढंग से मालिकाना हक पुरुषों का होता है। लैंगिक स्तर पर यह विषमता सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि आमदनी और कमाई में भी होती है। खानदानी जमीन-जायदाद में मालिकाना हक जैसे मामलों में महिलाओं की स्थिति हमेशा कमतर होती है। विधवा होने की स्थिति में इसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है, जो असहनीय स्तर तक पहुंच जाता है। विधुर पुरुष की तुलना में विधवा महिला के हालात इतने खराब हो जाते हैं कि कई बार तो जीवनयापन तक मुश्किल हो जाता है। उसे उपेक्षा, उत्पीडन, भेदभाव एवं घुटन का जीवन जीना पड़ता है। सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर नकारात्मक दृष्टिकोण की वजह से विधवाओं को कई कठिनाइयों, उपेक्षाओं और अभावों का सामना करना पड़ता है। समाज द्वारा उन पर और उनके क्रियाकलापों पर कई प्रकार की पाबंदियां लगा दी जाती हैं। देश में कुछ ऐसे इलाके भी हैं, जहां विधवाओं को अपशकुनी या चुड़ैल मान लिया जाता है। उत्तर व मध्य भारत और नेपाल के कुछ ग्रामीण इलाकों में ऐसी घटनाएं सुनने में आई हैं। ऐसे मामलों में स्थानीय पंचायतें भी कुछ नहीं कर पाती है। राजस्थान में विधवा स्त्रियों के प्रति होने वाली उपेक्षा एवं दयनीय व्यवहार एक त्रासदी एवं हिंसा से कम नहीं है। विधवा स्त्री घर के एक कोने में घुट-घुट कर जीने को विवश कर दी जाती है, उसे घर के समस्त मांगलिक कार्यों से दूर रखा जाता है, इतना ही नहीं उसे अपशकुन माना जाता है। परंपरा के नाम पर इन्हें सफेद धोती पहननी पड़ती है। विधवाओं के लिए सज-संवरकर रहना गलत माना जाता है। विधवा को अपने ही घर में नौकरानी की तरह रहना पड़ता है। क्या कोई पुरुष अपनी पत्नी के वियोग में ऐसा जीवन जीता है? यदि नहीं तो स्त्री ने ऐसा कौन-सा अपराध किया, जो उसे ऐसी हृदय-विदारक वेदना भोगनी पड़े। समाज का दायित्व है कि ऐसी वियोगिनी योगिनियों के प्रति सहानुभूति, संवेदनात्मक एवं समानतापूर्ण वातावरण का निर्माण करें और एन्हें सचेतन एवं सम्मानपूर्ण जीवन का अवसर दें। भारत में आज भी कुछ ऐसे इलाके हैं, जहां बाल विवाह और बेमेल विवाह की कुप्रथा बदस्तूर जारी है। मसलन राजस्थान के कुछ इलाकों में बहुत कम उम्र में लड़कियों की शादी कर दी जाती है। कई बार तो कम उम्र की लड़कियों का विवाह उनसे कई गुना ज्यादा उम्र के पुरुषों से कर दिया जाता है। ऐसे में जब ये लड़कियां जवान होती हैं, तब तक उनके पति बूढ़े हो जाते हैं। पति की मौत के बाद इन्हें भरी जवानी में बाकी जिंदगी विधवा बनकर गुजारनी पड़ती है। दुनिया के कई देशों के मुकाबले में भारत में लैंगिक स्तर पर कई समस्याएं हैं। इसका असर सामाजिक जीवन पर भी पड़ता है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में साढ़े पांच करोड़ से अधिक विधवाएं हैं। यह संख्या दक्षिण अफ्रीका और तंजानिया जैसे देशों की आबादी के लगभग बराबर है। विधवाओं की यह संख्या दक्षिण कोरिया या म्यांमार की आबादी से अधिक है। विश्व अब एक परिवार है, हम सब एक वैश्विक समुदाय का हिस्सा हैं। हमें एक-दूसरे की समस्याओं के बारे में पता होना चाहिए ताकि समाधान की दिशा में कदम उठाए जा सकें। दुनिया भर में बड़ी संख्या में महिलाएं युद्ध, आतंकवाद व हिंसा की वजह से अपने पतियों को खो देती हैं। काश! ये लड़ाइयां खत्म हो जाएं। ऐसा हुआ तो यकीनन यह यह दुनिया एक बेहतर जगह बन पाएगी। विधवाओं के साथ हमेशा से भेदभावपूर्ण व्यवहार होता रहा है। देश में उम्रदराज विधवाओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। एक रिपोर्ट के अनुसार, साल 2001 से 2011 के बीच विधवा महिलाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। हालांकि, इसका एक कारण पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की जीवन प्रत्याशा का अधिक होना भी है। उम्रदराज विधवा महिलाओं की गैर समानुपातिक ढंग से संख्या बढ़ने का प्रमुख कारण ज्यादातर विधुर पुरुषों का पुनर्विवाह होना भी है। वैसे तो देश में सर्वत्र विधवा स्त्रियां देखने को मिल जाती है, लेकिन वृंदावन में हजारों विधवाएं हैं जिन्हें उनके बेटे या परिवार वाले श्रीकृष्ण दर्शन के नाम पर छोड़ गए और फिर लौटकर कभी उनका हाल पूछने नहीं आए। विधवाओं की खराब स्थिति के लिए अशिक्षा, तथाकथित आधुनिकता एवं भोगवादी जीवनशैली एक बड़ी वजह है। हमारा समाज पहले से ही महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण रवैया अपनाता है, इसलिए एक विधवा के लिए जीवन और कठिन हो जाता है। विधवाओं के लिए एक छोटी बचत योजना होनी चाहिए, ताकि वे अपने बुढ़ापे के लिए कुछ पैसा जमा कर सकें। हमें विधवाओं से संबंधित व्यवस्थित आंकड़ें एकत्र करने होंगे ताकि उनके लिए व्यापक योजनाएं बनाई जा सकें। विधवाओं के इलाज और स्वास्थ्य की देखरेख की जिम्मेदारी केन्द्र एवं राज्य सरकार की होनी चाहिए। विधवाओं को भी सम्मान से जीने और मुस्कराने का हक है। हमारे यहां विधवाओं की दूसरी शादी का चलन ही नहीं है। पति की मौत के बाद पत्नी को बाकी की जिंदगी अकेले ही बितानी होती है। भारतीय परंपरा में माना जाता है कि शादी सात जन्मों का रिश्ता है। ऐसे में विधवा स्त्री दूसरे विवाह के बारे में सोच भी नहीं सकती। पति की मौत के बाद उसे पूरे जीवन कठिनाइयों से जूझना पड़ता है।

विधुर पुरुषों के मुकाबले विधवाओं के पुनर्विवाह के मामले बहुत कम सामने आते हैं। तमाम सांस्कृतिक बंधनों में दबी ऐसी औरतों को अक्सर समाज और स्थानीय समुदाय नजरअंदाज कर देता है। विधवा दिवस हमें उन आर्थिक कठिनाइयों और बढ़ती संवेदनशीलता पर विचार करने पर विवश करता है जिनका सामना ये शोक संतप्त महिलाएं कर रही हैं। आइए, इस अंतरराष्ट्रीय दिवस पर सभी विधवाओं को सहयोग देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराएं- भले ही उनकी उम्र कोई भी हो, वे किसी भी जाति, धर्म, वर्ग एवं स्थान से संबंधित हों या किसी भी कानूनी प्रणाली के दायरे में आती हों। यह सुनिश्चित करें कि वे किसी से न पिछड़ें, सम्मानजनक जीन जीये।

तू मेरी पीठ खुजा... मैं तुझको श्रेष्ठ बताऊं

रेखा शाह आरबी

इस देश में नेता होना अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है और आपकी कोई अच्छी सी पार्टी है तब तो सोने पर सुहागा है आप पार्टी का विस्तार करना चाहते हैं? कुर्सी का आनंद लेना चाहते हैं? चुनाव में सौ प्रतिशत अपनी जीत चाहते हैं ... ?तो आपको चुनाव जीतने के लिए सारे दांव पेच सीखने होंगे और राजनीति के हिसाब से आपको जातीय गणित का भी संपूर्ण ज्ञान भी सीखना होगा इसके बिना तो चुनाव जीता ही नहीं जा सकता...। अब आप सोचेंगे इसकी एकदम सटीक शिक्षा आपको कम समय में कम कीमत पर ...आपको बिना थके बिना रुके दिन भर आपको कौन रट्टा मरवाता रहे... कौन आपके लिए अप्रत्यक्ष रूप से आप के जीतने की भूमिका तैयार करें ..कौन आपके बंजर और पथरीली राह को खाद पानी दे देकर नर्म मुलायम करके तैयार करें ..। किस क्षेत्र में कौन बहुल है कौन सीमित है बताता रहे... किस का झुकाव किसके तरफ रहता है तथा किस बात से प्रभावित होंगे कैसे आपकी जुमलेबाजी को भी बार-बार कहके उसे सच साबित करें..। अगर सीखना चाहते है तो उसके लिए आपको सबसे एक विशेष क्षेत्र के लोगों को अपना मित्र और हितैषी बनाना होगा और दिन भर बुद्धू बक्सा को चलाएंमान रख कर उससे ज्ञान लेना होगा ... आप को आराम से कुर्सी पर बैठकर दिन भर न्यूज चैनलों को देखने की अथक अखंड तपस्या करनी होगी ...आप लोगों को किस प्रकार अपने पक्ष में अपना पिठठु बना सकते हैं.... अप्रत्यक्ष रूप से यह भी पता चल जाएगा और किस क्षेत्र में आपको कौन सा उम्मीदवार उतारने पर जीतने का पूरा पूरा चांस रहेगा इसका भी सटीक अंदाजा हो जाएगा। आखिर हमारे देश की महान विभूतियां दिनभर मेहनत करके पूरे देश के लोगों को बता रहे हैं ।कौन कहां कितनी संख्या में है किसको वोट मारती है किसके खिलाफ वोट मारती है और यह सीखने की धींगामुस्ती भी आपको तब तक ही करनी है जब तक आप अपने लक्ष्य तक पहुंच नहीं जाते एक बार आप अपने लक्ष्य पर पहुंच गए उसके बाद आपको किसी की पीठ खुजाने की आवश्यकता नहीं है

आपकी पीठ से लेकर संपूर्ण काया को खुजाने वाले आपके आगे पीछे खुद हाथ जोड़कर खड़े होंगे और बिना कहे आप की कमियों को भी खूबियों की चासनी में लपेट कर आप पेश किए जाएंगे... और इस तरह आप एक ओजस्वी तेजस्वी नेता की श्रेणी में जाकर विराजमान हो जाएंगे।

अग्निपथ योजना को लेकर राजनीति ठीक नहीं

राजेश माहेश्वरी

सेना में भर्ती के लिए घोषित अग्निपथ योजना का देश के कई हिस्सों में विरोध हो रहा है। युवाओं ने सड़कों पर उतरकर हिंसक प्रदर्शन किया। सबसे ज्यादा विरोध बिहार में देखने को मिला है। जहां आंदोलनकारियों ने सरकारी संपत्ति को काफी नुकसान पहुंचाया। युवाओं के मन में इस योजना को लेकर कई सवाल है। सरकार और सेना विभिन्न मंचों और माध्यमों से युवकों के सवालों और आंशकाओं का जवाब दे रही है, लेकिन जिस तरह से इस मामले में राजनीति हो रही है वह मामले के समाधान के बजाय समस्या की गंभीरता को बढ़ा रही है। काग्रिस समेत विपक्ष के कई दल इस योजना के विरोध में हैं। इन दलों के नेता अपने भाषणों, बयानों और सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं को भ्रमित तो कर ही रहे हैं। वहीं इनके बयान युवाओं को भड़काने का काम भी कर रहे हैं। ये योजना देश के भविष्य यानी युवाओं से जुड़ी है। ऐसे में युवाओं से जुड़े किसी मसले पर राजनीतिक दलों का इस प्रकार का अगंभीर आचरण बड़ी चिंता की वजह है। सेना प्रमुख से लेकर तमाम जिम्मेदारी अधिकारियों ने इस योजना को लेकर उपजी आशंकओं को शांत करने की भरसक कोशिश की है। और ये कोशिश लगातार जारी है। इसके साथ ही रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के अलावा तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने संयुक्त रूप से ये ऐलान कर दिया कि अग्निपथ योजना को वापिस नहीं लिया जाएगा। दूसरी तरफ सेना के सभी अंगों को इस योजना के अंतर्गत भर्ती की प्रक्रिया तत्काल शुरू करने के निर्देश भी मंत्रालय ने जारी कर दिए हैं। भारतीय वायु सेना ने तो इस योजना के तहत भर्ती की प्रक्रिया को शुरू कर दिया है। इस पूरे मामले में सरकार की आलोचना करते-करते कुछ नेताओं ने सेनाध्यक्षों पर भी जिस तरह की टिप्पणियां कीं वे निश्चित तौर पर उस मयार्दा का उल्लंघन है जिसके अंतर्गत सेना को राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से परे रखा जाता है। इस योजना के बारे में प्रारम्भिक तौर पर लगा कि इसे जल्दबाजी में तैयार किया गया है। लेकिन धीरे-धीरे ये बात स्पष्ट होती जा रही है कि बीते अनेक दशकों से इस पर मंथन चल रहा था। जिसकी शुरूवात स्व. राजीव गांधी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में ही हो चुकी थी। उनकी सरकार में रक्षा मंत्री रहे अरुण सिंह की अध्यक्षता में गठित समिति ने रक्षा सुधारों को गति देने की प्रक्रिया शुरू की। उसके बाद जब वाजपेयी सरकार के समय कारगिल युद्ध हुआ तब कारगिल रक्षा समिति बनाई गयी। मंत्रीमंडलीय स्तर की इन समितियों ने सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ लम्बी मंत्रणा और अध्ययन के बाद सेना के आधुनिकीकरण के साथ ही उसकी औसत आयु में कमी हेतु जो कार्ययोजना बनाई उसी का परिणाम है अग्निपथ। असल में विपक्ष को सरकार के हर निर्णय का विरोध और आलोचना करने की आदत सी हो गयी लगती है। कृषि कानूनों से लेकर तमाम दूसरे फैसलों पर विपक्ष ने सकारात्मक विमर्श की बजाय सड़क पर उतरने का काम किया। विपक्ष ने अपने राजनीतिक लाभ के लिए ऐसा माहौल बनाने की कोशिश की कि सरकार का हर फैसला जन विरोधी है। विपक्ष के रवैये के चलते सीएए एनआरसी, किसान आंदोलन और अब युवाओं के इस आंदोलन का रूख हिंसक हुआ, ये खुला तथ्य है। किसान आंदोलन के दौरान लाल किले की शर्मनाक घटना अभी देशवासी भूले नहीं हैं। विपक्ष हर मसले पर कभी किसानों और कभी युवाओं को आगे कर देश को हिंसा की आग में झोंक देता है। बात अगर अग्निपथ योजना की कि जाए तो इस योजना को लेकर विपक्ष ने अपने विरोध का कोई ठोस कारण पेश नहीं किया। और न ही सरकार के साथ इसे लेकर कोई सार्थक विचार विमर्श ही किया। बस योजना की घोषणा होते ही विरोध के स्वर उभरने लगे और देखते ही देखते करोड़ों की सरकारी संपत्ति को आंदोलनकारियों ने स्वाहा कर डाला। विपक्ष ने शांति पूर्वक बातचीत के रास्ते की बजाय सरकार की छवि धूमिल करने और युवाओं को भ्रमित करने का काम किया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि चार साल बाद सेवानिवृत्त होने वाले नौजवान का अपने भविष्य के प्रति चिंतित होना स्वाभाविक है। ये बात भी सही है कि किसी भी नौकरी का आकर्षण वेतन के अलावा मिलने वाली अन्य सुविधाएं और भत्ते तो होते ही हैं लेकिन सेवा निवृत्ति के बाद मिलने वाली इलाज की सुविधा और पेंशन आदि का भी बड़ा महत्व है। विशेष रूप से सेना की नौकरी से निवृत्त जवान को मिलने वाली आर्थिक सुरक्षा तथा सुविधाओं की वजह से ही बड़ी संख्या में नौजवान सैनिक बनने की चाहत पालते हैं। लेकिन स्व. राजीव गांधी से लेकर डा. मनमोहन सिंह तक न जाने कितने प्रधानमंत्री आये-गये परंतु किसी ने भी सेना में सुधार कार्यक्रम तैयार करने वाली समितियों और उनकी गतिविधियों को रोका नहीं। ये भी जानकारी मिल रही है कि सेना की तरफ से समय-समय पर रक्षा मंत्रालय को तत्संबंधी सुझाव दिए गये जिन पर सरकार द्वारा विचार किया जाता रहा।

पूरे एक दशक तक यूपीए की सरकार का नेतृत्व डा. मनमोहन सिंह ने किया। कारगिल रक्षा समिति उसके पूर्व ही बन चुकी थी। फौज की औसत आयु घटाने संबंधी जो फैसले दुनिया के तमाम देशों ने किये वे ही मूल रूप से उक्त समितियों की विषय सूची में रहे होंगे। अनेक पूर्व सेनाध्यक्षों ने टीवी चचाओं में ये स्पष्ट किया कि वेतन और पेंशन पर कुल बजट का 85 फीसदी खर्च हो जाने के कारण सेना के आधुनिकीकरण का काम पिछड़ रहा था। ये बात भी सामने आई है कि आजकल युद्ध में सैनिकों के साथ-साथ तकनीक की भूमिका काफी बढ़ती जा रही है। जिसमें नई पीढ़ी जल्दी पारंगत होती है। ये भी कि युद्ध की स्थिति में 21 से 25 साल आयु वर्ग के जवान और अधिकारी ही सबसे बढिया शौर्य प्रदर्शन करते हैं। आंकड़ों के मुताबिक भारतीय सेना में औसत आयु 32 वर्ष है जबकि दुनिया के प्रमुख देशों ने इसे घटाकर 26 वर्ष कर लिया है। ऐसे में अग्निपथ योजना को लेकर खड़ा किया गया विरोध गलत अवधारणाओं और दुष्प्रचार पर आधारित लगता है। आंकड़ों के आलोक में बात की जाए तो लगभग 13 हजार जवान प्रतिवर्ष सेवा निवृत्त हो जाते हैं या नौकरी छोड़ देते हैं। जिन सुधारों का जमकर, कट्टर विरोध किया गया था, आज वे सभी हमारी व्यवस्था के बुनियादी ढांचे हैं। क्या आज कम्प्यूटर के बिना हम रोजमर्रा के कामों की भी कल्पना कर सकते हैं? आपका मोबाइल फोन ही ठप हो जाएगा। आपको नौकरी ही नसीब नहीं होगी। आप डिजिटल लेन-देन में असहाय महसूस करेंगे।

इसी तरह अग्निपथ के जरिए सैन्य सुधार धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहे हैं। भारत सरकार लगातार संशोधन कर रही है। सरकार द्वारा योजना वापिस न लिए जाने की घोषणा से एक बात तो साफ हो गई कि वह और सेना दोनों अग्निपथ को लेकर संकल्पित हैं और उन्हें ये विश्वास है कि ये योजना सेना और अग्निवीर दोनों के लिए फायदेमंद साबित होगी।

ये जो है धुंआ, जिंदगी का है जुआ...!

सुनील कुमार महला

आज वायु प्रदूषण दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य खतरों में से एक है। यह अत्यंत ही गंभीर, चिंतनीय व संवेदनशील है कि एयर क्वॉलिटी लाइफ इंडेक्स 2022 के अनुसार, भारत दुनिया के सबसे प्रदूषित देशों में से एक है। आज बढ़ती जनसंख्या, उधोग धंधों, ट्रैफिक, पेड़ों की अनवरत कटाई, वृक्षारोपण का अभाव, ग्रीन हाउस गैसों की अधिकता आदि के कारण वायु प्रदूषण अपने परवान पर है। कोरोना काल के दौरान वायु प्रदूषण में अभूतपूर्व कमी देखने को मिली थी, क्योंकि लोगों के घरों में बंद होने से प्रदूषण से राहत मिली। कोरोना काल में उधोग धंधों में कमी आई,ट्रैफिक में कमी आई,फलस्वरूप प्रदूषण में भी कमी आई। कोरोना काल में आदमी को जब ऑक्सीजन की महत्ता का पता चला तो उसने वायु प्रदूषण पर ध्यान दिया, लेकिन बाद में स्थिति वही ढ़ाक के तीन पात वाली हो गई। हमारे शहरों की हवा क्वालिटी काफी खराब है, शहर ही नहीं बहुत से गांव तक भी आज वायु प्रदूषण की चपेट में है। ईंट भट्ठों, विभिन्न उधोग धंधों की स्थापना से प्रदूषण फैल रहा है। आज प्रदूषण के खिलाफ करोड़ों रुपए खर्च और दावे किए जाते हैं कि प्रदूषण में काफी कमी आई है लेकिन जनसंख्या वृद्धि के साथ ही प्रदूषण का भार बढ़ा है। धरती लगातार प्रदूषण के बोझ तले दबती चली जा रही है और हम धरती के पारिस्थितिकीय तंत्र की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। और ये सब आंकड़ों से भली भांति बयां हो रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टिट्यूट ने हाल ही में जो एयर क्वॉलिटी लाइफ इंडेक्स रिपोर्ट 2022 जारी की है , वह बताती है कि सिर्फ खराब हवा के कारण देशवासियों की आयु पांच साल कम हो जाती है। यह अत्यंत गंभीर स्थिति है। यहाँ यदि हम देश की राजधानी दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र की ही बात करें तो(जैसा कि आंकड़ों से पता चलता है कि) यहां तो वायु प्रदूषण लोगों की जिंदगी के दस साल छीन रहा है। मतलब वायु प्रदूषण के कारण से लोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं और उनकी उम्र वायु प्रदूषण के कारण घटती चली जा रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो वायु प्रदूषण जिंदगी की डोर को लगातार कम कर रहा है। आदमी न चाहते हुए भी न जाने कितना धुंआ, प्रदूषक निरंतर सोख रहा है और गंभीर बीमारियों को आमंत्रण दे रहा है। मानकों के मुताबिक एक्यूआई यानी कि एयर क्वालिटी इंडेक्स 40 से कम होना चाहिए, लेकिन पूरे साल में शायद ही कभी हवा इतनी साफ होती है। आमतौर पर मेट्रो सीटीज में तो एयर क्वॉलिटी इंडेक्स सामान्य से कई गुना ज्यादा ही बना रहता है। हाल ही में जारी रिपोर्ट में प्रदूषण को कुपोषण, स्मोकिंग, शराब और एड्स से भी कई गुना ज्यादा बड़ा खतरा बताया गया है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि आतंकवाद और दंगों में जितने लोग मारे जाते हैं, उससे 89 गुना ज्यादा लोगों की जान प्रदूषण छीन ले रहा है। आज हमारे शहरों में ट्रैफिक से धूल और धुएं के गुबार उठते हैं। जगह-जगह टूटी और खुदी पड़ी सड़कें, मिट्टी के ढेर समस्या और बढ़ा देते हैं। सड़कें गड्ढे में हैं या गड्ढों में सड़कें हैं, पता ही नहीं चलता है। वाहनों से निकला धुआं भी वायु प्रदूषण बढ़ा रहा है। यहां ज्यादातर वाहन डीजल या पेट्रोल से चलते हैं। इनमें पुराने वाहनों की संख्या भी काफी ज्यादा है। शहर में ट्रैफिक जाम की समस्या भी काफी बड़ी है। ऐसे में जाम में फंसने या फिर सिग्नल पर खड़े वाहन ज्यादा धुआं छोड़ते हैं। हालांकि सरकार अब विभिन्न वाहनों से निकलने वाले प्रदूषकों, धुएं को लेकर काफी सतर्क है, कानून को सख्त किया जा रहा है, सड़कों के किनारों पर वृक्षारोपण किया जा रहा है, और भी कई तरह के इनिशिएटिव सरकार द्वारा प्रदूषण को रोकने को लेकर लिए जा रहे हैं लेकिन इस पर वर्तमान में भी कोई प्रभावी उपाय नहीं हो पाए हैं। आज वायु प्रदूषण रोकने के लिए सरकार द्वारा कई प्रयास किये जा रहे हैं जिसमें परिवेशी वायु गुणवत्ता के आकलन के लिये निगरानी नेटवर्क की स्थापना करना, सीएनजी और एलपीजी जैसे स्वच्छ गैसीय ईंधन को बढ़ावा देना, पेट्रोल में इथेनॉल की मात्रा बढ़ाना और राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एयर क्वालिटी इंडेक्स की शुरूआत करना आदि शामिल हैं। इसके अलावा बीएस-6 मानकों को लागू करना, बायोमास जलाने पर प्रतिबन्ध, पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देना और सभी इंजन चालित वाहनों के लिये प्रदूषण नियंत्रण सर्टिफिकेट अनिवार्य करना, इलैक्ट्रिक वाहनों को तवज्जो देना, उन पर सब्सिडी उपलब्ध कराना जैसे अन्य फैसले भी लिए गए हैं। लेकिन सरकार के साथ ही आमजन को भी प्रदूषण के प्रति जागरूक होना होगा। यह अकेले सरकार के वश की बात नहीं है ।प्रदूषण नियंत्रण एक सामूहिक विषय है, किसी व्यक्ति विशेष का नहीं।

राष्ट्रवाद बनाम कट्टरवाद

डॉ. विपिन कुमार

भारत में इन दिनों जो विवाद हो रहा है, वह राष्ट्रवाद बनाम कट्टरवाद का है। विवाद के पक्ष और विपक्ष से ही आप समझ सकते है कि इस हंगामे के पीछे का मकसद क्या है। केन्द्र में सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी इन दिनों नूपुर शर्मा और नवीन कुमार जिंदल जैसे अपने नेताओं के कारण काफी मुसीबतों का सामना कर रही है। दरअसल भाजपा की प्रवक्ता रहीं नूपुर शर्मा ने बीते दिनों पैगंबर मोहम्मद को लेकर एक बयान दे दिया था, जिसके बाद इस मुद्दे ने अंतरराष्ट्रीय रूप ले लिया और इस गैरजिम्मेदार रवैये के कारण देशविरोधी तत्वों को बढ़-चढ़कर बोलने का मौका मिल गया। इस पूरे घटनाक्रम ने भारत के लिए कई कूटनीतिक मुसीबतों को खड़ा कर दिया है और आज पाकिस्तान, सऊदी अरब, कतर जैसे तमाम कट्टरपंथी विचारधारा वाले देश भारत को धार्मिक संप्रभुता की सीख दे रहे हैं। लेकिन भाजपा सिद्धांतों वाली पार्टी है और पार्टी ने दोनों ही नेताओं को तुरंत प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया है। गौरतलब है कि इस्लामिक सहयोग संगठन के तहत 57 देश हैं। हैरानी वाली बात यह है कि इस मामले को लेकर अभी तक सिर्फ 16 देशों ने ही अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की है और कुछ देशों ने तो हास्यास्पद रूप से भारत को माफी मांगने की नसीहत दी है।सवाल यह उठता है कि भारत माफी क्यों मांगे। यह स्पष्ट रूप से मुस्लिम विरोधी माहौल बनाते हुए प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई को वैश्विक पटल पर आर्थिक, कूटनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में रोकने का प्रयास है। इन देशों को भारतीय विदेश मंत्रालय ने मुंहतोड़ जवाब दिया है। यह पहली बार नहीं है जब प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई में भारत की छवि मुस्लिम विरोधी बनाने की कोशिश की गई है। बात चाहे गोधरा कांड की हो या राम मंदिर की। उन्हें और भाजपा को विपक्षी पार्टियों ने हमेशा बेवजह निशाने पर लिया। हालांकि विरोधियों की यह नीति उन्हीं पर भारी पड़ी है। भाजपा हमेशा राष्ट्र प्रथम नीति के तहत राजनीति करती है।

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने नीदरलैंड को ड्रा पर रोका

डबलिन । भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने दो गोल से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करके यहां चल रहे पांच देशों के अंडर-23 टूर्नामेंट में नीदरलैंड को 2-2 से ड्रॉ पर रोका। रात खेले गए इस मैच में भारत के लिए अन्नू (19वें मिनट) और ब्यूटी डुंगडुंग (37वें मिनट) ने गोल किए जबकि नीदरलैंड की तरफ से ब्रॉवर

एम्बर (13वें मिनट) और वैन डेर ब्रोक बेलेन (17वें मिनट) ने एक-एक गोल किया।

भारतीय टीम शुरुआत से ही काफी दबाव में थी क्योंकि नीदरलैंड ने शुरुआती पांच मिनट में लगातार दो पेनल्टी कार्नर हासिल किए। भारत ने इन पर गोल नहीं होने दिए लेकिन एम्बर ने 13वें मिनट में गोल करके नीदरलैंड को बढ़त दिला दी जिसे वान डेर ब्रोक बेलेन ने 17वें मिनट में दोगुना कर दिया। भारत ने जवाबी हमला करके पेनल्टी कार्नर हासिल किया जिसे 19वें मिनट में अन्नू ने गोल में बदला। भारतीय टीम ने एक गोल से पिछड़ने के बावजूद तीसरे क्वार्टर में शानदार खेल दिखाया। उप-कप्तान ब्यूटी डुंगडुंग ने 37वें मिनट में गोल करके स्कोर 2-2 से बराबर कर दिया। इसके बाद दोनों टीम को मौके मिले लेकिन कोई भी उनका फायदा नहीं उठा पाई। भारतीय महिला टीम बुधवार को टूर्नामेंट के अपने तीसरे मैच में यूक्रेन से भिड़ेगी।

हार्दिक पांड्या की कप्तानी से प्रभावित हुए मोहम्मद कैफ, आयरलैंड सीरीज से पहले दिया यह बयान

नई दिल्ली। आईपीएल 2022 में सफल सीजन और नई टीम गुजरात टाइटंस की कप्तानी करते हुए हार्दिक पांड्या ने पहली बार में ही टीम को खिताब जीता दिया। इसके बाद उन्हें आयरलैंड के खिलाफ दो मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया। पूर्व क्रिकेटर ने आयरलैंड के खिलाफ सीरीज से पहले हार्दिक की कप्तानी पर बात की और कहा कि वह उनसे बहुत प्रभावित हैं। मोहम्मद कैफ भी आईपीएल 2022 के फाइनल के दिन नरेंद्र मोदी स्टेडियम में थे और कप्तान पांड्या को देखकर प्रभावित हुए। उन्होंने कहा, मैं अहमदाबाद में फाइनल (आईपीएल 2022) के दौरान मैदान पर था। मैंने उसे वहां लाइव कप्तानी करते देखा। उसका फील्ड प्लेसमेंट उत्कृष्ट थी। वह एक अच्छा मैन मैनेजर भी है क्योंकि जिस तरह से उसके खिलाड़ियों ने दबाव में प्रदर्शन किया, उसने मुझे चारों ओर अच्छे वाइब्स की कहानी सुनाई। कैफ ने कहा, वह अपने खिलाड़ियों का समर्थन कर रहा है। वह मिड-ऑफ पर खड़ा था और अपने खिलाड़ियों से बात कर रहा था, खासकर गेंदबाजों से जब उन्होंने डेथ ओवरों में गेंदबाजी के मामले में दबाव महसूस किया। अगर आप मुझसे व्यक्तिगत रूप से पूछें तो मैं उनकी कप्तानी से बहुत प्रभावित हुआ था। बहुत सी टीमें हैं जो पहले साल से आईपीएल खेलकर वह नहीं कर पाई जो हार्दिक ने किया, पहले ही साल में एक कप्तान के रूप में आईपीएल का खिताब जीतना।

मुझे नहीं लगता कि मुझे आगे जाकर चुना जाएगा : रिद्धिमन साहा

सेंट जॉन्स । विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमन साहा ने टीम इंडिया में वापसी को लेकर बयान दिया है जोकि चौकाने वाला है। साहा का कहना है कि उनके नहीं लगता कि अब वह टीम इंडिया में आएंगे। आईपीएल 2022 में परफार्मेंस के बाद बीसीसीआई ने दिनेश कार्तिक को वापस मौका दिया था। दिनेश ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 30 और 55 रनों की पारियों खेलकर अपना दावा मजबूत कर लिया लेकिन साहा को इसका फायदा नहीं मिला। आगामी सीरीज के लिए जब साहा से उनकी योजनाओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बेझिझक जवाब दिया। साहा ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि मुझे आगे जाकर चुना जाएगा क्योंकि पहले ही कोच और मुख्य चयनकर्ता ने मुझे सूचित कर दिया था। और अगर उन्हें मुझे चुनना होता, तो मेरे आईपीएल प्रदर्शन के बाद, मुझे इंग्लैंड दौरे के लिए टीम में शामिल किया जाता। इसलिए वह निर्णय मुझे स्पष्ट कर दिया गया है कि अभी बहुत अधिक विकल्प नहीं हैं। अभी मैं क्रिकेट खेलने पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूं। जब तक मैं खेल से प्यार करता हूं, मैं खेलूंगा। 2014 में पंजाब किंग्स के लिए 362 रन बनाने के बाद इस साल साहा ने आईपीएल में रन बनाए। साहा दो साल के बीच पसंदीदा नहीं चुनना चाहते थे, लेकिन 2014 और 2022 दोनों को अपने दिल के करीब रखा। उन्होंने कहा- कुल मिलाकर, मैं हां कहूंगा।

भारत में इतने तेज गेंदबाजों को देखना अविश्वसनीय : राहुल द्रविड़

मुंबई । भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और पूर्व तेज गेंदबाज इरफान पठान का मानना है कि युवा तेज गेंदबाजों की संख्या को देखते हुए भारतीय क्रिकेट के लिए यह रोमांचक समय है और उम्मीद है कि उनमें से कुछ खिलाड़ी इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया में होने वाले आगामी आईसीसी टी20 विश्व कप में खेलने के लिए आगे जा सकते हैं। आईपीएल 2022 के समापन के बाद उभरने वाले उल्लेखनीय तेज गेंदबाजों में उमरान मलिक शामिल हैं जिन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के लिए 157 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद फेंकी जबकि अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा और कुलदीप सेन ने भी जबरदस्त प्रदर्शन दिखाया है। द्रविड़ ने भारतीय टीम के साथ अब तक के अपने कोचिंग

कार्यकाल के बारे में बात करते हुए और कम समय में कई कप्तानों और तेज गेंदबाजों के साथ काम करते हुए कहा, यह (कोचिंग) काफी रोमांचक रहा है, यह अच्छा रहा है। यह चुनौतीपूर्ण भी रहा है, हमें पिछले आठ महीनों में छह कप्तान मिले हैं जो वास्तव में योजना नहीं था, लेकिन यह हमारे द्वारा खेले जाने वाले खेलों की संख्या की प्रकृति है, यह कोविड की प्रकृति है, इसलिए बहुत से लोगों के साथ काम करना पड़ा है, यह बहुत मजेदार रहा है। कई अन्य को नेतृत्व करने का मौका मिला है, हमें समूह में और अधिक नेता बनाने का अवसर मिला है।

द्रविड़ ने आईपीएल को आने वाले वर्षों में भारतीय टीम के लिए खेलने के लिए कई युवा गेंदबाजों को पोषित करने का श्रेय दिया। पूर्व क्रिकेटर ने कहा, हमारे पास (आईपीएल के दौरान) तेज गेंदबाजी प्रतिभा को देखना अविश्वसनीय था, खासकर कुछ गेंदबाजों की ऐसी (तेज) गति को देखा। बहुत सारे युवाओं को अपना कौशल दिखाने का मौका मिला और उनमें से बहुत से अच्छे आए। वे वास्तव में भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छे संकेत हैं, आने वाला समय रोमांचक है।

जेसन रॉय-सॉल्ट के अर्धशतकों से इंगलैंड ने आयरलैंड से जीती सीरीज

एम्सटलवीन । सलामी बल्लेबाज जेसन रॉय (73) और फिलिप सॉल्ट (77) के अर्धशतकों ने इंग्लैंड को नीदरलैंड पर दूसरे एकदिवसीय मैच में छह विकेट से फतह दिलायी। इंग्लैंड ने इस जीत के साथ सीरीज पर भी कब्जा कर लिया। नीदरलैंड के एम्सटलवीन के वीआरए क्रिकेट ग्राउंड में हुए मैच को बारिश के कारण घटाकर 41 ओवर कर दिया गया, जिसमें नीदरलैंड ने पहले टॉस जीतकर बल्लेबाजी चुनी। डच टीम की ओर से अर्धशतक लगाने वाले एकलौते बल्लेबाज कप्तान स्कॉट एडवर्ड ने 73 गेंदों पर 78 रन बनाए।

एडवर्ड ने अपनी पारी में 4 चौके और 3 छक्के लगाए। इसके अलावा लोगन वैन बीक (30) और शेन स्नेटर (17) ने अंत में 27 गेंदों पर 44 रन की तेज़ साझेदारी कर टीम को 235 रन तक पहुंचाया। 236 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रॉय और सॉल्ट ने पहले विकेट के लिए 17 ओवर में 139 रन की साझेदारी कर मैच पर इंग्लैंड की पकड़ मजबूत कर दी। कप्तान इयोन मॉर्गन एक बार फिर शून्य पर आउट हो गए और लायम लिविंग्स्टन भी चार रन बनाकर पवेलियन लौट गए, लेकिन डेविड मलान (36) और मोईन अली (42) ने 37वें ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर इंग्लैंड को छह विकेट से जीत दिलाई। इसी के साथ इंग्लैंड ने 3 मैचों की इस श्रंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली है। सीरीज का तीसरा और अंतिम मैच 22 जून को खेला जाएगा।

ईशान किशन की बल्लेबाजी से खुश नहीं आशीष नेहरा, बोले- आंकड़े पूरी कहानी नहीं बताते

मुंबई । टीम इंडिया की दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 5वां टी-20 मैचों की सीरीज 2-2 से ड्रा रही। इस ड्रा सीरीज में भारतीय ओपनर ईशान किशन का प्रदर्शन अच्छा रहा। उन्होंने 41.20 की औसत और 150 से भी अधिक के स्ट्राइक रेट से 206 रन बनाए लेकिन इन सके बावजूद पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज आशीष नेहरा को लगता है कि ईशन ने अभी तक अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन नहीं किया है। उन्होंने कहा- ईशान जैसे बल्लेबाज के लिए टी20 में लगातार रन बनाना आसान नहीं होगा।

आईपीएल 2022 में विजेता रही गुजरात टाइटंस के हेड कोच रहे नेहरा ने कहा कि सीरीज के पहले मैच में ज्यादा सहज न दिखने के बावजूद ईशान 76 रन

बनाने में सफल रहे। नेहरा बोले- सीरीज में ईशान के आंकड़े ठीक थे लेकिन आंकड़े हमेशा पूरी कहानी नहीं बयां करते। वह अच्छे स्ट्राइक रेट के साथ भी खेले हैं, लेकिन उनके जैसे खिलाड़ी के लिए लगातार ऐसा करना आसान नहीं होगा, खासकर टी20 में। पहले मैच में वह इतने सहज नहीं दिखे थे।

नेहरा के साथी पार्थिव पटेल ने भी कहा कि भारतीय युवा बल्लेबाज को अपने खेल में सुधार करने की जरूरत है। उसे निडर होकर खेलने की जरूरत है। ईशान ने आईपीएल 2022 में भी 400 से ज्यादा रन बनाए थे और इस सीरीज में भी अच्छा प्रदर्शन किया था। लेकिन आईपीएल में उनका निडर अंदाज नदारद था। इसकी एक झलक हमें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ देखने को मिली। ऐसे सीजन के बाद वापसी करना हमेशा मुश्किल होता है क्योंकि उन्हें काफी आलोचना झेलनी पड़ी थी। उनमें अभी सुधार की गुंजाइश है।

बेंगलुरू एफसी ने प्रबीर दास को किया अनुबंधित

बेंगलुरू। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) फुटबॉल क्लब बेंगलुरू एफसी ने एटीके मोहन बागान से राइट बैक प्रबीर दास को अनुबंधित करने की घोषणा की। बेंगलुरू एफसी ने प्रबीर के साथ 3 साल का करार किया है जो 2024-25 सत्र के अंत तक चलेगा। पाइलान एरोज युवा अकादमी में फुटबॉल के गुर सीखने वाले प्रबीर को कई क्लब की ओर से खेलने का अनुभव है और वह फेडरेशन कप तथा इंडियन सुपर लीग जीतने वाले क्लब का भी हिस्सा रह चुके हैं।

प्रबीर ने 2012 एएफसी अंडर-19 चैम्पियनशिप क्वालीफायर में तुर्कमेनिस्तान के खिलाफ भारत की अंडर-19 टीम की ओर से पदार्पण किया। उन्होंने 2015 में सीरिया के खिलाफ एएफसी अंडर-23 चैंपियनशिप क्वालीफायर में भारत की अंडर-23 टीम की ओर से पहला मुकबला खेला।

पेरिस ओलिम्पिक में भारत की ओर से वापसी के लिए तैयार तीरंदाज दीपिका कुमारी

पेरिस । टोक्यो ओलिम्पिक में लचर प्रदर्शन के बाद टीम से बाहर स्टार भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी मंगलवार से शुरू हुआ। विश्व कप चरण तीन में भारत की ओर से वापसी के लिए तैयार हैं। पिछले साल इसी टूर्नामेंट में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने के ठीक एक साल बाद 28 साल की दुनिया की तीसरे नंबर की खिलाड़ी दीपिका टोक्यो खेलो में पदक जीतने में नाकाम रहने के बाद यहां पदक जीतकर मजबूत वापसी करने का प्रयास करेंगी।

दो साल बाद इसी स्थल पर होने वाले ओलिम्पिक से दीपिका को अतिरिक्त प्रेरणा मिलेगी। इस भारतीय तीरंदाजी ने 2013 में यहां विश्व कप फाइनल में रजत पदक भी जीता था। पिछले साल अपने तीसरे ओलंपिक से खाली हाथ लौटने के बाद दीपिका और उनके पति तथा देश के शीर्ष पुरुष तीरंदाज अतनु दास की फॉर्म में गिरावट आई और वे भारतीय टीम में जगह बनाने में नाकाम रहे। ये दोनों एशियाई खेलों की टीम में भी जगह नहीं बना सके और बाद में इन खेलों को दोबारा ट्रायल कराए। इससे पहले एशियाई खेलों और विश्व कप चरण तीन दोनों में

स्थगित कर दिया गया।

भारतीय तीरंदाजी संघ (एएआई) ने इसे बाद विश्व कप के तीसरे चरण के लिए शीर्ष आठ निशानेबाजों के बीच समान टीम को हिस्सा लेना था लेकिन एशियाई खेलों के स्थगित होने के बाद दीपिका और पूर्व के ट्रायल में शीर्ष आठ में शामिल रहे प्रवीण जाधव को टीम में जगह बनाने का दोबारा मौका मिला। दास हालांकि पूर्व के ट्रायल में शीर्ष आठ में जगह नहीं बना पाने के कारण नवीनतम ट्रायल का हिस्सा नहीं थे। दीपिका ने कोमालिका बारी को पछाड़कर टीम में जगह बनाई जबकि टोक्यो ओलिम्पिक मिश्रित

टोक्यो ओलिम्पिक में लचर प्रदर्शन के बाद टीम से बाहर स्टार भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी मंगलवार से शुरू हुआ।

टीम स्पर्धा में उनके जोड़ीदार जाधव सचिन गुप्ता की जगह विश्व कप चरण तीन की टीम का हिस्सा बने। दीपिका भारत की ओर से पिछली बार सितंबर 2021 में यंकटून विश्व कप फाइनल में खेली थी जहां वह चौथे स्थान पर रहीं थी। कंपाउंड वर्ग में विश्व चैंपियनशिप की रजत पदक विजेता ज्योति सुरेश वेनाम की वापसी हुई है। ज्योति भी एशियाई खेलों की टीम में जगह बनाने में नाकाम रही थी।

दुनिया की तीसरे नंबर की खिलाड़ी ज्योति पिछली बार भारत की ओर से पिछले साल नवंबर में ढाका में एशियाई चैंपियनशिप में खेली थी जहां उन्होंने व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने रागिनी माकू को पछाड़कर टीम में जगह बनाई। कंपाउंड वर्ग में संगमप्रीत बिस्ला भी अनुभवी रजत चौहान के स्थान पर टीम का हिस्सा बने।

भारतीय टीम

रिकर्व पुरुष : तरूणदीप राय, जयंत तालुकदार, प्रवीण जाधव और नीरज चौहान।

रिकर्व महिला : दीपिका कुमारी, अंकिता भकत, रिद्धि फोर और सिमरनजीत कौर।

कंपाउंड पुरुष : अभिषेक वर्मा, अमन सैनी, मोहन भारद्वाज और संगमप्रीत बिस्ला।

कंपाउंड महिला : ज्योति सुरेखा वेनाम, प्रिया गुर्जर, अवनीत कौर और मुस्कान किरार।

रणजी ट्राफी फाइनल : मुंबई के 42वें खिताब का सपना तोड़ने उतरेगा मध्य प्रदेश

बेंगलुरू : 'आप रजत पदक हासिल नहीं करते, आप हमेशा स्वर्ण पदक गंवाते हो' की मशहूर खेल कहावत पर विश्वास करने वाली मुंबई की मजबूत टीम मध्य प्रदेश के खिलाफ बुधवार से शुरू होने वाले रणजी ट्राफी फाइनल में 42वां खिताब हासिल करने दृढ़ इरादों के साथ मैदान पर उतरेगी। यह असल में मुंबई के योद्धाओं और मध्य प्रदेश के रणबांकुरों के बीच मुकाबला है जिसमें कोई भी टीम किसी तरह की ढिलाई नहीं बरतना चाहेगी। मध्य प्रदेश के मुख्य कोच चंद्रकांत पंडित ने अपनी टीम को किसी चैंपियनशिप से कम पर समझौता नहीं करना सिखाया है, लेकिन सत्र के आखिर में अमोल मजूमदार की कोचिंग में खेल रहे मुंबई के खिलाड़ियों ने अधिक दबदबे वाला प्रदर्शन किया है। कागजों पर मुंबई की टीम खिताब की प्रबल दावेदार नजर आती है। सरफराज खान ने केवल पांच मैचों में 800 से अधिक रन बनाकर अपने खेल को पूरी तरह से अलग स्तर पर पहुंचा दिया है।

यशस्वी जायसवाल ऐसे युवा खिलाड़ी हैं जो लंबी अवधि के प्रारूप को लेकर उतने ही गंभीर हैं जितना कि वह राजस्थान रॉयल्स की तरफ से आईपीएल में खेलने को लेकर हैं। क्वार्टर फाइनल और सेमीफाइनल की चार पारियों में तीन शतक से रनों के लिये उनकी भूख का पता चलता है। पृथ्वी

सॉव मुंबई के ठेठ खड़ूस (जिद्दी) बल्लेबाज नहीं हैं, बल्कि किसी भी आक्रमण पर हावी होने के लिये वीरेंद्र सहवाग की तरह रणनीति अपनाने वाले बल्लेबाज हैं। इनके अलावा मुंबई के पास अरमान जाफर, सुवेद पारकर और हार्दिक तमोर हैं जो मौके का फायदा उठाना जानते हैं। मुंबई के पास हमेशा जबरदस्त बल्लेबाजी क्रम रहा है जो विपक्षी टीम को परेशान कर सकता है लेकिन इस बार उसके दो स्पिनरों बाएं हाथ के स्पिनर शम्स मुलानी (37 विकेट और 292 रन) और ऑफ स्पिनर तनुश कोटियन (18 विकेट और 236 रन) ने गेंदबाजी ही नहीं बल्लेबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन किया है। मध्य प्रदेश हालांकि हाल के दिनों में सबसे बेहतर टीम में से एक रही है और पंडित की देखरेख में अनुशासित प्रदर्शन से ही रणजी ट्राफी जैसे टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंच पाई है। बल्लेबाजी में वेंकटेश अय्यर और गेंदबाजी में तेज गेंदबाज आवेश खान की अनुपस्थिति में कुमार कार्तिकेय, हिमांशु मंत्री और अक्षत रघुवंशी जैसे खिलाड़ियों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई।

मुंबई को इनके अलावा सबसे अधिक रजत पाटीदार से सतर्क रहना होगा जो अपनी बल्लेबाजी से मैच का रुख पलटने में सक्षम हैं। मध्य प्रदेश के पास कार्तिकेय और सारांश जैन के रूप में दो अच्छे स्पिनर हैं जो मुंबई की मजबूत बल्लेबाजी के लिये परेशानी खड़ी कर सकते हैं।

इंग्लैंड के साथ टेस्ट से पहले भारत को लगा झटका, इस बड़े खिलाड़ी को हुआ कोरोना

बेंगलुरू : एक से पांच जुलाई के बीच इंग्लैंड के खिलाफ एजबेस्टन में होने वाले एक मात्र टेस्ट मैच से पहले भारत को बड़ा झटका लगा है। भारत के सीनियर ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का कोविड-19 के लिए किया गया परीक्षण पॉजिटिव आया है जिसके कारण वह टीम के साथ इंग्लैंड नहीं जा पाए।

अश्विन अभी पृथकवास पर हैं और प्रोटोकॉल से जुड़ी सभी जरूरतों को पूरा करने के बाद ही टीम में शामिल होंगे। भारतीय टीम के बाकी खिलाड़ी 16 जून को इंग्लैंड के लिए रवाना हुए थे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने बताया, 'अश्विन ने टीम के साथ ब्रिटेन की यात्रा नहीं की है क्योंकि टीम के रवाना होने से पहले कोविड-19 के लिए किया गया उनका परीक्षण पॉजिटिव आया है। उन्होंने कहा, 'लेकिन हमें उम्मीद

है कि वह एक जुलाई से टेस्ट मैच शुरू होने से पहले ठीक हो जाएंगे। हालांकि उनका लीसेस्टरशर के खिलाफ अभ्यास मैच में खेलना संदिग्ध है। भारतीय टीम गेंदबाजी कोच पारस म्हाम्ब्रे और बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ की निगरानी में लीस्टर में अभ्यास कर रही है।

मुख्य कोच राहुल द्रविड़, ऋषभ पंत और श्रेयस अय्यर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 श्रृंखला समाप्त होने के बाद लंदन पहुंचे। वीवीएस लक्ष्मण की कोचिंग वाली आयरलैंड दौरे पर जाने वाली सीमित ओवरों की टीम 23 या 24 जून को डबलिन के लिए रवाना होगी क्योंकि टीम के सदस्यों को तीन दिन का विश्राम दिया गया है।

भारत को 26 और 28 जून को डबलिन में आयरलैंड के खिलाफ दो टी20 मैच खेलने हैं। टेस्ट टीम इसके बाद बर्मिंघम में इंग्लैंड से भिड़ेगी, जो पिछले साल कोविड-19 संक्रमण के कारण बीच में रोकी गयी पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला का आखिरी मैच है। भारत इस श्रृंखला में अभी 2-1 से आगे है। एजबेस्टन टेस्ट के बाद भारत और इंग्लैंड तीन वनडे और इतने ही टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेंगे।

फीफा-एएफसी का दल भारतीय फुटबॉल के हितधारकों से करेगी चर्चा

बेंगलुरू : फुटबॉल की वैश्विक संचालक संस्था फीफा और एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) का संयुक्त दल संशोधित संविधान के तहत राष्ट्रीय महासंघ के लंबे समय से लंबित चुनाव जल्द से जल्द कराने पर चर्चा करने के लिए बुधवार को भारतीय फुटबॉल के हितधारकों से मुलाकात करेगा। फीफा और एएफसी का प्रतिनिधिमंडल उच्चतम न्यायालय द्वारा नियुक्त प्रशासकों की समिति (सीओए) सहित हितधारकों के साथ बातचीत के दौरान अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के चुनावों को समय सीमा के अंदर कराने और संशोधित संविधान के अनुपालन की स्थिति के बारे में जानकारी लेगी। इस दल की अगुवाई एएफसी के महासचिव दातुक सेरी विंडसर जॉन कर रहे है जिसमें फीफा के सदस्य के तौर पर कैनी जीन मैरी (मुख्य सदस्य संघ अधिकारी) और नोडर अखलकत्सिय (निदेशक रणनीतिक परियोजनाओं और सदस्य संघ) शामिल है।

इस दल में एएफसी के उप महासचिव वाहिद करदानी और दक्षिण एशियाई इकाई के प्रमुख परुषोत्तम कत्तेल के अलावा मध्य एशिया के सीनियर प्रबंधक योगेश देसाई शामिल है।

संयुक्त दल सीओए के सदस्यों, एआईएफएफ के पूर्व अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल से मुलाकात करेगा। यह दल 23 जून को यहां से रवाना होने से पहले खेल मंत्री अनुराग ठाकुर से भी मुलाकात करेगा। एआईएफएफ से जुड़ी एक राज्य इकाई के सदस्य ने पीटीआई-भाषा से कहा, '' फीफा-एएफसी दल विभिन्न हितधारकों से बातचीत करेगा। वे भारत पर प्रतिबंध नहीं लगायेंगे। आने वाले कुछ दिनों में प्रतिबंध लगने की संभावना काफी कम है। फीफा एएफसी दल भारत के सामने कुछ शर्त रखेगा, अगर ये शर्त नहीं मानी गयी तो प्रतिबंध लग सकता है। '

पाक में महंगाई के खिलाफ प्रदर्शन, इमरान बोले-जल्द चुनाव नहीं हुए तो श्रीलंका जैसे हो जाएगा देश का हाल

इस्लामाबादः पाकिस्तान के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान ने आगाह किया है कि अगर नकदी की कमी से जूझ रहे मुल्क में जल्द चुनाव नहीं कराए गए तो यहां आर्थिक तथा राजनीतिक संकट और गहरा हो जाएगा। और देश के हालात श्रीलंका से भी बद्तर हो जाएंगे। इस बीच इमरान के समर्थकों ने प्रमुख शहरों में बढ़ती महंगाई के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन किया। पूर्व प्रधानमंत्री ने शाहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली सरकार के अप्रैल में सत्ता में आने के बाद तीसरी बार पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी के मद्देनजर पिछले हफ्ते विरोध-प्रदर्शन का आह्वान किया था।

वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए इमरान ने कहा कि अगर समयपूर्व चुनाव नहीं कराए गए तो मुल्क के आर्थिक तथा राजनीतिक हालात 'और खराब' हो जाएंगे। पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा, 'मैं लॉन्ग मार्च के लिए आह्वान करूंगाज... अगर स्वतंत्र और पारदर्शी चुनाव नहीं हुए तो अराजकता और फैलेगी।' इमरान ने पेट्रोलियम उत्पादों पर सब्सिडी वापस लेने के लिए सरकार की आलोचना की और कहा कि उनके नेतृत्व वाली पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ नीत पिछली सरकार ने कीमतें बढ़ाने की अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की मांग का विरोध किया था। इमरान ने कहा, 'यह सरकार दो महीने के लिए IMF के कार्यक्रम का हिस्सा है, जबकि हम अढाई साल तक इसमें रहे।

संकटग्रस्त श्रीलंका की मदद करेगा ऑस्ट्रेलिया, खाद्य सहायता के लिए देगा 2.2 करोड़ डॉलर

वाशिंगटनः भारत के बाद अब ऑस्ट्रेलिया ने आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है। आस्ट्रेलिया ने श्रीलंका को आपातकालीन खाद्य सहायता के लिए 2.2 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर देने का ऐलान किया है । ऑस्ट्रेलिया की गृह मंत्री

क्लेयर ओ' नील की श्रीलंका यात्रा के दौरान सोमवार को इस बात की जानकारी दी गई। ओ' नील ने श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे और प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे से भी मुलाकात की।

एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ''हम श्रीलंका में 30 लाख लोगों की दैनिक पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के वास्ते आपातकालीन खाद्य सहायता के लिए विश्व खाद्य कार्यक्रम को तत्काल 2.2 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर देंगे। ऑस्ट्रेलिया 2022-23 में विकास कार्यों के लिए भी श्रीलंका को 2.3 करोड़ डॉलर प्रदान करेगा।' विज्ञप्ति में कहा गया कि यह स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक सुधार में सहयोग करेगा। इसमें महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा पर खासतौर पर जोर दिया जाएगा। विज्ञप्ति में कहा गया, ''ये योगदान हाल में श्रीलंका के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों को दिए गए 50 लाख डॉलर के अतिरिक्त है।'

कोविड महामारीः केन्या में मास्क पहनना हुआ अनिवार्य

नैरोबीः केन्या के स्वास्थ्य मंत्रालय ने देश में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी के प्रसार को रोकने के लिए सुपरमार्केट, खुले बाजार, हवाई जहाज, ट्रेन और सार्वजनिक परिवहनों सहित सार्वजनिक स्थानों पर मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया है। स्वास्थ्य मंत्रालय में कैबिनेट सचिव मुताही कागवे ने कहा कि कार्याल, पूजा घर और राजनीतिक बैठकों में नागरिकों को मास्क पहनना आवश्यक होगा।

कागवे के अनुसार देश में कोविड -19 सकारात्मकता दर मई की शुरुआत में साप्ताहिक औसत 0.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान 10.4 प्रतिशत हो गई है। इसलिए स्थानीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर दबाव रोकने के लिए कठोर उपायों की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि राजधानी नैरोबी में संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''कोरोना वायरस संक्रमण में तेज वृद्धि से सभी को चिंतित होना चाहिए और हमें सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के प्रसार को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए।'

अमजद अयूब मिर्जा का दावा पाकिस्तान से शुरू हुआ है आतंकवाद

इस्लामाबादः पाकिस्तानी लेखक और मानवाधिकार कार्यकर्ता अमजद अयूब मिर्जा ने कहा है कि भारत लगभग 70 वर्षों से इस्लामी आतंकवाद का सामना कर रहा है। आतंकवाद का मुकाबला करने का तरीका दुनिया को यह बताना है कि इस्लामोफोबिया एक सुविधाजनक आवरण और धोखा है। उन्होंने कहा कि भारत के बाहर सताए गए हिंदुओं और सिखों का नैतिक दायित्व है कि वे अपने हकों के लिए लड़ें और न्याय मांगें। मिर्जा ने कहा कि इस सवाल पर विचार करना होगा कि आतंकवाद की शुरुआत कहां से हुई? आतंकवाद की शुरुआत पाकिस्तान से हुई, और ये वो मुल्क है जो विडम्बना से इस्लामोफोबिया की बात भी करता है।

इस्लामोफोबिया का मुकाबला कर रहे हैं हिंदू

मिर्जा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के मीरपुर के रहने वाले हैं। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों से जान को खतरा होने के डर से वह ब्रिटेन में निर्वासन में रह रहे हैं। वह कहते हैं कि इस्लाम पर मौजूदा बहस से पता चलता है कि हिंदू इस्लामिक आक्रमणों और मंदिरों के विनाश का जवाब मांग

रहे हैं, और इस्लामोफोबिया का मुकाबला कर रहे हैं। मिर्जा कहते हैं कि वास्तविकता यह है कि भारत के अंदर और देश के बाहर भी जिन लोगों को सताया जा रहा है, वे वास्तव में हिंदू हैं।

बलूचिस्तान को लूट रहा है पाकिस्तान और चीन

बलूचिस्तान के बारे में पूछ जाने पर उनका तर्क है कि चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) की प्रगति के साथ-साथ पाकिस्तानी सेना द्वारा इसके प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के आलोक में देखना होगा। पहले पाकिस्तानी नौकरशाही बलूचिस्तान को लूट रही थी। अब चीन इसमें शामिल हो गया है और पाकिस्तान जगह ले रहा है। पाकिस्तान के अस्थिर होने पर बलूचिस्तान को आजादी मिल जाएगी। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि पाकिस्तानी सेना प्रांत पर अपनी पकड़ बनाए नहीं रख पाएगी। मिर्जा कहते हैं कि भले ही बलूचिस्तान में बलूच प्रतिरोध को कुचलने के लिए जमीनी बलों के साथ-साथ वायु शक्ति के साथ कई सैन्य अभियान चल रहे हों, लेकिन सेना ने बलूच विद्रोहियों के खिलाफ बहुत कम प्रगति की है।

साम्प्रदायिक हिंसा से पैदा हुआ है पाकिस्तान

पाकिस्तान दो-राष्ट्र सिद्धांत से बना था, जिसमें कहा गया था कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं। मुझे लगता है, किसी समुदाय को उनके धर्म के आधार पर राष्ट्र कहना बहुत ही सांप्रदायिक और नस्लवादी है, जो सांप्रदायिक हिंसा को जन्म देता है। एक देश जो साम्प्रदायिक हिंसा और साम्प्रदायिक घृणा के आधार पर अस्तित्व में आया है, उसने अपने आप को किसी भी गैर-अनुरूपतावादी और गैर-मुसलमानों से शुद्ध करने का कार्य अपने ऊपर ले लिया है। इसलिए प्रत्येक गैर-मुस्लिम-एक हिंदू, सिख या एक ईसाई मूल रूप से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत की अवहेलना कर रहा है। इसलिए, यदि हिंदू या सिख या ईसाई मुसलमानों के साथ सह-अस्तित्व में रहने में सक्षम हैं, तो द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का पूरा विचार टूट जाता है। सरल बात यह है कि भारत के विभाजन से पहले मुसलमान हिंदुओं, ईसाइयों और सिखों के साथ सद्भाव में क्यों नहीं रह सकते थे?

पाकिस्तान में हिंदू महिला के नवजात का सिर काट गर्भ में छोड़ा, वीडियो भी किया वायरल !

पेशावरः पाकिस्तान में इंसानियत को शर्मिंदा करने वाला एक हैरानीजनक व दिल दहलाने वाला मामला सामने आया है। यहां मेडिकल स्टाफ ने ऐसी शर्मनाक व लापरवाही वाली हरकत की कि लोग सोशल मीडिया पर जमकर इसका विरोध कर रहे हैं। मामला पाक के सिंध क्षेत्र का है। यहा मेडिकल स्टाफ ने एक नवजात का सिर काट कर उसे मां के गर्भ में ही छोड़ दिया। स्टाफ की इस लापरवाही से 32 वर्षीय हिंदू महिला की जान पर बन आई। इस घटना से सिंध सरकार भी घेरे में आ गई है। अपनी साख बचाने के लिए सरकार ने दोषियों का पता लगाने के लिए एक मेडिकल जांच बोर्ड बनाया है।

जमशोरो में लियाकत यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल एंड हेल्थ साइंसेज में स्त्री रोग इकाई के प्रमुख प्रो राहील सिकंदर ने कहा, 'थारपारकर जिले के एक दूर-दराज गांव में एक भील हिंदू महिला रहती है। वह पहले अपने क्षेत्र के ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र गई, लेकिन वहां कोई स्त्री रोग विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं थी। वहां मौजूद अनुभवहीन कर्मचारियों ने उसका इलाज शुरू कर दिया, जिसने उसे बड़ा नुकसान पहुंचाया।' उन्होंने कहा कि RHC कर्मचारियों ने रविवार को महिला का ऑपरेशन शुरू कर दिया और नवजात का सिर काट कर गर्भ में ही छोड़ दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार मेडिकल स्टाफ ने महिला की फोटो खींची और वीडियो भी बनाया। जब इस कारण महिला की हालत बिगड़ने लगी तो उसे पास के ही मीठी के नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वहां भी इलाज की कोई व्यवस्था नहीं थी। अंत में परिवार उसे रूख़ ले आया जहां महिला के गर्भ से शिशु का सिर निकाला गया और उसकी जान बचाई गई। प्रोफेसर सिकंदर ने बताया, 'बच्चे का सिर मां के गर्भाशय में फंसा हुआ था। मां के गर्भाशय पर भी घाव थे। महिला की जान बचाने के लिए उसके पेट का ऑपरेशन कर बच्चे का सिर निकाला गया, तब जाकर महिला की जान बची।' इस भयानक गलती से सिंध की स्वास्थ्य सेवा पर सवाल खड़े हो गए हैं, जिसके बाद स्वास्थ्य सेवा के महानिदेशक डॉ जुमान बहोतो को मामले की अलग से जांच के आदेश दिए गए हैं। जांच समिति RHC में महिला डॉक्टर की अनुपस्थिति से जुड़ी चीजों का पता लगाएगी।

गर्लफ्रेंड ने दिल तोड़ा तो बॉयफ्रेंड ने थमा दिया 7 लाख का 'ब्रेकअप' बिल, चिप्स और पानी के भी पैसे मांगे

बीजिंगः प्यार में अक्सर गर्लफ्रेंड-बॉयफ्रेंड एक दूसरे को इंप्रेस करने के लिए बड़े-बड़े तोहफे देते हैं। लेकिन जब दोनों में ब्रेकअप होता है तो कई बार रिश्ता इतना खराब हो जाता है कि दोनों एक-दूसरे को दिए हुए तोहफे को भी गिनाने लगते हैं। इन दिनों एक ऐसा ही हैरान कर देने वाला मामला चीन से सामने आया है। यहां शंघाई में रहने वाले एक लड़के ने ब्रेकअप के बाद अपनी गर्लफ्रेंड से उस पर खर्च किए पैसे की पाई-पाई का हिसाब मांग लिया है।

हैरानी की बात तो यह है कि इस युवक ने अपनी गर्लफ्रेंड पर डेटिंग के दौरान खर्च किए गए चिप्स और पानी तक का भी हिसाब मांग लिया और उसे 7 लाख रुपए का बिल थमा दिया। दरअसल, इस युवक की गर्लफ्रेंड ने

उससे रिश्ता तोड़ दिया । इसके बाद युवक ने 'ब्रेकअप लिस्ट' बनाकर लड़की के ऊपर खर्च किए गए एक-एक रुपया वाप, मांग लिया। इसे लेकर लड़के ने 3 पेज का पूरा बही-खाता बनाया है।

लड़का शंघाई का रहने वाला है। रिपोर्ट के अनुसार, लड़का पिछले एक साल से एक लड़की को डेट कर रहा था। हालांकि एक साल में ही दोनों के बीच चीजें खराब होने लगीं और उन दोनों का रिश्ता टूटने के कगार पर पहुंच गया। इसके बाद लड़की ने लड़के से ब्रेकअप कर लिया। ब्रेकअप के बाद लड़के ने यह मजेदार कदम उठाया और कुल 3 पेज की कम्प्यूटराइज्ड ब्रेकअप लिस्ट तैयार की। इसमें लड़के ने रिलेशनशिप के दौरान खर्च किए गए हर दिन के पैसे का हिसाब लिखा और लड़की के पास भेज दिया।

यूएनजीए अध्यक्ष ने कहा- योग ही सभी के स्वस्थ और समृद्ध भविष्य के लिए एकता की शक्ति

इस्लामाबाद। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र के अध्यक्ष अब्दुल्ला शाहिद ने कहा है कि योग की शक्ति सभी के स्वस्थ और समृद्ध भविष्य के लिए एकता की शक्ति है। उन्होंने कहा कि योगाभ्यास ऐसे समय में एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जब दुनिया चिंता और अवसाद को जन्म देने वाली कोविड-19 महामारी से उबरने का प्रयास कर रही है। शाहिद संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन द्वारा सोमवार को यहां आयोजित एक विशेष कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ''मानवता के लिए योग' विषय के तहत मंगलवार को आठवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का इससे अधिक उपयुक्त समय नहीं हो सकता था क्योंकि कोविड-19 महामारी ने जीवन और आजीविका को प्रभावित किया है, जिससे चिंता और अवसाद बढ़ गया है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय के 'नॉर्थ लॉन' में संयुक्त राष्ट्र के गणमान्य व्यक्तियों, राजनयिकों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा, ''योग का अभ्यास शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य एवं मानवता की भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। इससे असर पड़ता है।' 'नमस्ते' से अपने संबोधन की शुरुआत करते हुए शाहिद ने कहा कि योग तन, मन और आत्मा को जोड़ने वाली

एकता है। उन्होंने सभी से अपने मन-मस्तिष्क को स्वस्थ बनाए रखने, अधिक शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रतिबद्ध होने और ''अपनी अंतर्रात्मा की शांति' के लिए योग का अभ्यास करने का आह्वान किया।कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण पिछले दो साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किए गए थे, लेकिन इस बार संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में इसका आयोजन किया गया। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टी एस तिरुमूर्ति ने कहा कि महामारी के कठिन समय में लाखों लोगों ने स्वस्थ रहने, अवसाद और मानसिक चिंता को दूर करने के लिए योग को अपने साथी के रूप में अपनाया। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र में भूटान की स्थायी प्रतिनिधि डोमा शेरिंग ने कहा कि योग की जड़ें भारत की समृद्ध और प्राचीन परंपराओं में हो सकती हैं, लेकिन आज यह सीमाओं को पार कर गया है और वास्तव में मानवता के लिए भारत का उपहार है।

शेरिंग ने कहा कि भूटान के नागरिकों का मानना है कि योग व्यक्ति, समुदाय और ग्रह के लिए अधिक खुशहाली लाने का काम करता है। तिरुमूर्ति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'पर्यावरण के लिए जीवन शैली' आंदोलन का उल्लेख किया, जिसके तहत दुनिया भर के लोग एक स्थायी जीवन शैली अपनाकर धरती को स्वस्थ बनाने में योगदान कर सकते हैं। तिरुमूर्ति ने कहा, ''योग ऐसे व्यक्तियों का समुदाय बनाने में योगदान दे सकता है जो सादगी को अपनाते हैं और स्थायी जीवन शैली को चुनते हैं।'

सऊदी अरब ने भारत और तीन अन्य देशों की यात्रा पर लगी कोविड पाबंदी हटाई

दुबई। सऊदी अरब ने कोरोना वायरस के चलते अपने नागरिकों पर भारत एवं तीन अन्य देशों की यात्रा करने पर लगी पाबंदी सोमवार को हटा ली। सऊदी प्रेस एजेंसी ने गृह मंत्रालय के एक सूत्र के हवाले से बताया कि यह कदम कोरोना वायरस की स्थिति में सुधार पर

आधारित है। सूत्र के अनुसार स्वास्थ्य अधिकारियों ने वैश्विक महामारी की स्थिति के बारे में जो रिपोर्ट सौंपी थी, पाबंदी हटाते समय उसका भी संज्ञान लिया गया।

एजेंसी की खबर के अनुसार भारत के अलावा इथियोपिया, तुर्की और वियतनाम की यात्रा पर से भी रोक हटा ली गयी है। पिछले हफ्ते सऊदी अरब ने कोविड-19 के रोकथाम के लिए उठाये गये कदमों को हटाए जाने घोषणा की थी। तेल के मामले में धनी इस देश में पहले से ही वार्षिक हज यात्रा के लिए तीर्थयात्री आने लगे हैं।

अमेरिका में हवाई यात्रा के सामान्य होने का दावा

वाशिंगटन। अमेरिका में पिछले व्यस्तम सप्ताहांत के दौरान 21,709 फ्लाइट में देरी हुई या रद्द हुईं। इसके बाद हवाई यात्रा के सामान्य होने का दावा किया गया है। फ्लाइट अवेयर ट्रैकिंग सेवा के डैशबोर्ड के अनुसार रविवार को कम से कम 7,224 फ्लाइट में विलंब हुआ या रद्द हुईं। शनिवार को भी 4,075 उड़ानें रद्द की गई थीं। शुक्रवार को भी यही हाल रहा। 10,410 उड़ानें रद्द हुईं या देरी से चलीं। तीन दिन के दौरान कुल 21,709 उड़ानें रद्द हुईं या उनकी उड़ानों में विलंब हुआ। इनमें 3,167 उड़ानें रद्द हुईं और 18,542 उड़ानों में विलंब हुआ। कुछ सप्ताह पहले विमानन कंपनियों ने ह्यमेमोरियल डेह्व सप्ताहांत के आसपास पांच दिन की अवधि में लगभग 2,800 उड़ानें रद्द की थीं। इसके बाद विमानन कंपनी के मुख्य कार्यकारी प्रबंधकों के साथ अमेरिका के परिवहन मंत्री पीट बटिगिएग ने ऑनलाइन बैठक की थी।

उइगर मुस्लिमों के प्रति चीनी व्यवहार की जांच अंतरराष्ट्रीय अदालत से कराने की अपील

बीजिंग। अधिवक्ताओं ने अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय से एक बार फिर अपील की है कि वह उइगर और अन्य मुस्लिम समूहों के प्रति चीन के व्यवहार की जांच शुरू कराए। अधिवक्ताओं ने कहा कि उन्होंने अभियोजक के समक्ष सबूतों का दस्तवेज पेश किया है। चीन के शिनजियांग प्रांत में उइगर मुस्लिम बहुलता के साथ पाए जाते हैं। कार्यकर्ताओं और अधिवक्ताओं ने चीन पर मानवता के खिलाफ अपराध करने और नरसंहार का आरोप लगाया है। हालांकि, चीन की सत्ताधारी कम्युनिस्ट पार्टी ने शिनजियांग में मानवाधिकार उल्लंघन और नरसंहार से जुड़ी सभी रिपोर्ट का जोरदार तरीके से खंडन किया है। इस मामले में सोमवार को वैश्विक अदालत से जांच कराने की दिशा में ताजा

प्रयास किया गया। अदालत में साक्ष्य प्रस्तुत करने वाले समूह ने कहा कि इसमें एक गवाह की गवाही शामिल है, जो 2018 में एक शिविर से भाग गया था। इस भागे गवाह ने आरोप लगाया था कि चीन में उसे और अन्य को प्रताड़ित करने समेत 'अज्ञात पदार्थों के इंजेक्शन' सहित अन्य चिकित्सा प्रक्रियाओं से गुजरने के लिए बाध्य किया गया था। नवीनतम दस्तावेज इस मत का भी समर्थन करता है कि है कि चीन के इस अदालत का सदस्य नहीं होने के बावजूद इस मामले में आईसीसी के अभियोजकों का अधिकार क्षेत्र है। यह तर्क दिया गया कि कि उइगर समुदाय के लोगों को आईसीसी सदस्य देश के क्षेत्र में एकत्र करके चीन भेजा जा रहा है। ब्रिटिश वकील रॉडनी डिक्सन ने कहा कि अदालत के अभियोजक के कार्यालय में पेश किए गए सबूत इस बात को उजागर करते हैं कि एक आईसीसी सदस्य देश समेत बीजिंग के अन्य पड़ोसी देशों में उइगर मुस्लिमों को एकत्र करके एक योजना के तहत चीन वापस जाने के लिए बाध्य किया जा रहा है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।

रूस-चीन के युद्धपोतों ने जापान को घेरा, हालात तनावपूर्ण

टोक्यो। यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। इस बीच प्रशांत महासागर में हालात तनावपूर्ण हो गए हैं। दरअसल रूस और चीन के युद्धपोतों ने जापान को घेर लिया है। माना जा रहा है कि रूस और चीन के दो दर्जन से अधिक युद्धपोत पिछले कुछ दिनों से जापान और उसके द्वीपों के चारों ओर समुद्र में चक्कर लगा रहे हैं। जापान के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान जारी कर चीन के युद्धपोतों को लेकर चिंता जाहिर की। जापान की सेना अपने देश के चारों तरफ लगातार चक्कर लगा रहे इन रूसी और चीनी युद्धपोतों पर नजर बनाए हुए है। पिछले चार दिनों में ही जापानी सेना ने चीन के चार और रूस के 16 नौसैनिक जहाजों का पता लगाया है। इन युद्धपोतों में चीन का सबसे आधुनिक व ताकतवार टाइप 055 डेस्ट्रायर युद्धपोत भी शामिल है। इसके अलावा टाइप 052 डी डेस्ट्रायर युद्धपोत और एक टाइप 901 आपूर्ति जहाज भी प्रशांत महासागर में दक्षिण से होंशू द्वीप के पश्चिम की ओर जाते हुए देखा गया है। इनके साथ एक इलेक्ट्रानिक खुफिया निगरानी युद्धपोत भी वहां मौजूद है। दो चीनी युद्धपोत जापान के मुख्य द्वीप होक्काइदो को उत्तर में सखालिन द्वीप से अलग करने वाले सोया स्ट्रेट से गुजरते हुए प्रशांत महासागर की ओर बढ़ गए। ठीक उसी समय जासूसी और ईंधन की आपूर्ति करने वाला एक युद्धपोत प्रशांत महासागर से गुजरा। इन चीनी युद्धपोतों के अलावा रूस के 16 युद्धपोत भी जापान के चक्कर लगा रहे हैं। जापान की सेना ने कहा कि पांच रूसी युद्धपोत फिलीपींस सागर से पूर्वी चीन सागर में घुसे हैं।

माली में आतंकवादी हमलों में 130 लोग मारे गए

बामको। पश्चमी अफ्रीकी देश माली में सप्ताहांत में ह्यकायरतापूर्ण और बर्बरह्व आतंकवादी हमलों में 130 से अधिक नागरिक मारे गए। सरकारी बयान के अनुसार कातिबात मैकीना जिहादी सशस्त्र समूह (अल-कायदा आतंकवादी समूह से संबद्ध) के आतंकवादियों ने मोप्ती क्षेत्र के डायलासगौ शहर में शांतिपूर्ण नागरिकों को निशाना बनाया। साथ ही डियानवेली और डेग्यूसेगौ के पास के समुदाय को भी निशाना बनाया।

माली साल 2015 से आतंकवाद से जूझ रहा है।